चन्द दास कृत "रामविनोद" महाकाव्य का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन

पी-एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

निदेशक :—

डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित "ललित"

प्रवक्ता

पं० जवाहर लाल नेहरु स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाँदा (उ० प्र०)

अनुसंधित्सु :—

राम मनोहर शुक्ल, पुजारी

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय

[हिन्दी विभाग]

झाँसी

अगस्त 1983

प्रमाण-पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री राम मनोहर शुक्ल ने महाकवि "चन्द्रकुल रामविनोद" महाकाव्य का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन " शीर्षक शोध-प्रबन्ध को मेरे निर्देशन में पूर्ण किया है। यह शोध-छात्र की मौलिक कृति है तथा इन्होंने विश्व-विद्यालय द्वारा निर्धारित समय तक उपस्थिति प्रदान की है।

दिनांक: ११. ६. ८३ हस्ताक्षर शोध-निर्देशक

च. प्र. दीक्षित

(डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित')

प्रणति

विमल सुशोभित चंद कवि, "अक्षर" दृष्टा भाल ।
"स्वर" "व्यंजन"युत व्याकरण, सुमन समर्पित माल ।। 1

सहजल शास्त्री "वर्ण" सिन्धु, "शब्द" ब्रह्म-संयोग ।
"संज्ञा" योद्धा, कवि, चतुर, योगी सुधा सुयोग ।। 2

चंद दास, जन चंद वह, "सर्वनाम" सत्कार ।
"व्यक्ति", "भाव", "गुण", "जाति", मत, मिथ्या भ्रम स्वीकार ।। 3

"लिंग", "वचन", "बहु", "एक" से, परिभाषित सत रूप ।
"कारक" विभुत न कर सके, योगी चंद अनूप ।। 4

"कर्त्ता" बन शुचि "कर्म" कर, "करण" काव्य का मर्म ।
"सम्प्रदान" हित ग्रन्थ रच, "अपादान" हित धर्म ।। 5

हंसपुरी शुभ "अधिकरण", हम सब से "सम्बन्ध" ।
स्वामी, प्रभु, अवधूत, कवि, "सम्बोधन" अनुबन्ध ।। 6

"गुण", "संख्या", "परिमाण"वर, कैसे हो संकेत ।
प्रचुर "विशेषण" विशद प्रिय, अनुपमयुत निकेत ।। 7

"क्रिया", "काल" से दूर परे, "अव्यय" परमानंद ।
विमल योग "शब्दार्थ" से, ज्योतित सब अमंद ।। 8

प्रचुर "कृदन्त", "तद्धित" परम, अथवा "समास" अक्ष ।
"सन्धि", "मनोहर" व्याकरण, माला "सन्धि" स्वच्छ ।। 9

चंददास कृत "रामविनोद" महाकाव्य का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन

विषय-सूची

विशेष-चिह्न

> पूर्ववर्ती व्युत्पादक तथा परवर्ती व्युत्पन्न

< पूर्ववर्ती व्युत्पन्न तथा परवर्ती व्युत्पादक

√ धातु चिह्न

संकेताक्षर

1-	अ० पु०	अन्य पुरुष
2-	अयो० का०	अयोध्या काण्ड
3-	अर० का०	अरण्य काण्ड
4-	आ०	आचार्य
5-	उ०का०	उत्तर काण्ड
6-	उ० पु०	उत्तम पुरुष
7-	ए० व०	एक वचन
8-	किष्कि० का०	किष्किन्धा काण्ड
9-	क्रि० वि०	क्रिया विशेषण
10-	दो०	दोहा
11-	निश्चि०	निश्चितार्थक
12-	पु०	पुल्लिंग
13-	पृ०	पृष्ठ
14-	ब० व०	बहु वचन
15-	बा० का०	बाल काण्ड
16-	म०पु०	मध्यम पुरुष

17- रा० वि०	रामविनोद
18- लं० का०	लंका काण्ड
19- सुन्द० का०	सुन्दर काण्ड
20- स० क्रि०	सक्रिया वितक
21- सर्व०	सर्वनाम
22- स्त्री०	स्त्री-लिंग

1. विषय - प्रवेश

1.1 चंददास के महाकाव्य "रामविनोद" की भाषा के अध्ययन की आवश्यकता एवं उपयोगिता

वाणी के वरदपुत्र महाकवि चंददास को साहित्य-जगत के महान उच्चासन पर प्रतिष्ठित करके प्रकाशित करने का सर्व प्रथम श्रेय डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित "ललित" को है। आपने "संत कवि-चंददास: काव्यात्मक मूल्यांकन" शोध विषय पर पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात कठोर श्रम-साधना करके कवि के प्रमुख महाकाव्य "रामविनोद" का कुशल सम्पादन एवं प्रकाशन किया। "रामविनोद" महाकाव्य की सम्पादकीय भूमिका में भाषा-शैली[1] के सम्बन्ध में संक्षिप्त विवेचना प्रस्तुत की गई है।

विवेचना के अध्ययन से यही निष्कर्ष प्राप्त होता है कि महाकवि चन्द कृत "रामविनोद" महाकाव्य पर, भाषा विश्लेषण की दृष्टि से, पर्याप्त कार्य सम्पन्न करने हेतु विस्तृत क्षेत्र उपलब्ध है। अभी तक किसी भी अनुसंधित्सु ने इस कृति को आधार बनाकर इसमें प्राप्त भाषा का गणात्मक विश्लेषण वर्णनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत नहीं किया है। अस्तु इस प्रकार के मौलिक अध्ययन की महती आवश्यकता है। प्रस्तुत आवश्यकता को ध्यान में रखकर शोध-कार्य किया गया है। महाकवि चंद के भाषा-सम्बन्धी कार्यों के प्रकाश में किया गया प्रस्तुत कार्य श्रेष्ठ सिद्ध होगा। इस प्रकार का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन जिसके प्रस्तुतीकरण की विधि, मानक एवं निष्कर्ष मौलिकता से परिपूर्ण है, महाकवि चंद की भाषा के सम्बन्ध में प्रकाश-स्तम्भ का कार्य करेगी, ऐसी आशा है। यह शोध-कार्य प्रथम एवं मौलिक है इसलिये इसका स्वयं का पृथक अस्तित्व है। प्रयास की सफलता का निर्णय विद्वान परीक्षक करेंगे। उक्त आवश्यकता की पूर्ति की दिशा में अनुसंधित्सु का विनम्र प्रयास है।

---

1. सं० डॉ० "ललित" - रामविनोद पृ० 46 से 55 तक

इस शोध-कार्य के माध्यम से चंद के महाकाव्य की भाषा का स्वरूप तथा इसके साथ ही महाकवि चंद की भाषा का स्वरूप अधिकाधिक स्पष्ट किया जा सकेगा । गद्यात्मक विशेषताओं के साथ ऐतिहासिक भाषा संरचना करते समय यह कार्य सहायता प्रदान कर बल देगा । हिन्दी- प्रदेश में प्रचलित तत्कालीन जन-भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन में इससे वांछित सहायता उपलब्ध होगी । हिन्दी की प्रामाणिक भाषा संरचना करते समय ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के निर्माण में प्रस्तुत शोध-कार्य सहायक सिद्ध होगा ।

1·2 प्रस्तुत अध्ययन की सीमायें

प्रस्तुत अध्ययन "रामविनोद" महाकाव्य के भाषा-वैज्ञानिक पक्ष पर आधारित है । अस्तु इस शोध-कार्य में मात्र "रामविनोद" महाकाव्य को पूर्ण-रूपेण आधार बनाया गया है ।

प्रामाणिकता -

चंददास साहित्य-शोध-संस्थान शाखा सिविल लाइन्स बाँदा (उ० प्र०) के निदेशक डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित "ललित" के प्राचीन दुर्लभ ऐतिहासिक पाण्डुलिपियों के संग्रहालय में महाकवि चंद हस्त लिखित "रामविनोद" महाकाव्य की मूल प्रति (कैथीलिपि, सं० 1804 वि०) उपलब्ध है । इसके साथ ही [illegible] द्वारा- प्रतिलिपित प्रति (देवनागरी लिपि) भी संस्थान में उपलब्ध है । विद्वान सम्पादक महोदय ने उक्त उल्लिखित दोनों प्रतियों का गम्भीर गवेषणात्मक अध्ययन कर कृति प्रकाशित की है । अस्तु प्रक्षिप्त अंश एवं नकली होने का प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता ।"

1·3 विश्लेषण विधि-

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के अन्तर्गत "रामविनोद" महाकाव्य का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है । इसके लिए सम्पूर्ण "रामविनोद" महाकाव्य से सामग्री संकलित की गई है । कुल 3513 छन्दों (यद्यपि "राम विनोद" महाकाव्य के अंत में 3512 अंतिम छंद संख्या अंकित है, किन्तु अंश

काण्ड में 2108 छंदों में दो छन्द दोहा और कवित्त दो बार अंकित हैं। को प्रत्येक के लिए अलग-अलग 3513 कार्डों पर संकलित कर लिया गया है। कांडों के अनुसार छन्दों की संख्या निम्नलिखित है :

रामविनोद महाकाव्य की छंद सूची

काण्ड	दोहा	कवित्त	सोरठा	छंद तोटक	छंद तोमर	छंद भुजंग प्रयात	छंद गीतिका	छंद चामरी	कवित्त पिंगल	छंद झूलना	छंद नाराच	कवित्त मनहरन	कवित्त छप्पय
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1•बालकाण्ड	72	175	35	8	12	-	19	7	41	-	1	22	13
2•अयोध्याकाण्ड	90	137	93	20	26	16	21	17	-	4	5	-	-
3•अरण्यकाण्ड	62	73	72	26	16	12	10	6	-	3	7	-	-
4•किष्कि० काण्ड	41	43	65	22	25	10	6	9	-	2	7	-	-
5•सुन्दर काण्ड	88	62	99	56	21	13	10	10	-	6	4	-	-
6•लंका काण्ड	274	186	127	140	73	76	34	29	-	13	3	-	-
7•उत्तर काण्ड	219	135	151	130	36	52	44	22	-	2	1	-	-
योग	846	811	642	402	209	179	144	100	41	30	28	22	13

——— क्रमश:

रामविनोद महाकाव्य की छंद सूची

	काण्ड	छंद नाराच दंडक	छंद त्रिभंगी	छप्पै	कवित्त मरहट्ट	कवित्त सवैया	कवित्त घनाक्षरी	छंद दंडक	छंद चंचरी	कवित्त अपरंच	कवित्त मुद्रा	छंद लघु नाराच,	छंद त्रिभंगी दोहा	श्लोक, अनुष्टुपछंद	योग
		14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	
1.	बालकाण्ड	1	1	3	5	5	-	2	2	1	1	-	-	-	426
2.	अयोध्याकाण्ड	7	3	1	-	-	-	-	-	-	-	1	-	-	441
3.	अरण्यकाण्ड	-	2	-	-	-	1	-	-	-	-	-	-	1	291
4.	किष्किन्धाकाण्ड	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	231
5.	सुन्दरकाण्ड	-	2	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	372
6.	लंकाकाण्ड	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	955
7.	उत्तरकाण्ड	1	-	2	-	-	1	-	-	-	-	-	1	-	997
	योग	9	9	7	5	5	2	2	2	1	1	1	1	1	3513

प्रत्येक कांड में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय तथा क्रिया रूपों को छंद के अनुसार भिन्न कर लिया गया है। भिन्न करते समय भाषा में उनकी कार्यकारिता और गठन का ध्यान रखते हुये यथास्थान प्रतिष्ठित किया गया है। पुनः प्रत्येक संकलित सामग्री को अलग-अलग सूचीबद्ध कर लिया गया है। अनुसंधाता इस अध्ययन में उदाहरण स्वरूप समस्त रूप नहीं दे सका है। दिए गये उदाहरणों के रूपों से आलोच्य ग्रन्थ की भाषा की शब्द-रचनात्मक एवं रूप-रचनात्मक प्रकृति तथा प्रवृत्ति का यथेष्ट परिचय प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार यह शोध कार्य सम्पन्न हो सका है।

1.4. छंद की भाषा का स्वरूप-निर्धारण -

महाकवि छंदकृत "रामविनोद" महाकाव्य को आधार बनाकर भाषा का गठनात्मक विश्लेषण करके स्वरूप निर्धारण किया गया है। कारणों के आधार पर प्राप्त स्वरूप निम्नवत् है -

1.4.1. ध्वनि विचार -

उच्चारण-कारणों की दृष्टि से छंद के आलोच्य ग्रन्थ की भाषा में प्राप्त दस स्वर-ध्वनि ग्राम इस प्रकार हैं -

1. मूल

(1) ह्रस्व - अ, इ, उ

(2) दीर्घ - आ, ई, ऊ, ए, ओ

2. संयुक्त स्वर - ऐ (अ+इ, अ + य), औ (अ+उ, अ+व)

3. अनुनासिकता - सभी स्वरों के अनुनासिक रूप भी उपलब्ध हैं:-

अँ, आँ, इँ, ईँ, उँ, ऊँ, एँ, ऐँ, ओँ, औँ।

समस्त स्वर ध्वनियाँ शब्द की तीनों स्थितियों में प्राप्त हैं। अस्तु इन्हें ध्वनि ग्राम स्तर प्राप्त हैं।

"ऐ" और "औ" का उच्चारण संस्कृत के निकट था और "अइ" एवं "अउ" बोलते थे। पर आगे चलकर विकास हुआ और "ऐ"

क्रमशः "औ" का उच्चारण "अउ" क्रमशः "अव" सा हो गया, जैसा ब्रजी तथा खड़ी बोली में सुनाई पड़ता है।[1] चंद की भाषा में "ऐ" और "औ" का उच्चारण एवं लेखन दोनों स्वरूपों में उपलब्ध है, यथा-

ऐ- अ+ए के रूप में उच्चरित -

ऐसी[2], पैज[3], मैनाक[4], आवै[5] आदि।

अ+य के रूप में उच्चरित एवं लिखित -

कैन[6], नैन[7], त्यागिये[8], नय[9]

औ- अ+ओ रूप में उच्चरित एवं लिखित -

और[10], हमौगुन[11], पढ्यौ[12], अउ[13], अउर[14] आदि।

अ+व के रूप में उच्चरित एवं लिखित -

मौन[15], दानौ[16], अव[17], अवर[18], चकव[19]

अतः ब्रजभाषा का प्रभाव स्पष्ट है। [विजय कुम 2.3.1]

ध्वनि ग्राम स्तर पर चंद की भाषा में निम्नलिखित व्यंजन प्राप्त हैं -

1. स्पर्श - कण्ठ्य - क, ख, [ग], घ, ङ।
    तालव्य - च, छ, ज, झ।
    मूर्धन्य - ट, ठ, ड, ढ। दन्त्य - त, थ, द, ध।
    ओष्ठ्य - प, फ, ब, भ।

---

1. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र: हिन्दी साहित्य का अतीत पृ० 90
2. रा०वि०सं०का०2514/ 3. रा०वि०अयो०का०551/ 4. रा०वि०कु०का०1404
5. रा०वि०सं०का०1942/ 6. रा०वि०अयो०का०552/ 7. रा०वि०आ०का०1054
8. रा०वि०अयो०का०515/ 9. रा०वि०उ०का०2789/ 10. रा०वि०बा०का०100
11. रा०वि०अयो०का०840/ 12. रा०वि०सं०का०1960/ 13. रा०वि०बा०का०80
14. रा०वि०बा०का०120/ 15. रा०वि०बा०का०106/ 16. रा०वि०सं०का०2011
17. रा०वि०बा०का०263/ 18. रा०वि०अ०का०1008/ 19. रा०वि०बा०का०204

2. नासिक्य- न्, म्ह्, ण्, न्ह्, ङ् ।

3. पार्श्विक - ल् ।

4. लुण्ठित - र् ।

5. संघर्षी - स्, ह् ।

उपर्युक्त व्यंजन ध्वनिग्रामों के अतिरिक्त ङ्, [नासिक्य] ड़, ढ़ [उत्क्षिप्त], श्, [ष्] संघर्षी और विसर्ग [:] का भी प्रयोग मिलता है, जो ध्वनिग्राम स्तर पर नहीं है । [विभाजक्रम 2.3.2] चंद की भाषा में "ड़" और "ढ़" स्वर प्रयुक्त हुए हैं जो कि "ड" और "ढ" के संस्वन हैं, यथा-

ड़ - बड़त[1], पोड़[2], करोड़[3]

ढ़ - दृढ़[4], मढ़त[5], गढ़[6]

"ड़" के स्थान पर "र" हो जाना ब्रज भाषा की प्रमुख विशेषता है ।[7] यहाँ पर "ड़" एवम् "ढ़" ध्वनि का प्रयोग ब्रजी से प्रभावित है ।

1.4.2 शब्द रचना-विधान-

चंद के महाकाव्य की भाषा प्राचीन भारतीय आर्य भाषा से मध्य भारतीय आर्य भाषा की अवस्था से होती हुई इस अवस्था में विकसित हुई है । विश्व की प्रत्येक भाषा में न्यूनाधिक मात्रा में विभाषी शब्द, विदेशी शब्दावली के प्रभाव के परिणाम स्वरूप प्राप्त होते हैं । भाषायी स्रोतों को अवलोकन करने पर ज्ञात होता कि इसमें तत्सम, अर्द्ध तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी [अरबी, फारसी तुर्की] शब्द हैं । [विभाजक्रम 3.0]

---

1. रा0वि0लंका0 1921/ 2. रा0वि0लंका0 1772/ 3. रा0वि0बाल0 100

4. रा0वि0उ0का0 2738/ 5. रा0वि0अयो0का0 482/ 6. रा0वि0कु0का0 1395

7. ब्रज साहित्य सन्दर्भ: प्रो0 रामस्वरूप आर्य एवं डॉ0 गिरिराज शरण पृ0 309

रचना की दृष्टि से भाषा में रूढ़, यौगिक तथा समासिक शब्द प्राप्त होते हैं, जिनमें सर्वाधिक प्रयुक्त शब्द यौगिक प्रकार के हैं। सामासिक शब्द स्वल्प हैं। [विषय क्रम 3.1] आधुनिक हिन्दी की भी यही विशेषता है। चंद की भाषा में यौगिक शब्दों की रचना अनेक प्रकार के व्युत्पादक प्रत्ययों के योग से हुई है। [विषय क्रम 3.2]

पूर्व प्रत्यय और पर-प्रत्यय दोनों से युक्त यौगिक शब्द न्यून हैं। एक ही प्रातिपदिक दो पर प्रत्ययों का योग हुआ है, ऐसे भी शब्द हैं। तीन पर-प्रत्ययों के योग से निर्मित शब्द अत्यल्प हैं। [विषय क्रम 3.3] शब्द रचना अवधी और ब्रजभाषा दोनों से प्रभावित है।

1.4.3 <u>रूप रचना</u>-

1.4.3.1. <u>संज्ञा रूप रचना</u> -

चंद की भाषा में संज्ञा-रूप-रचना, प्रातिपदिकों में लिंग-वचन-कारक संबंधी विभक्ति-प्रत्ययों के योग से हुई है। रूढ़, यौगिक तथा सामासिक तीन प्रकार के प्रातिपदिक शब्द-रचना की दृष्टि से प्राप्त हैं। [विषय क्रम 3.]

संज्ञा-रूप-रचना में तीन व्याकरणिक कोटियाँ हैं -

1. लिंग 2. वचन तथा 3. कारक।

लिंग शब्द प्रातिपदिक अंत से बोधा है। वचन और कारक को स्पष्ट करने के लिए प्रत्ययों और परसर्गों का सम्बल लिया गया है। लिंग-निर्धारण का कोई निश्चित नियम नहीं बनाया जा सकता किन्तु दो विधाएँ हैं-

1. गठन परक अर्थात् अन्त्य स्वरों के आधार पर तथा
2. प्रयोग के आधार पर लिंगाभास प्राप्त होता है।

वाक्य में विशेषण-शब्दों या क्रिया-शब्दों या सम्बन्ध वाची सार्वनामिक विशेषण-शब्दों द्वारा संज्ञा-शब्दों के लिंग का ज्ञान होता है।

सम्बन्ध-कारक के परसर्गों द्वारा भी लिंग का पता चलता है । विशेष क्रम 3.6]

चंद की भाषा में दो वचन- एक वचन तथा बहुवचन है । वचन और कारक के प्रत्यय अलग-अलग न होने के कारण बहुवचन का बोध सन्दर्भ से होता है । बहुवचनत्व का बोध गन-गण, लोग, वृन्द, जन आदि शब्द जोड़कर भी कराया गया है । यह विश्लिष्ट विधा है । चंद की भाषा में वचन की अभिव्यक्ति की दो विधायें संश्लिष्ट [विभक्ति प्रत्यययुक्त] तथा विश्लिष्ट [पृथक से बहु-वचनत्व शब्द संयुक्त कर] है । वचन का बोध प्रायः वाक्य में सन्दर्भ से ही होता है । एक वचन से बहुवचन बनाने के लिए ब्रज का प्रधान प्रत्यय "न" है जब कि अवधी का "न्ह" ।[1] "न्ह" प्रत्यय का सर्वथा अभाव है । "न" प्रत्यय प्राप्त होता है । अस्तु ब्रजभाषा का प्रभाव है , यथा- किरन[2], कपिन[3], चरनन[4], हाथन[5], मंगन[6], देवन[7], आदि ।

समस्त संज्ञाओं के दो रूप- 1. मूल तथा 2. तिर्यक् प्राप्त है । निर्विभक्तिक रूप मूल और अन्य रूप [सविभक्तिक-परसर्गरहित तथा परसर्ग सहित] तिर्यक् है । सांकेतिक दृष्टि से व्याकरणिक प्रत्यय रहित निर्विभक्तिक रूप ही प्रातिपदिक है । छन्दानुरोध से परसर्ग लोप होने पर परसर्ग योजना करनी पड़ती है । वैसे परसर्गविहीन निर्विभक्तिक एवं सविभक्तिक प्रयोग तिर्यक ही हैं । सभी कारक सम्बन्धी द्योतक परसर्ग प्राप्त है । कर्ता कारक द्योतक "ने" परसर्ग स्पष्ट उपलब्ध है जो ब्रजभाषा के प्रभाव का परिचायक है, यथा-

तब कुंभज ने प्रतिबोध किये।[8]

तब रावन ने कबूल करी ।[9]

---

1. तुलसी मानस संदर्भ सं०डॉ०रामचन्द्र आर्य डा० गिरिराज शरण पृ0288

2. रा0वि0 अयो0का0675/ 3. रा0वि0 लंका0का02622/ 4. रा0वि0अयो0का0587

5. रा0वि0 लंका0का02425/ 6. रा0वि0बाल0का0200/ 7. रा0वि0अर0का01030

8. रा0वि0उत्तर0का03174/ 9. रा0वि0लंका0का02523

बन साज तहाँ रिपु ने पठ्येउ ।[1]

मुनि नाथ अकस ने श्राप दई ।[2]

मोहि अवार दयेउ विधि ने ।[3]

"पर दोनों में सबसे स्पष्ट अन्तर है कि "ने" चिन्ह का प्रयोग पूर्वी में होता ही नहीं, पश्चिमी अवधी कभी में होता है और कभी-कभी नहीं भी होता, ब्रजी में अवश्य होता है । ...... अवधी के दो भेद हैं- पूर्वी और पश्चिमी । पूर्वी अवधी ही मूल अवधी है, जो गोंडा, फैजाबाद आदि पूर्वी प्रदेशों की बोलचाल है । पश्चिमी अवधी बैसवाड़े आदि पश्चिमी प्रदेशों में चलती है । यह ब्रजी से पूर्वी की अपेक्षा अधिक प्रभावित है"।[4]

संबोधन में संज्ञा-एक वचन में प्रयुक्त हुआ है उन रूपों के पूर्व"रे"शब्द का प्रयोग मिलता है । [विभक्तिक्रम 3.8.1]

1.4.3.2 सर्वनाम रूप रचना -

कवि के महाकाव्य की भाषा में सर्वनाम रूप रचना में व्याकरणिक कोटियाँ - दो वचन और कारक ही प्रयुक्त है; । लिंग का प्रभाव पुरुष वाचक सर्वनामों के सम्बन्धकारकीय रूपों में ही प्राप्त होता है । बहुवचन के प्रकाशन के लिए विभक्ति प्रत्यय योजना न होकर स्वतन्त्र प्रातिपदिकों [सर्वनाम शब्दों] का प्रयोग हुआ है । मूल रूप [कर्ता] ही प्रातिपदिक है । कर्ता के अतिरिक्त अन्य कारक सम्बन्धों के स्पष्टीकरण के लिए विकारी रूपों में; प्रत्ययों या परसर्गों या दोनों का योग मिलता है । विभक्ति क्रम 4 [रूप रचना की दृष्टि से संज्ञा शब्दों से सर्वनाम भिन्न है; इनमें सम्बोधन रूपों का प्रयोग नहीं होता ।

1.रा0वि0कां0छ02044/ 2. रा0वि0सुं0का0 1747/ 3.रा0वि0कि0 का01407
4.वाङ्मय विमर्श: ले0 आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र पृ0 396

"ब्रज में सर्वनामों में भी "स" का "ह" होकर लोप हो गया है -
कस्य = कस्स = कास = काह = का । इसमें विभक्ति चिन्ह लगाकर काको, काहि आदि रूप बने ।[1] चंद की भाषा में भी काहू[2], काहू[3], तथा काहि[4] आदि विकृत रूप ब्रजभाषा के प्रभाव के फलस्वरूप पाए जाते हैं । "पश्चिमी अवधी में शौरसेनी के अनुकूल ओकारान्त रूप को, जो, सो चलते हैं ।[5] आलोच्य ग्रन्थ की भाषा में सर्वनामों का यह स्वरूप यथेष्ट सुलभ है ; यथा-

जो करो आयत दास । सो रचो ललित सुजान ।[6]
भक्ति जो करहि आदि सो प्रसाद दीजिये ।[7]
सो भावे विश्वनाथ, जो जन सुमिरे रामगुन ।[8]
को ताहि जाने ।[9]
को करिहैं तन मान ।[10]

अस्तु ब्रज एवं अवधी दोनों के सर्वनाम रूप रचना में रूप उपलब्ध हैं।

1.4.3.3 <u>विशेषण रूप रचना</u> -

चंद के महाकाव्य "रामविनोद" की भाषा में रूढ़, यौगिक तथा सामासिक तीनों प्रकार के विशेषण शब्द प्राप्त हैं । विशेषतः अकारान्त या विकल्प से आकारान्त विशेषण में ही लिंग-वचन, कारक सम्बन्ध द्योतक विभक्ति-प्रत्यय अधिक स्पष्ट है । अन्य विशेषण रूप अपरिवर्तित हैं । संज्ञा रूपों के तुल्य विशेषण रूपों में तीन व्याकरणिक कोटियाँ हैं :- 1. लिंग , 2. वचन तथा 3. कारक । लिंग शब्द स्तर

---

1. वाङ्मय विमर्श: ले० आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र पृ 372
2. रा०वि०आ०का० 173/ 3. रा०वि० लं०का० 3350/ 4. रा०वि०कुं०का० 1584
5. वाङ्मय विमर्श: आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र पृ 396
6. रा०वि०कि०का० 1267/ 7. रा०वि०कुं०का० 1640/ 8. रा०वि०उ०का० 3227
9. रा०वि० कुं०का० 1584/ 10. रा०वि०कि०का० 2460

से प्रभावित है । वचन और कारक की अभिव्यक्ति प्रत्ययों से या सन्दर्भ से होती है । विशेषण रूप रचना की यह विशेषता आधुनिक हिन्दी [खड़ी बोली] के समान है । ब्रजभाषा से प्रभावित यत्र-तत्र ओकारान्त रूप प्राप्त हैं ; यथा-

मन साँचो[1], कंत भलो[2], भाग बड़ो[3] आदि ।

1•4•3•4 अव्यय -

आलोच्य ग्रन्थ की भाषा में सभी प्रकार के अव्ययों का प्रयोग मिलता है । स्थानवाचक क्रिया विशेषण में स्थिति वाचक की अपेक्षा दिशावाचक कम हैं । कालवाचक क्रियाविशेषण में समयवाचक सर्वाधिक एवं पौनः पुन्य वाचक प्रयोग स्वल्पतम हैं । परसर्गीय शब्दावली की संख्या यथेष्ठ है । [विषय क्रम 6•] ठेठ ब्रजभाषा का शब्द "जनि" का प्रयोग "नहीं" के अर्थ में किया गया मिलता है; यथा-

करो सजन जनि नैन ।[4]

1•4•3•5 क्रिया रूप रचना -

महाकवि चन्द की भाषा में क्रिया रूप रचना प्रमुख व्याकरणिक कोटियों [रचनात्मक प्रवृत्तियों] यथा- काल, वचन, लिंग पुरुष आदि से प्रभावित हैं । पुरुषवचन से प्रभावित तिङन्ती रूपों और लिंग -वचन से प्रभावित कृदन्ती रूपों से विभिन्न कालों एवं अर्थों की अभिव्यक्ति हुई है ।

मूल धातुएँ सामान्य और व्युत्पन्न प्रकार की हैं [विषय क्रम 7•1•1] और यौगिक धातुएँ प्रेरणार्थक और नाम प्रकार की हैं । प्रकार्य की दृष्टि से समापिका और असमापिका प्रकार के निर्मित रूप हैं । [विषयक्रम 7•2 तथा 7•3] समापिका प्रकार के अन्तर्गत तिङन्ती और

1•रा0वि0कि0क0ा01284/ 2•रा0 उत्तर0ा02770/3•रा0वि0बा0ा1087
4•रा0वि0क0ा02568/

कृदन्ती दोनों प्रकार के रूप प्रयुक्त हुए हैं जिनमें वर्तमान निश्चयार्थ संभावनार्थ आज्ञार्थ, भूत निश्चयार्थ, भविष्य निश्चयार्थ एवं आज्ञार्थ की अभिव्यक्ति हुई है। असमापिका प्रकार के अन्तर्गत पूर्वकालिक कृदन्त और क्रियार्थक संज्ञा कृदन्त प्राप्त होते हैं। [विषयक्रम 7.3.1 और 7.3.2]

कवि की भाषा में सहायक क्रियाओं का भी प्रयोग हुआ है। [विषय क्रम 7.2.3] जहाँ इनका स्वतन्त्र प्रयोग हुआ है, वहाँ ये स्थिति सूचक मालूम पड़ती हैं। जहाँ पर स्वतन्त्र क्रिया रूपों के साथ सहायक बनकर प्रयुक्त हुई हैं, वहाँ संयुक्त काल का निर्माण करती हैं। इन क्रियाओं की संयुक्तता से वर्तमान, भूत काल आदि का बोध होता है।

संयुक्त-क्रियाओं के प्रयोग प्रचुरता से प्राप्त हैं। [विषयक्रम 7.4] इनमें अनेकानेक मुख्य क्रियायें सहायक रूप में प्रयुक्त हुई हैं। एक से अधिक मुख्य क्रियायें मिलकर नवीनअर्थों एवं भावों की अभिव्यक्ति कराती हैं। संयुक्त क्रियाओं के निर्माण में कृदन्ती और तिङन्ती दोनों रूपों का योगदान है। पूर्वकालिक कृदन्तों तथा क्रियार्थक संज्ञा और नाम शब्दों से भी संयुक्त क्रियायें विनिर्मित हैं।

* ....भविष्यत् में "ब" के स्थान पर "ह" की प्रवृत्ति है, जैसे अवधी "देखिबो" के स्थान पर ब्रजी "देखिहो"। इस प्रकार ब्रजी पश्चिमी अवधी के निकट है।[1] इस प्रकार प्रस्तुत आलोच्य ग्रन्थ की भाषा में "करब", "जाइब", "कहब", "करिब" तथा "जाउब" आदि मानस की अवधी के स्थान पर करिहौं[2], धरिहौं[3], त्यागिहौं[4], तथा तरिहौं[5] आदि क्रिया रूप भविष्य निश्चयार्थ, उत्तम पुरुष, एक वचन में मिलते हैं।

---

1. वाङ्मय विमर्श: आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र पृ0 396
2. रा0वि0 कि0का0 1199/ 3. रा0वि0अयो0का0 504/ 4. रा0वि0अयो0का0 827
5. रा0वि0लं0का0 2149

आधुनिक हिन्दी में कृदन्ती रूपों के प्रयोग बढ़ गए हैं; जब कि चंद की भाषा में कृदन्ती रूपों की वृद्धि के संकेत मिलते हैं। वस्तु इस विवेचन से यह स्पष्ट है कि महाकवि चंद ने भाषा के व्यापक विस्तृत क्षेत्रों को अत्यन्त चारु-कौशल-युक्त व्याकरणिक व्यवस्था में संगठित, सुरक्षित कर प्रस्तुत किया है। ब्रज तथा अवधी का सुन्दर सम्मिश्रण है। प्राचीन भारतीय आर्य भाषा, मध्य भारतीय आर्य भाषा एवं आधुनिक आर्यभाषा के चिन्हों से युक्त चंद की भाषा हिन्दी के पुष्ट स्वरूप को इंगित करती है।

....

2• ध्वनि-विचार

2•1 ध्वनि एवं वर्ण: एक तात्त्विक दृष्टि -

मानव वाग् अवयवों से उत्पन्न महत्वपूर्ण ध्वनि जो किसी भाषा में अपनी सार्थकता सिद्ध करती है, भाषा विज्ञान में "ध्वनि" नाम से अभिहित की जाती है । सार्थक ध्वनि का लिखित प्रतीक "वर्ण" है । प्रत्येक भाषा उच्चारण की विशिष्ट ध्वनियों से अभिव्यक्त होती है । सभी प्रकार की ध्वनियों के लिए उस भाषा की वर्णमाला में वर्ण [लिपि-चिन्ह] का उपलब्ध होना असंभव है । अधिकांशतः महत्वपूर्ण ध्वनियों को अंकित करने के लिए लिपि-चिन्ह निर्धारित होते हैं । परिस्थिति जन्य उच्चरित ध्वनि के अन्तर को स्पष्ट करने के लिये वर्णमाला में वर्णों का होना दुष्कर है ।

विशुद्ध उच्चारण सौकर्य की दृष्टि से देवनागरी लिपि भी सक्षम सिद्ध नहीं हो सकती है । प्रस्तुत दृष्टि से आलोच्य महाकाव्य की भाषा का, विशुद्ध उच्चारण के परिप्रेक्ष्य में देवनागरी लिपि के माध्यम से समुचित अंकन हुआ होगा, ऐसा कहना संभव नहीं, जैसे -

छन्दों में अनेक स्थानों पर आलोच्य महाकाव्य की भाषा में "ए" और "ओ" को दीर्घ मानकर उन्हें दो मात्रायें दी गई हैं, वहाँ कुछ ऐसे भी स्थान हैं, जहाँ उनका ह्रस्व रूप में उच्चारण होने के कारण उन्हें एक मात्रा प्राप्त हुई है -

दीर्घ "ए" तथा "ओ"- ये[1], एक[2], बोलेउ[3], सहोदर[4], मोसों[5]

ह्रस्व "ए" तथा "ओ"- येहि[6], लिखेउ[7], पठयेउ[8], नाए[9]

1• रा०वि०उ०का०3170/ 2• रा०वि०बा०का०28/ 3• रा०वि०लं०का० 2383
4• रा०वि०उ०का०2837/ 5• रा०वि०उ०का०3197/ 6• रा०वि०उ०का०3434
7• रा०वि०बाल का०121/ 8• रा०वि० बा०का०139/ रा०वि०बा०का०65

होय[1], मोहि[2], मोहे[3]

अतः वर्णमाला में "ए" एवं "ओ" के ह्रस्व रूपों के वर्ण उपलब्ध न होने के कारण दीर्घ रूप को अंकित करने वाले वर्णों "ए" तथा "ओ" को प्रयुक्त किया गया है। "ए" के स्थान पर "ये" का बाहुल्य है।

कभी-कभी परम्परा से प्रभावित होकर अथवा उच्चारण सुविधाओं स्वच्छन्दता के कारण त्रुटिपूर्ण वर्णों का प्रयोग चल पड़ता है, जैसे - "ख" के लिए "ष" [ग्राम्य संज्ञाओं सहित] वर्ण का प्रयोग। यथा- भाषौं[4], [अभिलाषौं], भाषो[5], सुषद[6], सोषेउ[7], पषार[8]

2.2 <u>ध्वनि समूह और उसका विभाजन</u> -

उच्चारण- स्थानों की दृष्टि से आलोच्य "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में प्राप्त दस स्वरों को इस प्रकार व्यवस्थित किया जा सकता है -

1. मूल -
[अ] ह्रस्व - अ, इ, उ
[ब] दीर्घ- आ, ई, ऊ, ए, ओ
2. संयुक्त स्वर- ऐ [अ + इ, अ + य], औ [अ + उ, अ+व]
3. अनुनासिक स्वर- समस्त स्वरों के अनुनासिक रूप भी प्राप्त होते हैं, यथा-

[अ] मूल- अँ, आँ, इँ, ईं, उँ, ऊँ, एँ, एवम् ओं।
[ब] संयुक्त - ऐं तथा औं।

---

1. रा0वि0कि0का0 1880/ 2. रा0वि0अयो0का0 668/ 3. रा0वि0बा0का0 199
4. रा0वि0सु0का0 1756/ 5. रा0वि0उ0 का0 3403/ 6. रा0वि0अयो0का0 509
7. रा0वि0लं0का0 1797/ 8. रा0वि0बा0का0 290

"ऐ" तथा "औ" के सम्बन्ध में विवादास्पद स्थिति परम्परा से चली आई है। "ऐ" [अ + इ] अथवा [अ+ए] तथा "औ" [अ + उ] अथवा [अ + ऊ] दो स्वरों के संयुक्त रूप हैं, किन्तु उच्चारण एक ही मात्राकाल में होने के कारण आधुनिक हिन्दी में इन्हें मूल स्वर के रूप में स्वीकार कर लिया गया है।

दो स्वरों का मिश्रित रूप जिसमें प्रत्येक अपने अस्तित्व को विलय कर एकाकार स्वर में शीघ्रतापूर्वक उच्चरित होता है, संयुक्त स्वर कहलाता है। शीघ्रतापूर्वक उच्चरित आरम्भिक स्वर अत्यन्त संक्षिप्त हो जाता है एवं अविलम्ब जिह्वा दूसरे स्वर का उच्चारण करने लगती है। दोनों स्वर अपूर्ण होते हुए भी अपने योग से एक नवीन स्वर का सृजन करते हैं जो संयुक्त रूप से उच्चरित किया जाता है। प्रस्तुत "रामविनोद" महाकाव्य में "ऐ" तथा "औ" वर्णों का प्रयोग हुआ है, यथा-

ऐसो[1], कैसो[2], कैसे[3], और[4]

यत्र - तत्र "ऐ" के लिए "अय" तथा "औ" के लिए "अव" का प्रयोग महाकाव्य में उपलब्ध होता है -

गुरु आयस लय रघुनाथ प्रभु तब सीस जटा पुनि मंजन कीन्हो[5]।
पद रतन जराय जड़ै दुरेवा सिव ध्यान की मरज तरंग भरे।[6]
तिमिर रच सह प्रकास विकासे चकवी मुख मंद कुतार हारी।[7]
मोतिन को रच चक मोरिह आपे गोमहिं काज सँवारो[8]
सो सुनि कनक बिहंग अति लोभी काम विवेक।[9]

1•रा०वि०लं०का०251/ 2• रा०वि०उ० का०307/ 3•रा०वि०अर०का०1142
4•रा०वि०बा०का०100/ 5• रा०वि०उ० का०2789/ 6•रा०वि०सु०का०251
7•रा०वि०बा०का०328/ 8• रा०वि०बा०का० 312/9•रा०वि०बा०का० 204

ह्रस्व तथा दीर्घ स्वर अपने ध्वनि-संकेतों [वर्णों] के माध्यम से अंकित हुए हैं -

अनुराग[1], अवसर[2], आदत[3], वर्षा[4], ईता[5], उदार[6], ऊमर[7], ओट[8], औगुन[9] आदि।

आलोच्य "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में ध्वनि संकेतों के अतिरिक्त इन ह्रस्व तथा दीर्घ स्वरों के मात्रिक-चिन्ह भी व्यंजनों के साथ प्रयुक्त किए गए हैं। व्यंजनों के साथ स्वरों का अस्तित्व बताने के लिए इन्हीं मात्रिक चिन्हों का प्रयोग किया गया है जो क्रमशः इस प्रकार है ; यथा -

मदन[10] में म् + अ, द् + अ एवं न् + अ की अभिव्यक्ति मानते हैं, इसके लिए भिन्न मात्रिक चिन्ह नहीं है। व्यंजन में ही "अ" की सत्ता सम्मिलित है। अन्य स्वरों के लिपि चिन्ह क्रमशः निम्नांकित स्पष्ट हैं : -

आ के लिए लिपि चिन्ह [T] नाव[11], धाम[12], दान[13], सभा[14], नाना[15]

इ के लिए लिपि चिन्ह [ि] मिलन[16], किया[17]

ई के लिए लिपि चिन्ह [ी] नारी[18], बीस[19]

उ के लिए लिपि चिन्ह [ु] मधु[20], पुनि[21], गुरु[22]

---

1. रा०वि०लं०का०2172/ 2. रा०वि०लं०का०2147/ 3. रा०वि०सु०का०169।
4. रा०वि०बा०का०421/ 5. रा०वि०लं०का०1925/ 6. रा०वि०अयो०का०828
7. रा०वि०लं०का०2695/ 8. रा०वि०सु०का०1505/ 9. रा०वि०बा०का०407
10. रा०वि०अयो०का०470/ 11. रा०वि०अयो०का०455/ 12. रा०वि०लं०का०2063
13. रा०वि०कि०का०1175/ 14. रा०वि०अर०का०946/ 15. रा०वि०उ०का०2937
16. रा०वि०बा०का०206/ 17. रा०वि०उ०का०3012/ 18. रा०वि०अर०का०1098
19. रा०वि०सु०का०1396/ 20. रा०वि०सु०का०1410/ 21. रा०वि०उ०का०3019
22. रा०वि०उ०का०3011।

"ऋ" ध्वनि -

देवनागरी लिपि [वर्णमाला] में "ऋ" ध्वनि को मूल स्वरों के अन्तर्गत स्थान दिया गया है। अवधी के प्रामाणिक महाकाव्य श्री राम-चरित मानस" में "ऋ" का प्रयोग "रि" के रूप में बहुलता से उपलब्ध होता है। ऐसा लगता है कि मूल स्वर "ऋ" का उच्चारण "रि" के अनुरूप किया जाता था। प्रस्तुत "राम विनोद" महाकाव्य "ऋ" का प्रयोग मात्र 2 स्थानों पर एवं "रि" का प्रयोग अधिकता से किया गया है -

ऋषय को धाम तथा ऋषि ग्राम लखे मुनि के भल सुख सुधारे।[1]
पुनि पूछ तुम्हार कथा बरनी करनी यहु सिद्ध विचार करे।[2]

रिषि - सुरत नैन विलोक सबै रिषि हेर हिये अति आदर कीन्हो[3]।
सबी सुमत विवेक सुभ, जो बरनी रिषि राज[4]।
रिषि पावन युग कोर, हेरो मोहिं निवास उर[5]।
आन सिंधु अस्थान रिषि सनमान आदर सो किये।[6]
रिषि नारी सेवा करें, धारे निरंतर भाव।[7]

रितु- बरखा रितु पूरन बीत गई।[8]
बरखा रितु वास निवासन मे उर सोंहन सोंह विचारा भयेउ।[9]

रिचा- मुनि गाय सो वेद रिचा सुना सो पुनि भूषन अंग अंगारे।[10]
राजत सुंदर धाम महा बहु पंडित वेद रिचा उचारे।[11]

---

1. रा०वि०बालका०122/ 2. रा०वि० उ०का०3052/ 3. रा०वि०बालका०123
4. रा०वि०अयो०का०449/ 5. रा०वि०उ०का०2931/ 6. रा०वि०उ०का०3012
7. रा०वि०उ०का०3013/ 8. रा०वि०कि०का०1292/ 9. रा०वि०कि०का०1310
10. रा०वि०बालका०279/ 11. रा०वि०बालका०312

व्यंजन ध्वनियाँ

आलोच्य "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में निम्नांकित व्यंजन प्रयुक्त किये गये हैं -

[1.] स्पर्श कण्ठ्य - क्, ख् [ष], ग्, घ्।

तालव्य - च्, छ्, ज्, झ्।

मूर्धन्य - ट्, ठ्, ड्, ढ्।

दन्त्य - त्, थ्, द्, ध्।

द्वयोष्ठ्य - प्, फ्, ब्, भ्।

[2.] नासिक्य - न्, न्ह्, म्, म्ह्, ण्।

[3.] उत्क्षिप्त - ड़्, ढ़्।

[4.] पार्श्विक - ल्।

[5.] लुण्ठित - र्।

[6] संघर्षी - श् [ष], स्, ह्।

[7.] अनुस्वार - ं

[8.] विसर्ग - :

नासिक्य व्यंजन -

आलोच्य "रामविनोद" महाकाव्य के अन्तर्गत ङ्, ञ, तथा ण् ध्वनियाँ अपने मूल रूप में नहीं प्राप्त होती हैं उनके स्थान पर सर्वत्र अनुस्वार [ं] का प्रयोग उपलब्ध होता है। प्रायः यह व्यंजन पद मध्य में प्रयुक्त किये गये हैं। "ङ्" क वर्ग से पूर्व, "ञ" च वर्ग से पूर्व तथा "ण्" ट वर्ग के पूर्व अनुस्वार [ं] के रूप में दृष्टिगोचर होता है, उदाहरणार्थ -

ङ्- शंकर[1], सिंगा[2], गंगा[3], पुंगी[4], कुंकुम[5], संकट[6], संकर[7]

---

1. रा०वि०बा०का०210/2. रा०वि०बा०का०226/3. रा०वि०अयो०का०759

4. रा०वि०अर०का०936/5. रा०वि०अयो०का०465/6. रा०वि०अयो०का०765

7. रा०वि०अयो०का०797

रैन के वियोग कंा संग पाय डोलई ।[1]

तन वीर सुभान कंा मधि परत सो तन संग।[2]

लै जानकी निज संग अबही बुद्धि सिद्धि विचार के।[3]

बरनौ बान बसि तहँ धावे मारुत संग।[4]

धन्य सतसंग जहाँ ध्यान पाइहु । प्रगट पद दया रघ राम गाइहु।[5]

यद्यपि "ग्" की अपेक्षाकृत "ड्" का प्रयोग अधिकांश रूप में प्राप्त होता है ।

"म्ह" तथा "न्ह" क्रमशः "म्" और "न" ध्वनियों के महाप्राण स्वरूप हैं ।

इनका प्रयोग पद मध्य में उपलब्ध होता है । "म्ह" तथा "न्ह" को वर्णमाला में नहीं अंकित कियाजाता, ये दो वर्णों के सम्मिश्रण से महा प्राण के रूप में अंकित किए गए हैं । आलोच्य "राम विनोद" महाकाव्य में "म्ह" और "न्ह" पर्याप्त मात्रा प्रयुक्त किये गए हैं -

म्ह= म्हा = म्हे = म्है = तुम्हरे[6], तुम्हरो[7], तुम्हारे[8], तुम्हे[9]
तुम्हे[10], तुम्हारा[11], तुम्हरी[12]

न्ह = न्ही = [illegible] = न्हे = न्है = [illegible] न्हे = न्है = न्हो न्हों = न्हो
न्हो

न्ह - तिन्ह[13], जिन्ह[14], चीन्ह[15]

---

1. रा० वि० अ० का० 939/2. रा० वि० कि० का० 1256/3. रा० वि० सुं० का० 1727
4. रा० वि० लं० का० 2526/5. रा० वि० उ० का० 3304/6. रा० वि० बा० का० 220
7. रा० वि० लं० का० 1921/8. रा० वि० बा० का० 410/9. रा० वि० उ० का० 3214
10. रा० वि० अ० का० 876/11. रा० वि० बा० का० 133/ 12. रा० वि० बा० का० 407
13. रा० वि० लं० का० 2714/14. रा० वि० अयो० का० 792/ 15. रा० वि० उ० का० 3436

बरनै अस्तुत नीत, बारंबार अशीषा दै[1]।

ग- "ष्" के लिए लिपि में "ख" का प्रयोग -

तब जोग भीखा ओखा प्रभु रच दिव्य भूखन भाय तो[2]।

कह प्रान प्रिया सुखागार अहै। सुखधाम शरीर बिशाखा सबै[3]।

बरषी सर सक्ति अनेक बली। तब भाग को सुर शाखे शाखी।[4]

घ-"ष्" के लिए "ह" का प्रयोग -

पुष्प = पुहुप - सुरकर्णी पुहुप बिशाल सुंदर बिहँस चहुँदिसि डोलई।[5]

पुष्पलता = पुहुपलता- राजीव देख न भूला तहँ पुहुपलता अनुराग।[6]

पुष्पक विमान- पुहुपबिमान- आरुढ़ पुहुप बिमान तिन सहित रतन पट पाट।[7]

इसके अतिरिक्त आलोच्य महाकाव्य में "ष" पदादि, मध्य एवं अन्त में उपलब्ध होता है; जैसे -

आदि	मध्य	अन्त
षटरस[8], षष्टमी, षट[9],	सुषमा[11], दूषन[12],	दोषा[14], पोषा[15]
षटमास[10]	भूषन[13]	अभिषा[16]

2.2.2 ध्वनियों का लिप्यन्तरण -

विश्व की प्रत्येक भाषा में न्यूनाधिक रूप में विजातीय शब्द प्रयुक्त प्राप्त होते हैं। आलोच्य "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में तत्सम, अर्धतत्सम, तद्भव, विदेशी एवं प्रान्तीय भाषाओं तथा क्षेत्रीय बोलियों की शब्दावली का प्रचुर समावेश प्राप्त होता है;

---

1. रा0वि0बा0का0350/2. रा0वि0अयो0का0814/3. रा0वि0सु0का01501
4. रा0वि0लं0का02305/5. रा0वि0बा0का0308/6. रा0वि0सु0का01545
7. रा0वि0लं0का02684/8. रा0वि0बा0का0290/9. रा0वि0बा0का0329
10. रा0वि0लं0का02815/11. रा0वि0अर0का0976/12. रा0वि0अर0का01004
13. रा0वि0अर0का01074/14. रा0वि0अर0का01039/15. रा0वि0लं0का02139
16. रा0वि0लं0का02337

जिसके कारण भाषा-का वैशिष्ट्य के अतिरिक्त ध्वनि परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं । परिवर्तन भाषा प्रगति की प्रमुख प्रवृत्ति होती है । आलोच्य "रामविनोद" महाकाव्य रामकाव्य है, जिसका प्रणयन काल कार्तिक मास से लेकर माघ मास सं0 1804 है ।[1] इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि गो0 तुलसीदास जी की प्रमुख रचना अवधी के महाकाव्य श्री रामचरित मानस के प्रणयन के 175 वर्ष पश्चात "रामविनोद" महाकाव्य की रचना पूर्ण हुई । सं0 1800 तक के दीर्घ समय तक श्री रामचरित मानस का पर्याप्त प्रसार प्रचार हो गया होगा । इसी लिए रामकथा को माध्यम बनाकर महाकवि चन्द ने "रामविनोद" महाकाव्य का सृजन किया । अतः भाषा पर भी उसकी छाप यत्र-तत्र पड़ना स्वाभाविक है । किन्तु समय के पर्याप्त अन्तराल में शब्दगत ध्वनियों में बहुत से परिवर्तन हुए होंगे, जिसके कारण लोप, आगम, विपर्यय, विकारीकरण, ह्रस्वीकरण आदि संभाव्य हैं ।

ध्वनियों के लिप्यन्तरण में विभिन्नता के प्रमुख चार कारण संभव हैं -

§1§ उच्चारण-वैविध्य, § 2 § मात्रापूर्ति, § 3 § लिपि में आरोपण विकल्प, §4§ लिपि चिन्हों का अभाव ।

§1§ <u>उच्चारण-वैविध्य-</u>

एक कहावत है- "कोस-कोस पर पानी बदले चार कोस पर बानी" । तात्पर्य यह है कि प्रत्येक 10 से 15 कि0मी0 की दूरी पर भाषा में परिवर्तन

1- बालकाण्ड की पुष्पिका द्रष्टव्य है -

सोरठा- अठारह से अरु चार, वर्ष पुन्न भावन सुदिन ।
कातिक सुनि सुखकार, शुक्ल पक्ष तिथि अष्टमी ।।426

उत्तरकाण्ड की समाप्ति अर्थात, "रामविनोद" महाकाव्य का अंतिम दोहा-

दोहा- सम्वै अठारह से बरस, अवर चार पर मान ।
माघ शुक्ल तिथि अष्टमी, बरनेउ चंद पुरान ।। 3512

हो जाता है। बोली भूगोल के सर्वेक्षण से यह सिद्ध भी हो चुका है। आलोच्य "रामविनोद महाकाव्य की भाषा में क्षेत्रीय अन्तर प्राप्त होता है। क्षेत्रीय अन्तरों के कारण भाषा में उच्चारण वैविध्य दृष्टिगोचर होता है। एक ही शब्द के अनेकानेक ध्वन्यात्मक रूपों से यह तथ्य अत्यन्त स्पष्ट हो जाता है। ध्वन्यात्मक परिवर्तन उच्चारण वैविध्य ऐतिहासिक दृष्टि से भी सम्भव रहता है।

उदाहरणार्थ -

पाँय[1]- पाँव[2]- पाउँ[3], मस्तक[4]-मसतक[5]-मातिक[6],
सत्य[7]-सत्त[8]-सत[9], प्रकट[10]-प्रगट[11]- प्रगाट[12],
सीय[13]-सीउ[14], आत्मा[15]- आतमा[16], युवती[17] जुवती[18],
प्रभु[19]- प्रभु[20], प्रभु[21] - प्रभु[22], प्रीति[23] प्रीत[24],
यश[25]- जस[26], धेनु[26]- धेन[28], घाय[29]- घाउ[30],

---

1. रा0 वि0 अयो0 का0 605/2. रा0 वि0 बा0 का0 90/3. रा0 वि0 बा0 का0 198
4. रा0 वि0 उ0 का0 3127/5. रा0 वि0 बा0 का0 2622/6. रा0 वि0 अर0 का0 1127
7. रा0 वि0 बा0 का0 162/8. रा0 वि0 बा0 का0 164/9. रा0 वि0 उ0 का0 2772
10. रा0 वि0 लं0 का0 2590/11. रा0 वि0 उ0 का0 3301/12. रा0 वि0 सु0 का0 1490
13. रा0 वि0 अयो0 का0 453/14. रा0 वि0 बा0 का0 345/15. रा0 वि0 उ0 का0 2890
16. रा0 वि0 उ0 का0 2890/17. रा0 वि0 बा0 का0 198/18. रा0 वि0 बा0 का0 257
19. रा0 वि0 बा0 का0 15/20. रा0 वि0 अर0 का0 1142/21. रा0 वि0 उ0 का0 2965
22. रा0 वि0 उ0 का0 3001/23. रा0 वि0 सु0 का0 1514/24. रा0 वि0 बा0 का0 185
25. रा0 वि0 बा0 का0 221/26. रा0 वि0 बा0 का0 316/27. रा0 वि0 बा0 का0 351
28. रा0 वि0 अयो0 का0 847/29. रा0 वि0 अर0 का0 1046/30. रा0 वि0 अयो0 का0 704

(ii) मात्रापूर्ति -

ध्वनि परिवर्तन का कारण छन्दानुरोध-

आलोच्य "रामविनोद" महाकाव्य में छन्दानुरोध की समस्या के समाधान स्वरूप मात्रापूर्ति निम्नांकित प्रक्रियाओं से ध्वनि परिवर्तन कर लिए गए हैं -

(क) **ह्रस्वीकरण** - नारी - नारि[1], पुरी - पुरि[2],
नासेउ - नसेउ[3], सुंदरी - सुंदरि[4],
आनंदित - अनंदित[5], आहार - अहार[6],
केशरी - केशरि[7],

(ख) **क्षतिपूर्ति रहित द्वित्व व्यंजन का सरलीकरण -**

चित्त - चित[8], मुक्ता - मुकता[9], [illegible] - बिरदा[10],
शब्द - सबद[11], परस्पर - परसपर[12], उत्पात- उतपात[13],

(ग) **अनुस्वार का अनुनासिकीकरण -**

बंटा - बाँटा[14], विहंग - विहँग[15], कंटे- काँटे[16],
मांस - माँस[17], पंक्ति - पाँति[18]।

---

1. रा० वि० बा० का० 411/2. रा० वि० बा० का० 396/3. रा० वि० अर० का० 914
4. रा० वि० अयो० का० 462/5. रा० वि० उ० का० 3232/6. रा० वि० सु० का० 1662
7. रा० वि० सु० का० 1735/8. रा० वि० अर० का० 1152/9. रा० वि० कि० का० 1285
10. रा० वि० बा० का० 28/11. रा० वि० कि० का० 1284/12. रा० वि० कि० का० 1240
13. रा० वि० लं० का० 2021/14. रा० वि० सु० का० 1663/15. रा० वि० कि० का० 1281
16. रा० वि० लं० का० 2893/17. रा० वि० अर० का० 1015/18. रा० वि० लं० का० 2005

(ग) "औ" संयुक्त स्वर, "अव" के रूप में -

औ > अव : कौन - कवन[1], दौर- दवर[2], ठौर - ठवर[3],
मौर - मवर[4], मौज - मवज[5],
कौशिल्या - कवशिल्या[6], औंटाटा-अवटाटा[7]।

(ङ) "बिहार में गति को गत, जाति को जात, साधु को साध, मधु को मध कहते हैं।"[8] अन्त की "इ" विलुप्त हो जाती है। चूँकि "रामविनोद" महाकाव्य की मूल प्रति कैथी लिपि में अंकित होने के कारण बिहार की भाषा से प्रभावित हुए लिए हुए है, अतः अन्त की "इ" विलुप्त हो गई है- विदिटा-विदटा[9]
प्रीति - प्रीत[10], सुमति -सुमत[11], आदि- आद[12]
रीति- रीत[13], मीति- मीत[14], नारि- नार[15], निति-निस[16],
विपति - विपत[17], मनिहार- मनहार[18]।

(च) संयुक्त व्यंजनों में आगत नासिक्य व्यंजनों ङ, ञ, ण, न, म को अनुस्वार द्वारा प्रदर्शित किया गया है -
ङ - तुरंग[19], लंका[20], अंगन[21], मंगल[22], रंग[23], सिरंग[24]।

---

1. रा० वि०अयो०का०461/2. रा० वि०अयो०का०490/3. रा० वि०अयो०का०490
4. रा० वि०बा०का०250/5. रा० वि०बा०का०251/6. रा० वि०अयो०का०720
7. रा० वि०लं०का०2137/8. रा० बिहार राष्ट्रभाषा "परिषद् पत्रिका" वर्ष 20 अंक 3 पृष्ठ 53
9. रा० वि०अयो०का०434/10. रा० वि० कि०का०1175/11. रा० वि०सु०का०1390
12. रा० वि०अर०का०920/13. रा० वि०920/14. रा० वि० कि०का०1190
15. रा० वि० कि०का०1195/16. रा० वि०सु०का०1426/17. रा० वि० कि०का०1257
18. रा० वि०अयो०का०487/19. रा० वि०बा०का०225/20. रा० वि०लं०का०2316
21. रा० वि०बा०का०212/22. रा० वि०लं०का०2602/23. रा० वि०उ०का०3135
24. रा० वि०लं०का०2058

ञ् कुंज बिहारी[1], मंजन[2], बिंजन[3], कंज[4], चंचल[5], बिरंच[6]।

ण् - कुंडल[7], मंडप[8], प्रचंड[9], पिंड[10], दंड[11], कमंडल[12]।

न् - कुमार सिंधु[13], मंदिर[14], चंदन[15], कांत[16], दंत[17], मंत्र[18]।

म् - स्वयंबर[19], गंभीर[20], कुंभज[21], जंबुक[22], स्तंभ[23], तंबा।[24]

(IV) लिपि-चिह्नों का अभाव -

विदेशी (अरबी- फारसी) व्यंजन ध्वनियों में परवर्ती- क़, ख़, ग़, ज़, फ़, क्रमशः क, ख, ग, ज, तथा फ में परिवर्तित हो गई हैं ; यथा-

क़	क	बिक़रार, लायक़	बिकरार[25], लायक[26]
ख़	ख	ख़्याल	ख्याल[27]
ग़	ग	ग़ुमान, ग़ुमान्न	गुमान[28], गुमान्न[29]
ज़	ज	हज़ार, बाज़, जैं	हजार[30], बाज[31], जैं[32]
		बज़ार, बज़ाज	बजार[33], बजाज[34]
फ़	फ	फ़रार	फरार[35]

---

1. रा0 वि0 अयो0 का0 548/2. रा0 वि0 अयो0 का0 809/3. रा0 वि0 बा0 का0 234
4. रा0 वि0 कि0 का0 1160/5. रा0 वि0 बा0 का0 224/6. रा0 वि0 लं0 का0 1933
7. रा0 वि0 बा0 का0 242/8. रा0 वि0 बा0 का0 266/9. रा0 वि0 बा0 का0 348
10. रा0 वि0 अयो0 का0 808/11. रा0 वि0 उ0 का0 2872/12. रा0 वि0 उ0 का0 2872
13. रा0 वि0 बा0 का0 203/14. रा0 वि0 बा0 का0 206/15. रा0 वि0 बा0 का0 234
16. रा0 वि0 कि0 का0 1278/17. रा0 वि0 अयो0 का0 746/18. रा0 वि0 कि0 का0 1162
19. रा0 वि0 बा0 का0 210/20. रा0 वि0 अयो0 का0 802/21. रा0 वि0 उ0 का0 3174
22. रा0 वि0 लं0 का0 2064/23. रा0 वि0 लं0 का0 1933/24. रा0 वि0 बा0 का0 344
25. रा0 वि0 अयो0 का0 804/26. रा0 वि0 बा0 का0 361/27. रा0 वि0 उ0 का0 3067
28. रा0 वि0 लं0 का0 1828/29. रा0 वि0 लं0 का0 2169/30. रा0 वि0 उ0 का0 2859
31. रा0 वि0 उ0 का0 3099/32. रा0 वि0 लं0 का0 2014/33. रा0 वि0 उ0 का0 2861
34. रा0 वि0 उ0 का0 2860/35. रा0 वि0 अयो0 का0 608

इसी प्रकार अरबी- फारसी शब्दों में विशिष्ट स्वर- जो प्रयुक्त होते हैं - काव्य भाषा के अनुरूप परिवर्तित हो गए हैं; यथा- बख्शी[1], नवबत[2], अम्मार[3], गुमार[4], तामा[5], अहल[6], पहल[7] आदि ।

2.3 <u>ध्वनिग्राम- स्वर तथा व्यंजन और अर्ध-स्वर</u>

2.3.1 <u>स्वर - ध्वनिग्राम -</u>

महाकवि चंद्रकृत "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में प्राप्त दस स्वर ध्वनियाँ इस प्रकार हैं -

अ , आ, इ, ई, उ , ऊ, ए , ऐ , ओ, औ = 10

निम्नांकित प्रकार से उपर्युक्त प्राप्त महत्त्वपूर्ण ध्वनियों को व्यवस्थित किया जा सकता है -

1 <u>मूल</u> -

क- ह्रस्व - अ , इ , उ , ।

ख- दीर्घ- आ , ई , ऊ , ए , ओ ।

2 <u>संयुक्त स्वर-</u>

ऐ (अइ, अय), औ (अउ, अव) (स्वरों के अन्तर्गत "अ" तथा "आ" को ह्रस्व और दीर्घ कहकर अभिहित किया जाता है ।[8] किन्तु "इनके उच्चारण में केवल मात्रा-काल का ही अन्तर नहीं है, बल्कि उच्चारण प्रयत्न और जिह्वा के व्यवहृत भाग की दृष्टि से भी अन्तर है ।"[9] यही स्थिति

---

1. रा० वि० बा० का० 5/2. रा० वि० बा० का० 51/3. रा० वि० बा० का० 304.
4. रा० वि० अर० का० 929/5. रा० वि० अ० का० 3047/6. रा० वि० सु० का० 139।
7. रा० वि० सु० का० 1400/8. डॉ० उदय नारायण तिवारी: भाषा शास्त्र की रूप रेखा पृ० 260
9. डॉ० कैलाश चन्द्र अग्रवाल: आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना पृ० 4

इ, ई, उ ऊ स्वरों के संबंध में है। भाषा विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में "इन्हें एक ही ध्वनिग्राम के संस्वन मान लेना ही अवैज्ञानिक एवं भ्रमपूर्ण होगा।"[1क] इन स्वरों के लिपि-चिन्हों के विषय में विस्तृत विवरण विषय-क्रम 1.2.2.1 के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा चुका है।

यहाँ पर ध्वनिग्रामीय स्वरूप के निर्धारण के लिए औचित्य परिपूरक एवं व्यतिरेकी स्थितियों पर विचार प्रस्तुत किये जा रहे हैं -

शब्द की तीनों स्थितियाँ -

	आदि	मध्य	अन्त
अ-	अवनीश[1], अनी[2]	धरन[3], भारत[4]	सीअ[5], पुअ[6]
आ-	आतुर[7], आहार[8]	अपाय[9], पैआन[10]	दिआ[11], कुआ[12]
इ-	इसु[13], इती[14]	अभिन[15], पानी[16]	दुइ[17], खोइ[18]
ई-	ईस[19], ईसा[20]	पचीस[21], महीप[22]	तमाई[23], जमाई[24]

1क- डॉ० जनार्दनसिंह: तुलसी की भाषा पृ० 51

1. रा0 वि0 बा0 का0 0203/2. रा0 वि0 सु0 का0 1651/3. रा0 वि0 लं0 का0 1967

4. रा0 वि0 उ0 का0 2926/5. रा0 वि0 बा0 का0 0345/6. रा0 वि0 बा0 का0 029

7. रा0 वि0 बा0 का0 0205/8. रा0 वि0 अयो0 का0 0746/9. रा0 वि0 बा0 का0 0320

10. रा0 वि0 अयो0 का0 0730/11. रा0 वि0 लं0 का0 0257/12. रा0 वि0 अयो0 का0 0812

13. रा0 वि0 बा0 का0 0347/14. रा0 वि0 लं0 का0 1658/15. रा0 वि0 उ0 का0 2774

16. रा0 वि0 400/17. रा0 वि0 बा0 का0 0585/18. रा0 वि0 बा0 का0 0348

19. रा0 वि0 बा0 का0 0205/20. रा0 वि0 लं0 का0 1925/21. रा0 वि0 बा0 का0 0394

22. रा0 वि0 अयो0 का0 0855/23. रा0 वि0 बा0 का0 0265/24. रा0 वि0 अयो0 का0 0581

"इ" तथा "ई" के मध्य -

(इ) - पारि[1] (पल), दिन[3] (दिवस), हारि[5] (राम)।

(ई) - पारी[2] (फुलवारी), दीन[4] (दरिद्र), हरी[6] (हरण)।

"उ" तथा "ऊ" के मध्य -

(उ) - सुर[7] (देवता), पुर[9] (नगर), दुत[11] (धुना)।

(ऊ) - सूर[8] (राय), पूर[10] (सम्पूर्ण), दूत[12] (पत्र)।

"ए" तथा "ऐ" के मध्य -

(ए) - बेर[13] (पुकार), बेद[15] (वेद), पलके[17] (क्षणमात्र)।

(ऐ) - बैर[14] (शत्रुता), बैद[16] (वैद्य), पलकै[18] (पलक)।

"ओ" तथा "औ" के मध्य -

(ओ) - ओर[19] (तरफ), खोर[21] (खोरागामी), मोर[23] (पक्षी)।

(औ) - और[20] (अन्य), खौर[22] (चन्दन का टीका), मौर[24] (सिरो-भूषण)।

---

1. रा० वि० लं० का० 1762/2. रा० वि० सुं० का० 1466/3. रा० वि० उ० का० 2945
4. रा० वि० उ० का० 2947/5. रा० वि० कि० का० 1161/6. रा० वि० अ० का० 1096
7. रा० वि० बा० का० 0308/8. रा० वि० उ० का० 3390/9. रा० वि० उ० का० 2778
10. रा० वि० उ० का० 2778/11. रा० वि० अयो० का० 0483/12. रा० वि० लं० का० 1901
13. रा० वि० उ० का० 2759/14. रा० वि० लं० का० 1824/15. रा० वि० अयो० का० 0464
16. रा० वि० लं० का० 2159/17. रा० वि० सुं० का० 1516/18. रा० वि० सुं० का० 1516
19. रा० वि० बा० का० 096/20. रा० वि० बा० का० 0100/21. रा० वि० बा० का० 096
22. रा० वि० बा० का० 076/23. रा० वि० अ० का० 1152/24. रा० वि० लं० का० 1937

"ऐ" तथा "औ" का क्रमशः अय तथा अव के रूप में उच्चारणानुसार प्रयोग प्राप्त होता है ; यथा-

ऐ - लै [1], रचै [2]

अय - लय[3], रचय[4]

औ - और [5] । अन्य ।

अव - अवर [6] ।अन्य। , पवक [7] ।पौक। , क्वशिल्या[8] ।कौशिल्या ।।

अय तथा अव के मध्य व्यतिरेकी स्थिति नहीं है ।

किन्तु "ऐ" तथा "औ" के मध्य है; यथा -

।ऐ। - मैन [9] ।कामदेव। , लै[11] ।क्रिया "लेना"।।

।औ। - मौन[10] ।चुप,शान्त।, लौ[12] ।अव्यय "पर्यन्त"। ।

अस्तु यह स्पष्ट हो जाता है कि आलोच्य ग्रन्थ में "ऐ" और "औ" संयुक्त स्वर हैं तथा स्वनिग्राम भी हैं ।

इस प्रकार स्वरों के परिवेश - आदि, मध्य एवं अन्त तथा व्यतिरेकी युग्मों में स्पष्ट हो जाता है कि आलोच्य महाकाव्य "रामविनोद" में प्रयुक्त दस स्वर स्वनिग्राम हैं -

अ, आ, इ, ई , उ, ऊ , ए , ऐ, ओ, औ = 10

1, रा0वि0 लं0का02368/ 2. रा0वि0अयो0का0443/3. रा0वि0उ0का03102
4. रा0वि0बा0का010/5. रा0वि0उ0का03391/6. रा0वि0अर0का01008
7. रा0वि0बा0का0312/8. रा0वि0अयो0का0720/9. रा0वि0अर0का0891
10. रा0वि0बा0का0106/11. रा0वि0लं0का02380/12. रा0वि0बा0का0173

अनुनासिकता -

स्वरों का संयोजन अनुनासिकता के माध्यम से सम्पन्न किया जाता है। अनुनासिकता स्वरों के साथ संयुक्त होती है। जब वायु मुख विवर एवं नासिका-विवर से उच्चारण करते समय बाहर निकलती है तभी अनुनासिकता का समावेश स्वरों के साथ संलग्न हो जाता है। इसके 2 प्रकार पाये जाते हैं -

1- अनुनासिकता - लिपि में इसके हेतु चन्द्र बिन्दु (ँ) चिन्ह का प्रयोग किया गया है -

साँची[1], हाँथ[2], सिहैं[3], फाँस[4], पाँच[5], साँस[6], भाँति[7], पाँच[8], बाँटा[9], सिहैं[10], माँहि[11], जहाँ[12], माँगी[13], बाँह[14], दाँय[15] आदि।

2. अनुस्वार -

स्वरों के पश्चात् उच्चरित नासिक्य तत्व है। लिपि में स्वरों के ऊपर बिन्दु (ं) लगाकर इसे आलोच्य महाकाव्य में अंकित किया गया है; यथा -

संदेश - कंठ[16], कुरंग[17], लंका[18], मंगल[19], संग[20], संकर[21]।

---

1. रा० वि० पु० का० 1463/2. रा० वि० पु० का० 1478/3. रा० वि० अर० का० 0931
4. रा० वि० पु० का० 1574/5. रा० वि० बा० का० 057/6. रा० वि० बा० का० 054
7. रा० वि० अयो० का० 0798/8. रा० वि० अर० का० 0977/9. रा० वि० अर० का० 01006
10. रा० वि० कि० का० 01278/11. रा० वि० कि० का० 01351/12. रा० वि० लं० का० 02306
13. रा० वि० उ० का० 02878/14. रा० वि० उ० का० 02735/15. रा० वि० उ० का० 03401
16. रा० वि० लं० का० 02653/17. रा० वि० अर० का० 01048/18. रा० वि० लं० का० 02633
19. रा० वि० अयो० का० 0503/20. रा० वि० बा० का० 0192/21. रा० वि० लं० का० 02562

जिसमें भी यह प्रवृत्ति प्राप्त होती है । स्वरों समीप अनुनासिकता है । अनुस्वार उच्चारण शैली से व्यंजन के अतिरिक्त व्यंजनवत् पाया जाता है । आलोच्य महाकाव्य की भाषा में दोनों का महत्व स्वाभाविक रूप से पृथक-पृथक प्रतिपादित है । वर्णमाला में नासिक्य वर्णों के स्थान पर अनुस्वार प्रयुक्त किए जाने से भाषा को सरलता प्राप्त हुई है । नासिक्य व्यंजन ध्वनियों को स्पष्ट करने में परसवर्ण नासिक्य "न" के संयुक्त स्वरूप से सहायता आई है । अभिव्यक्ति एवं व्याकरणिक अर्थ में अन्तर स्पष्ट करने के कारण अनुनासिकता का औचित्य समुचित है, यथा-

"रामविनोद" महाकाव्य में अनुनासिकता (ँ) एवं अनुस्वार (ं) के मध्य व्यतिरेकी स्थितियाँ -

अनुनासिकता - (ँ) = हँस[1] = (हँसना "क्रिया")

अनुस्वार - (ं) = हंस[2] = (पक्षी "संज्ञा")

निरनुनासिक तथा अनुनासिक के मध्य व्यतिरेकी स्थितियाँ-

निरनुनासिक - मास[3] = माह , सास[5] (पारिवारिक संबंध),

अनुनासिक - माँस[4] = गोश्त , साँस[6] (निःश्वास),

अननुस्वार तथा अनुस्वार के मध्य व्यतिरेकी स्थितियाँ -

अननुस्वार - मद[7] = अभिमान , वश[9] = प्रभाव ,

अनुस्वार - मंद[8] = धीमा , वंश[10] = कुल .

1, रा० वि० सु० का० 174/2, रा० वि० कि० का० 1282/3, रा० वि० बा० का० 179
4, रा० वि० बा० का० 382/5, रा० वि० उ० का० 2982/6, रा० वि० बा० का० 1918
7, रा० वि० अर० का० 1090/8, रा० वि० बा० का० 126/9, रा० वि० अयो० का० 722
10, रा० वि० बा० का० 137

ग - "ह" से पूर्व प्रयुक्त स्वरों की मात्रा कुछ ह्रस्व हो जाती है; यथा -

देह[1], छोह[2], बिरह[3], सनेह[4], आह[5], सोहन[6], मोहन[7] आदि ।

		द्वयोष्ठ्य	दन्त्य	वर्त्स्य	तालव्य	मूर्धन्य	कंठ्य	स्वरयंत्रमुखी
स्पर्श	अल्पप्राण	प ब	त द		च ज	ट ड	क ग	
	महाप्राण	फ भ	थ ध		छ झ	ठ ढ	ख घ	
नासिक्य	अल्पप्राण	म		न	ञ	ण	ङ	
	महाप्राण	म्ह		न्ह				
पार्श्विक	अल्पप्राण			ल				
	महाप्राण							
लुण्ठित	अल्पप्राण			र				
उत्क्षिप्त	अल्पप्राण					ड़		
	महाप्राण					ढ़		
संघर्षी								
				स		ष		ह
अर्द्धस्वर								
		व			य			

1. रा०चि०कि०ता०121।/2. रा०चि०कि०ता०121।/3. रा०चि०कि०ता०120।
4. रा०चि०कि०ता०218/5. रा०चि०कि०ता०275/6. रा०चि०कि०ता०279
7. रा०चि०कि०ता०279

ज - जल[1] = पानी

झ - झल । के ।[2] = प्रतिबिम्बित

3- <u>मूर्धन्य वर्ग</u> -

ट , ठ , ड , ढ ।

ट , स्पर्श , अघोष , अल्प प्राण ।

ठ , स्पर्श , अघोष , महाप्राण ।

ड , स्पर्श , सघोष , अल्प प्राण ।

ढ , स्पर्श , सघोष , महाप्राण ।

<u>प्रयोग-स्थिति</u> -

ट - टारी[3], कटक[4], तट[5] ।

ठ - ठवर[6], ठठता[7], पीठ[8] ।

ड - डार[9], दंडक[10], बरिबंड[11] ।

ढ - ढहावा[12], -- , बढ़[13]।

तुल्य ध्वन्यात्मक वातावरण में व्यतिरेकी स्थिति में मूर्धन्य ध्वनियों की प्राप्ति आलोच्य महाकाव्य में नहीं हो सकी । किन्तु प्रयोग-दृष्टि से भाषा में महत्ता पूर्ण स्थिति है ।

---

1. रा० वि० बा० का० 196/ 2. रा० वि० बाल का० 225/ 3. रा० वि० लं० का० 257।
4. रा० वि० लं० का० 2323/ 5. रा० वि० कि० का० 1369/ 6. रा० वि० सु० का० 1420
[illegible] 7. रा० वि० अर० का० 1030/ 8. रा० वि० लं० का० 1929
9. रा० वि० लं० का० 2559/ 10. रा० वि० अर० का० 871/ 11. रा० वि० लं० का० 1924
12. रा० वि० लं० का० 2007/ 13. रा० वि० लं० का० 1820

4- <u>दन्त्य वर्ग</u> -

त , थ , द , ध ।

त -, स्पर्श , अघोष , अल्प प्राण ।
थ - स्पर्श , अघोष , महा प्राण ।
द - स्पर्श , सघोष , अल्प प्राण ।
ध - स्पर्श , सघोष , महा प्राण ।

<u>प्रयोग- स्थिति</u> -

त - तम[1] , आतम[2] , माता[3] ।
थ - थल[4] , प्रथम[5] , अनाथ[6] ।
द - दरिद्र[7] , वदन[8] , अनाद[9] ।
ध - धरनी[10] , अंधकार[11] , अपराध[12] ।

व्यतिरेकी स्थितियों द्वारा ध्वनिग्रामीय मूल्यांकन -

त - तल[13] = पाताल
थ - थल[14] = स्थल
द - दल[15] = सेना
ध - धार[16] = धार (धारा)

5- <u>ओष्ठ्य</u> - प , फ , ब , भ ।

प - स्पर्श , अघोष , अल्प प्राण ।
फ - स्पर्श , अघोष , महाप्राण ।
ब - स्पर्श , सघोष , अल्प प्राण ।
भ - स्पर्श , सघोष , महा प्राण ।

[illegible] 1. रा०पि०कि०का०1366/2. रा०पि०कि०1184
3. रा०पि०सुं०का०1404/4. रा०पि०कि०का०1301/5. रा०पि०लं०का०1876
6. रा०पि०कि०का०1277/7. रा०पि०कि०का०1171/8. रा०पि०सुं०का०1445
9. रा०पि०लं०का०2246/10. रा०पि०लं०का०2101/11. रा०पि०लं०का०2050
12. रा०पि०सुं०का०1435/13. रा०पि०कि०का०1325/14. रा०पि०अर०का०0960
15. रा०पि०अर०का०0976/16. " " लं० " 2210

प्रयोग-स्थिति -

प - पटु[1] , तपती[2] , दीप[3] ।

फ - फलता[4] , सफल[5] , — ।

ब - बनिता[6] , कुबजा[7] , बिंब[8] ।

भ - भावन[9] , कुभाट[10] , शोभा[11] ।

व्यतिरेकी स्थितियों द्वारा ध्वनिग्रामीय मूल्यांकन -

प - पट[12] = वस्त्र

फ - फट[13] = फटना

ब - बट[14] = बरगद तरु

भ - भट[15] = वीर

6- नासिक्य व्यंजन -

न , म ।

न - वर्त्स्य , नासिक्य , सघोष , अल्प प्राण ।

म - द्वयोष्ठ्य , नासिक्य , सघोष , अल्प प्राण ।

प्रयोग -स्थिति -

न - नर[16] , दानव[17] , सुमन[18] ।

म - मन[19] , ममता[20] , काम[21] ।

---

1. रा० मि० लं० का० 1911/2. रा० मि० सु० का० 1472/3. रा० मि० उ० का० 2992
4. रा० मि० लं० का० 2166/5. रा० मि० अयो० का० 0573/6. रा० मि० कि० का० 1300
7. रा० मि० उ० का० 3506/8. रा० मि० उ० का० 3444/9. रा० मि० सु० का० 1601
10. रा० मि० लं० का० 2236/11. रा० मि० उ० का० 2954/12. रा० मि० सु० का० 1595
13. रा० मि० बा० का० 0112/14. रा० मि० अयो० का० 0606/15. रा० मि० अयो० का० 0795
16. रा० मि० कि० का० 1159/17. रा० मि० लं० का० 2005/18. रा० मि० अर० का० 0935
19. रा० मि० अर० का० 0905/20. रा० मि० अर० का० 0949/21. रा० मि० लं० का० 02403

व्यतिरेकी स्थितियों द्वारा ध्वनिग्रामीय मूल्यांकन -

न - नख[1] = नाखून , बान[3] = बाण ।

म - मख[2] = यज्ञ , बाम[4] = स्त्री ।

"न्ह" तथा "म्ह" क्रमशः "न" और "म" के महा प्राण हैं -

न - का महाप्राण रूप "न्ह" है ।

म - का महा प्राण रूप "म्ह" है ।

न - तिन[5] , तिन्ह[6] ।

म - तुम[7] , तुम्हरे[8] ।

7- <u>पार्श्विक तथा लुण्ठित</u> - र , ल ।

र - वर्त्स्य , लुण्ठित , सघोष , अल्प प्राण ।

ल - वर्त्स्य , पार्श्विक , सघोष , अल्प प्राण ।

<u>प्रयोग - स्थिति</u> -

र - रस[9] , परम[10] , निरापद[11] ।

ल - लगात[12], कमल[13] , दाल[14] ।

व्यतिरेकी स्थितियों द्वारा ध्वनिग्रामीय मूल्यांकन-

र - नीर[15] = जल , दार[17] = गढ़ा ।

ल - नील[16] = रंग , दाल[18] = [illegible] ।

---

1. रा० पि० भा० का० 0250/2. रा० पि० भा० का० 0158/3. रा० शि० ध० पो० का० 0707

4. रा० पि० कि० का० 1169/5. रा० पि० कि० का० 1162/6. रा० पि० गं० का० 02714

7. रा० पि० कि० का० 1234/8. रा० पि० भा० का० 0245/9. रा० पि० अ० का० 0919

10. रा० पि० कि० का० 1311/11. रा० पि० कि० का० 1195/12. रा० पि० गं० का० 02384

13. रा० पि० गं० का० 02504/14. रा० पि० अ० का० 0895/15. रा० पि० भा० का० 0164

16. रा० पि० गं० का० 2171/17. रा० पि० गं० का० 1957/18. रा० पि० गं० का० 02246

8- <u>उत्क्षिप्त</u> - ड़ , ढ़ ।

ड़ - मूर्धन्य , सघोष , अल्प प्राण ।

ढ़ - मूर्धन्य , सघोष , महाप्राण ।

प्रयोग - स्थिति -

ड़ - --- , सड़ागन[1] , होड़[2] ।

ढ़ - ढ़ोर[3] , बढ़त[4] , दृढ़[5] ।

ड़ और ढ़ के पूरक वितरण में प्रयुक्त ड़ और ढ़ संस्वन हैं ।

9- <u>संघर्षी</u> - स , ह ।

स - वर्त्स्य , अघोष ।

ह - काकल्य , अघोष ।

<u>प्रयोग - स्थिति</u> -

स - समर[6], रसना[7] , प्रकास[8] ।

ह - हनुमान[9], सहज[10], उछाह[11] ।

व्यतिरेकी स्थितियों द्वारा ध्वनि ग्रामीय मूल्यांकन -

स - सरन[12] = आश्रय , सम[14] = तुल्य ।

ह - हरन[13] = नाश करना, हम[15] = मैं का ब0 वचन ।

उक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि आलोच्य महाकाव्य "रामविनोद" के अन्तर्गत क , क़ , ग , ग़ , च , छ , ज , झ , ट

---

1. रा0वि0अ0का0881/2. रा0वि0लं0का01772/3. रा0वि0लं0का02007

4. रा0वि0अयो0का0482/5. रा0वि0लं0का02217/6. रा0वि0लं0का02325

7. रा0वि0कि0का01270/8. रा0वि0अ0का0899/9. रा0वि0सु0का01445

10. रा0वि0लं0का02343/11. रा0वि0अ0का0935/12. रा0वि0बा0का0 3

13. रा0वि0बा0का04/14. रा0वि0कि0का01159/15. रा0वि0सु0का0[illegible]1430

ढ, ड़, द, ध, ण, ट, ण, थ, प, फ, ब,
भ, म, र, ल, व, ह व्यंजन

26 ध्वनियाँ स्वतंत्र ध्वनिग्राम हैं ।

2.3.3 <u>अर्ध- स्वर -</u>

स्वर तथा व्यंजन गणना में "य" तथा "व" (अर्ध-स्वर) की स्थिति स्वर तथा व्यंजन के मध्य की तीसरी श्रेणी है ।[1] "भारतीय वैयाकरणों ने इन्हें अन्तःस्थ कहा है क्यों कि इनके उच्चारण की स्थिति स्वर और व्यंजनों के बीच की है ।[2]" "इसलिये ये वर्ण उच्चारण- स्थान की दृष्टि से स्वर तथा व्यंजनों के मध्यवर्ती होने से अन्तःस्थ और अर्ध-स्वर कहलाते हैं।[3]" "इ" का "ए", "ऐ" तथा "य" में और "उ" का "ओ", "औ" तथा "व" में परिवर्तित हो जाना ही अन्तःस्थ - स्थिति की पहचान है । स्वराघात-सहन-सामर्थ्य का अभाव एवं स्वर-तुल्य मुखर-हीनता इन्हें व्यंजन मानने का आधार है । यही कारण इन्हें अक्षर निर्माण में अक्षम प्रमाणित करता है । ध्वन्यात्मकता एवं कार्यकारिता के परिप्रेक्ष्य में व्यंजनों की तुलना में स्वरों जैसी क्रियाशीलता अभिव्यक्त करने के कारण इन्हें "अर्ध-स्वर" से अभिहित करना अधिक समीचीन रहेगा । "विभिन्न स्वरों के मध्य "य" तथा "व" के विशिष्ट रागात्मक रूप श्रुतिगत होते हैं ।[4]" आलोच्य ग्रन्थ

---

1. डॉ० जनार्दन सिंह: तुलसी की भाषा पृ०63, सन् 1976 ई०
2. डॉ० विश्वनाथ प्रसाद: भारतीय साहित्य, अप्रैल सन् 1956 ई०
3. डॉ० आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा: हिन्दी भाषा का विकास सन् 1971ई०
   डॉ० रामदेव त्रिपाठी पृ० 37
4. डॉ० कैलाश चन्द्र अग्रवाल: आधुनिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना
   पृ० 13, पंचम संस्करण सन् 1 जनवरी 1980 ई०

एक स्थान पर य > औ के रूप में उपलब्ध है -

असमौ समौ कुराय उर तौ किमि मानै नीति ।
असमय समय - असमौ समौ [1] ।

"य" तथा "व" अर्ध-स्वरों के उक्त परिवर्तनों से इनका झुकाव स्वर और व्यंजन दोनों की ओर स्पष्ट प्रकट होता है । इसके अतिरिक्त इनके अविकृत रूप भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते हैं । आलोच्य महाकाव्य "रामविनोद" में व > ब और य > ज में सर्वत्र अधिकता से प्राप्त होता है ।

स्वरानुक्रमों के उदाहरण निम्नवत् हैं -

1- अ - - - - - - - अ,
य - भय[2], पय[3], करुणामय[4], हृदय[5], दयउ[6] ।
व - भव[7], नव[8], रव[9], अवध[10], पवर[11] ।

2- अ - - - - - - - आ,
य - दया[12], कया[13], अयानी[14], दयाल[15] ।
व - हँसवा[16], अवास[17], नवाय[18], सवारी[19], कुरवा[20] ।

3- अ - - - - - - - इ,
य - ---

---

1. रा० वि० लं० का० 1867/2. रा० वि० लं० का० 1778/3. रा० वि० बा० का० 2997
4. रा० वि० बा० का० 107/5. रा० वि० बा० का० 256/6. रा० वि० कि० का० 1214
7. रा० वि० लं० का० 1816/8. रा० वि० उ० का० 3026/9. रा० वि० लं० का० 1771
10. रा० वि० अयो० का० 426/11. रा० वि० अयो० का० 465/12. रा० वि० बा० का० 102
13. रा० वि० लं० का० 2049/14. रा० वि० बा० का० 179/15. रा० वि० उ० का० 3249
16. रा० वि० बा० का० 288/17. रा० वि० अयो० का० 430/18. रा० वि० कि० का० 1232
19. रा० वि० बा० का० 1407/20. रा० वि० बा० का० 251/

ब - रवि[1], रामविनोद[2], पवित्र[3] ।

4- अ .... ई .

य - नयी[4], मायामयी[5] ।

ब - नयीनों[6], पदवी[7] ।

5- अ ....ए ऐ .

य - गये[8], नये[9], लिये[10], आये[11], दये[12] ।

ब - प्रवेश[13] ,। हवै[13] ।।।

6- अ ....ओ .

य - पयोधि[14], गयो[15] ।

ब - प्रयोग[16] ।

7- आ ....अ .

य - आय[17], आय[18], हाय[19], गाय[20], पायक[21], उपाय[22]।

ब - भाव[23], पाव[24], नाव[25], भाव[26], पावन[27], लजावत[28]।

---

1. रा० वि० बा० का० 095/2. रा० वि० बा० का० 011/3. रा० वि० अयो० का० 433

4. रा० वि० अयो० का० 607/5. रा० वि० अयो० का० 607/6. रा० वि० अर० का० 913

7. रा० वि० बा० का० 163/8. रा० वि० बा० का० 102/9. रा० वि० अयो० का० 462

10. रा० वि० बा० का० 109/ 11. रा० वि० अयो० का० 439

12. रा० वि० कि० का० 1773/13. ... रा० वि० उ० का० 3451

13. रा० वि० सु० का० 1426/14. रा० वि० बा० का० 163/15. रा० वि० कि० का० 1813

16. रा० वि० बा० का० 9/ 17. रा० वि० बा० का० 096/18. रा० वि० अयो० का० 459

19. रा० वि० अयो० का० 508/20. रा० वि० अर० का० 888/21. रा० वि० बा० का० 125

22. रा० वि० अयो० का० 473/23. रा० वि० बा० का० 18/24. रा० वि० अयो० का० 455

25. रा० वि० अयो० का० 618/26. रा० वि० कि० का० 2344/27. रा० वि० बा० का० 3

28. " " लंका " 2410

8- आ .... आ ,

य - माया[1], काया[2], दाया[3] ।

व - दावा[4] ।

9- आ ....ए ऐ ,

य - आये[5], गाये[6], छाये[7], सुनाये[8], लायेक[9] ।

व - पावै[10], आवै[11], मावै[12], गावै[13] ।

10- इ ....अ ,

य - सिय[14], हिय[15], जियत[16]।

व - करिव[17], राखिव[18], सिव[19], सावन[20]।

11- ई ....अ ,

य - सीय[21], मीय[22]।

व - जीव[23], जीवन[24]।

---

1. रा0 वि0 अयो0 का0 427/2. रा0 वि0 अर0 का0 900/3. रा0 वि0 लं0 का0 2024
4. रा0 वि0 कि0 का0 1201/5. रा0 वि0 अर0 का0 904/6. रा0 वि0 लं0 का0 1780
7. रा0 वि0 बा0 का0 127/8. रा0 वि0 बा0 का0 104/9. रा0 वि0 सु0 का0 1477
10. रा0 वि0 बा0 का0 101/11. रा0 वि0 अर0 का0 879/12. रा0 वि0 सु0 का0 1464
13. रा0 वि0 उ0 का0, 2784/14. रा0 वि0 अयो0 का0 430/15. रा0 वि0 बा0 का0 115
16. रा0 वि0 लं0 का0 2382/17. रा0 वि0 बा0 का0 1/18. रा0 वि0 कि0 का0 1188
19. रा0 वि0 अर0 का0 908/20. रा0 वि0 सु0 का0 1671/21. रा0 वि0 अयो0 का0 467
22. रा0 वि0 अयो0 का0 442/23. रा0 वि0 बा0 का0 098/24. रा0 वि0 अयो0 का0 444

12- इ .... आ,

य - तिया[1], पिया[2], बतिया[3], करिया[4] ।

व - निवात[5], बिवाद[6], बिवान[7], दिवाकर[8] ।

13- ई ....आ,

य - ------

व - ग्रीवा[9] ।

14- इ ....ऊ,

य — पियूका[10]

15- इ ....ऐ,

य - हिये[11], लिये[12], पिये[13], जानिये[14], करिये[15] ।

16- इ ....ओ,

य - बियोगन[16]

व - बिलोग[17] ।

17- उ ....अ,

य - दुय[18] ।

व - भुवन[19], जुवती[20], त्रिभुवन[21], युवती[22], दुव[22(क)]

---

1. रा० वि० अयो० का० 431/2. रा० वि० सु० का० 1501/3. रा० वि० बा० का० 383
4. रा० वि० सु० का० 1640/5. रा० वि० बा० का० 06/6. रा० वि० लं० का० 1796
7. रा० वि० बा० का० 95/8. रा० वि० अयो० का० 466/9. रा० वि० कि० का० 1317
10. रा० वि० लं० का० 1845/11. रा० वि० अयो० का० 433/12. रा० वि० अर० का० 957
13. रा० वि० उ० का० 2810/14. रा० वि० अर० का० 1078/15. रा० वि० उ० का० 2978
16. रा० वि० लं० का० 1977/17. रा० वि० अयो० का० 420/18. रा० वि० उ० का० 2738
19. रा० वि० लं० का० 1851/20. रा० वि० बा० का० 188/21. रा० वि० बा० का० 3
22. रा० वि० बा० का० 198/22. (क) रा० वि० उ० का० 2920

18- उ, ऊ ....आ,

प - अनुसूया[1]। कूप[1] ।।।

प - हुआ[2] ।

19- ए, ऐ ....अ,

प - गैयंद[3]

ब - देव[4], तेय[5], तेयक[6], केवट[7]

20- ए, ऐ .... आ,

ब- तैसा[8], भ्यास[9], भैया[10] ।

21- औ .... अ,

प - छोय[11], होय[12], तोय[13], सोय[14]।

ब - मदोदरी[15], तोवल[16], जोबन[17], सरोवर[18], तोपर[19]।

अर्द्धस्वर "य्" का वितरण निम्न प्रकार है -

क- शब्दादि में - याको[20], याके[21], यहु[21।3।], यह[21।ब।]

---

1. रा०वि०अयो०का०865/2. रा०वि०बा०का०392/3. रा०वि०बा०का०222

[illegible] रा०वि०बा०का०224

4. रा०वि०बा०का०10/5. रा०वि०अयो०का०443/6. रा०वि०कि०का०1175

7. रा०वि०अयो०का०791/8. रा०वि०अर०का०945/9. रा०वि०सु०का०1639

10. रा०वि०बा०का०275/11. रा०वि०अयो०का०433/12. रा०वि०अयो०का०459

13. रा०वि०अयो०का०653/14. रा०वि०सु०का०1454/15. रा०वि०लं०का०1867

16. रा०वि०उ०का०2720/ 17. रा०वि०अयो०का०822/18. रा०वि०अर०का०1155

19. रा०वि०सु०का०1541/20. रा०वि०लं०का०2291/21. रा०वि०लं०का०2405

21।3। रा०वि०लं०का०2647/ 21। ब । रा०वि०बा०का०2673

ख- शब्दान्त में - सुनाय[1], सहाय[2], रिसाय[3], आय[4],
ग - स्वर मध्य में - आया[5], काया[6], दाया[7]
घ - व्यंजन-स्वर मध्य में - स्यार[8], क्य[9], ग्यान[10]

अर्ध-स्वर "व्" का वितरण निम्न प्रकार है -

क- शब्दादि में - वोही[11], वारी[12],

ख- शब्दान्त में - भाव[13], दानव[14], दुराव[15], उपाव[16],
ग - स्वर- मध्य में - दावा[17], बनावै[18], सिखावै[19],
पावो, नावी[19अ]
घ - व्यंजन-स्वर मध्य में - स्वारथ[20], स्वामी[21], स्वाद[22],
स्वान[23],

दोनों अर्ध-स्वरों के मध्य व्यतिरेकी स्थिति -

य- भाय[24], सिय[26], पायक[28], पाँयन[30], माय[32]

व - भाव[25], सिव[27], पावक[29], पावन[31], माव[33]

---

1. रा०वि०वि०का०1296/2. रा०वि०वि०का०1388/3. रा०वि०लं०का०2349
4. रा०वि०लं०का०2225/5. रा०वि०लं०का०2240/6. रा०वि०अयो०का०721
7. रा०वि०लं०का०2024/8. रा०वि०बा०का०111/9. रा०वि०बा०का०134
10. रा०वि०उ०का०3093/11. रा०वि०सु०का०1575/12. रा०वि०उ०का०3073
13. रा०वि०अर०का०987/14. रा०वि०लं०का०2038/15. रा०वि०वि०का०1203
16. रा०वि०सु०का०1483/17. रा०वि०लं०का०2581/18. रा०वि०बा०का०101
19. रा०वि०बा०का०101/19 अ. रा०वि०बा०का०30
20. रा०वि०अयो०का०739/21. रा०वि०लं०का०2220/22. रा०वि०उ०का०2860
23. रा०वि०अयो०का०558/24. रा०वि०सु०का०1604/25. रा०वि०सु०का०1424
26. रा०वि०बा०का०151/27. रा०वि०बा०का०141/28. रा०वि०बा०का०125
29. रा०वि०सु०का०1424/30. रा०वि०लं०का०1821/31. रा०कि०बा०का०36
32. रा०वि०सु०का०1437/33. रा०वि०अयो०का०618

इस प्रकार आलोच्य "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में "ढ़" और "ड़" व्यतिरेकी स्थिति में स्पष्ट उपलब्ध होने के फल-स्वरूप ध्वनिग्रामीय स्तर पर हैं, अतः इन्हें ध्वनिग्राम मान लेना स्वाभाविक है।

2.4 स्वर-संयोग-

"रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में स्वर-संयोग प्रचुरता से प्राप्त होता है। दो स्वर-संयोगों की प्रधानता है। तीन स्वरों के संयोग अपेक्षाकृत कम है। पदान्त में स्वर-संयोग अधिक प्राप्त होता है। स्वर-संयोगों का व्यवस्थित क्रम निम्न प्रकार से है -

दो स्वरों का संयोग -

अ - अ - अ - इस प्रकार का संयोग अत्यल्प प्राप्त है -
प्रश्नरोगी[1]।

अ - आ - दतआनन[2], अआ[3], बरआता[4]।

अ - इ - करइ[5], लिखइ[6], भइ[7], रचइ[8]।

अ - ई - प्रचुरता से इस प्रकार का स्वर संयोग प्राप्त होता है -
केकई[9], दई[10], चढ़ई[11], होमई[12], भई[13], गई[14], भायई[15], गायई[16]।

अ - ई - अत्यल्प मात्रा में उपलब्ध है — भई[17]।

---

1. रा० वि० कि० का० 1168/2. रा० वि० लं० का० 1882/3. रा० वि० लं० का० 2173
4. रा० वि० उ० का० 2801/5. रा० वि० बा० का० 59/6. रा० वि० बा० का० 361
7. रा० वि० अयो० का० 493/8. रा० वि० अयो० का० 823/9. रा० वि० अयो० का० 526
10. रा० वि० बा० का० 339/11. रा० वि० अयो० का० 475/12. रा० वि० अर० का० 939
13. रा० वि० कि० का० 1190/14. रा० वि० सु० का० 1414/15. रा० वि० लं० का० 1778
16. रा० वि० उ० का० 2722/17. रा० वि० बा० का० 269

अ- उ - इस प्रकार के स्वर-संयोग अधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं -

म्याउ[1], बैठउ[2], अउ[3], रपउ[4], रहउ[5], कहउ[6], लेखउ[7]।

अ - उँ - अनुनासिक स्वर-संयोग के इस प्रकार के उदाहरण पर्याप्त उपलब्ध होते हैं -

सुनउँ[8], आनिहउँ[9], कहिहउँ[10], लउँठउँ[11], पोतउँ[12], दिखाइउँ[13]।

अ - ऊँ - टाऊँ[14], पठऊँ[15], मैयारऊँ[16]।

अ - ए - भाये[17], नये[18], पठये[19]।

अ औ - अगाऔटा[20]।

आ- आ-अ - अत्यल्प मात्रा में उपलब्ध हैं - कपाआति[21]।

आ इ - उठाइ[22]।

आ ई - इस कोटि के स्वर-संयोग बहुलता से प्राप्त होते हैं; यथा- आई[22अ]।

---

1. रा० वि०भा०का०12/2. रा० वि०भा०का०29/3. रा० वि०अपो०का०522
4. रा० वि०अपो०का०826/5. रा० वि०अर०का०930/6. रा० वि०कि०का०1384
7. रा० वि०सु०का०1495/8. रा० वि०अपो०का०502/9. रा० वि०अपो०का०533
10. रा० वि०कि०का०1187/11. रा० वि०लं०का०2150/12. रा० वि०सु०का०1490
13. रा० वि०लं०का०1914/14. रा० वि०उ०का०2945/15. रा० वि०लं०का०2453
16. रा० वि०उ०का०2945/17. रा० वि०भा०का०49/18. रा० वि०भा०का०109
19. रा० वि०भा०का०282/20. रा० वि०उ०का०2760/21. रा० वि०लं०का०2049
22. रा० वि०लं०का०2368/22अ. रा० वि०अर०का०984/

लाई[1], पाई[2], बजाई[3], जटाई[4], ढाई[5], प्रभुताई[6]
मचलाई[7], सुनाई[8]।

आ उ - चाउ[9], बाउ[10], पाउ[11], कुभाउ[12], पाउ[13], आउ[14]।

आउं - चाउं[15], पाउं[16]।

आऊं - आऊं[15(क)], पाऊं[16(क)], लाऊं[17], गाऊं[18]।

आ ए - अत्यल्प मात्रा में इस प्रकार के स्वर-संयोग उपलब्ध होते हैं- आये[19], न्याये[20]।

इ - अ - इस प्रकार के स्वर-संयोग स्वल्प हैं - पिअ[21], हिअ[22], प्रिय[23], हरिअहिं[24], त्रिअ[25]।

---

1. रा० वि० कि० का० 1324/ 2. रा० वि० उ० का० 3342/ 3. रा० वि० बा० का० 156
4. रा० वि० अ० का० 930/ 5. रा० वि० कि० का० 1255/ 6. रा० वि० सु० का० 1418
7. रा० वि० लं० का० 1925/ 8. रा० वि० उ० का० 2801/ 9. रा० वि० बा० का० 206
10. रा० वि० अयो० का० 521/ 11. रा० वि० अयो० का० 704/ 12. रा० वि० उ० का० 2799
13. रा० वि० कि० का० 1184/ 14. रा० वि० कि० का० 1275/ 15. रा० वि० कि० का० 1377
15. (क) रा० वि० अयो० का० 551/ 16. रा० वि० उ० का० 3595
16. (क) रा० वि० अ० का० 952/ 17. रा० वि० उ० का० 3369/
18. रा० वि० उ० का० 3369/ 19. रा० वि० बा० का० 177/ 20. रा० वि० लं० का० 1780
21. रा० वि० बा० का० 144/ 22. रा० वि० बा० का० 147/ 23. रा० वि० अयो० का० 517
24. रा० वि० सु० का० 1418/ 25. रा० वि० लं० का० 1853

इ आ - बिआहन[1], पिआ[2], बिआय - पिआये[3]।

इ ई - पिई[4], अहिईस[5], मुनिईस[6], कपिईस[7]।

इ उ = चारिउ[8], बिउहार[9], बिउम[10]।

इँ उ - पिँउनार[11]।

इ ए - लिये[12], जागिये[13], कीजिये[14]।

इ ऐ - पर्याप्त मात्रा में इस प्रकार के स्वर-संयोग प्राप्त होते हैं -
पाइऐ[15], त्यागिऐ[16], दीजिऐ[17], करिऐ[18]।

ई - ई अ - अत्यल्प मात्रा में उपलब्ध हैं - सीअ[19]।

उ - उ अ - सुअ[20], भुअंग[21], भुअंगन[22], भुअंगमई[23]।
उ आ - इस प्रकार के स्वर-संयोग स्वल्प हैं - सुआय[24], सुआन[25]।
उ इ - इस प्रकार के स्वर-संयोग नगण्य हैं - दुइ[26]।
उ ई - इस प्रकार के स्वर-संयोग अत्यल्प हैं - दुई[27], भागुईत[28]।

---

1. रा० पि० बा० का० 226/ 2. रा० पि० सु० का० 91516/ 3. रा० पि० लं० का० 2108
4. रा० पि० अयो० का० 616/ 5. रा० पि० लं० का० 1784/ 6. रा० पि० उ० का० 3008
7. रा० पि० सु० का० 1695/ 8. रा० पि० बा० का० 157/ 9. रा० पि० बा० का० 269
10. रा० पि० अयो० का० 713/ 11. रा० पि० बा० का० 282/ 13. रा० पि० बा० का० 164
13. रा० पि० अयो० का० 684/ 14. रा० पि० उ० का० 3485/ 15. रा० पि० बा० का० 1400
16. रा० पि० अयो० का० 515/ 17. रा० पि० लं० का० 2257/ 18. रा० पि० उ० का० 2778
19. रा० पि० बा० का० 345/ 20. रा० पि० अयो० का० 562/ 21. रा० पि० उ० का० 3330
22. रा० पि० अर० का० 1574/ 23. रा० पि० लं० का० 2064/ 24. रा० पि० बा० का० 79
25. रा० पि० लं० का० 2580/ 26. रा० पि० बा० का० 385/ 27. रा० पि० अर० का० 1117
28. रा० पि० सु० का० 1694/

ऐ - ऐ आ - इस प्रकार के स्वर-संयोग स्वल्प मात्रा में हैं -

मैआनक[1] , पैआन[2]।

ऐ इ - तमैइउ[3] , मिटैइउ[4] ।

ओ - ओ आ - नगण्य स्वर-संयोग उपलब्ध हैं ; यथा- सोआय[5]।

ओ इ - सोइ[6] ।

औ - औई - दानौई[7] अत्यन्त नगण्य प्रयोग हैं ।

तीन स्वरों का संयोग -

"रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में तीन स्वरों का संयोग प्राप्त होता है । तुलना की दृष्टि से दो स्वर-संयोग का प्रयोग प्रचुरता से किया गया है । तीन स्वर-संयोग के उदाहरण निम्नवत् है -

अ ए उ - भयेउ[8] , लयेउ[9] , दयेउ[10],

आ अ उ- छायउ[11] , कुलायउ[12],

आ इ आ- छाइया[13] , भाइया[14], आइया[15],

आ इ ए - पाइये[16] ,

आ इ ऐ - छाइकै[17], लाइयै[18]

आ उँ अ - नाउँय[19],

आ ए उ - पायेउ[20] आयेउ[21], पठायेउ[22],

आ ए उँ - पायेउँ[23], गायेउँ[24],

---

1. रा० वि० बा० का० 370/2. रा० वि० अयो० का० 688/3. रा० वि० उ० का० 3366

4. रा० वि० उ० का० 3366/5. रा० वि० बा० का० 55/6. रा० वि० अर० का० 1132

7. रा० वि० लं० का० 2382/8. रा० वि० लं० का० 1786/9. रा० वि० बा० का० 24

10. रा० वि० कि० का० 1179/11. रा० वि० अर० का० 884/12. रा० वि० उ० का० 3472

13. रा० वि० अयो० का० 470/14. रा० वि० उ० का० 3436/15. रा० वि० उ० का० 3464

16. रा० वि० अर० का० 997/17. रा० वि० अर० का० 1006/18. रा० वि० अयो० का० 531

19. रा० वि० उ० का० 3508/20. रा० वि० उ० का० 3499/21. रा० वि० अर० का० 928

22. रा० वि० बा० का० 173/23. रा० वि० उ० का० 3501/24. रा० वि० उ० का० 3501

उ ए उ - द्युउ[1] ।

2.5 व्यंजन-संयोग -

आलोच्य ग्रन्थ "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में संस्कृत के शब्दों की प्रचुर प्रयुक्त शब्दावली में व्यंजन-संयोग पर्याप्त उपलब्ध होते हैं । त्र्य-व्यंजन संयोग विशुद्ध तत्सम शब्दों में प्राप्त होते हैं । द्वि-व्यंजनात्मक-संयोगों का प्राचुर्य है । अन्त्य व्यंजन संयोग अत्यल्प हैं । मध्य-स्थानीय व्यंजन-संयोग सर्वाधिक हैं ।

2.5.1 द्वि-व्यंजनात्मक संयोग -

दो व्यंजनों का संयोग पद के आदि, मध्य तथा अन्त तीनों स्थितियों में प्राप्त होता है ।

अ- आदि स्थानीय व्यंजन-संयोग -

आदि स्थानीय व्यंजन संयोग उदाहरणार्थ -

त् + य = त्य - त्याग[2], त्यागी[3]

द + व = द्व - द्वै[4], द्वार[5] द्वादश[6], द्वारे[7], द्विजराय[8]

स् + य = स्य - स्याम[9], स्याल[10]

व् + य = व्य - व्याल[11], व्याकुल[12], व्याह[13], व्यापा[14], व्योम[15]

---

1. रा० वि० बा० का० 147/2. रा० वि० उ० का० 2898/3. रा० वि० कि० का० 1295
4. रा० वि० बा० का० 38/5. रा० वि० लं० का० 1835/6. रा० वि० लं० का० 2372
7. रा० वि० बा० का० 157/8. रा० वि० सु० का० 1755/9. रा० वि० सु० का० 1449
10. रा० वि० लं० का० 2430/11. रा० वि० कि० का० 1245/12. रा० वि० लं० का० 1974
13. रा० वि० उ० का० 2973/14. रा० वि० लं० का० 2127/15. रा० वि० बा० का० 51

प्रेरे[1], प्रलय[2], प्राणी[3], प्राण[4], प्रजा[5]
प्रतिहार[6], प्रतिउत्तर[7], प्रतिज्ञा[8], प्रनाली[9],
प्रणाम[10], प्रजा[11], प्रतिज्ञा[12], प्रतिबोधा[13],
प्रिया[13] । अ ।

ब्+र = ब्र- ब्रह्म[14], ब्रत[15], ब्रज[16], ब्रह्मा[17], ब्राम्न[18],
ब्रह्मरेखा[19], ब्रह्मलोक[20], ब्रह्माण्ड[21],
भ्+र=भ्र - भ्रमन[22], भ्रम[23], भ्रुति[24], भ्राप[25], भ्रान्ति[26], भ्रमित[27],
भ्रमित[28], भ्रुवा[29], भ्रै[30], भ्रवा[31], भ्रीपति[32], भ्रू[33],
म्+र = म्र - म्रय[34], म्रटा[35], म्रन[36], म्रान[37], म्रात[38], म्रिया[39],
म्रमा[40], म्राह[41], म्रमना[42], म्रिगुन[43],

1. र० वि०उ०क०2938/2. र० वि०उ०क०3071/3. र० वि०उ०क०3405
4. र० वि०अपो०क०775/5. र० वि०बु०क०1425/6. र० वि०बु०क०1439
7. र० वि०उ०क०2961/8. र० वि०उ०क०3161/9. र० वि०भ०क०107
10. र० वि०भ०क०100/11. र० वि०अपो०क०433/12. र० वि०भ०क०404
13. र० वि०गौ०क०1814/13।3।, र० वि०वि०क०1233
14. र० वि०गौ०क०1845/15. र० वि०उ०क०2784/16. र० वि०अ०क०962
17. र० वि०भ०क०331/18. र० वि०भ०क०204/19. र० वि०अपो०क०613
20. र० वि०भ०क०168/21. र० वि०गौ०क०2464/22. र० वि०गौ०क०1779
23. र० वि०उ०क०2988/24. र० वि०उ०क०3415/25. र० वि०भ०क०145
26. र० वि०गौ०क०2064/27. र० वि०गौ०क०1810/28. र० वि०गौ०क०2098
29. र० वि०भ०क०374/30. र० वि०गौ०क०2337/31. र० वि०गौ०क०2648
32. र० वि०भ०क०74/33. र० वि० [illegible] भ०क०293/34. र० वि०अपो०क०744
35. र० वि०अपो०क०627/36. र० वि०गौ०क०1771/37. अ२०क०903
38. र० वि०बु०क०1413/39. र० वि०वि०क०1193/40. र० वि०उ०क०2867
41. र० वि०बु०क०1434/42. र० वि०अपो०क०714/43. र० वि०भ०क०89

श् + र = शृ - शृंग[1], शृगाल[2],
ह् + र = हृ - हृदय[3]

उपर्युक्त विश्लेषण से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि "र" के योग से व्यंजन-संयोग अधिक हुआ है ।

ख - मध्य स्थानीय व्यंजन-संयोग -

आलोच्य ग्रन्थ "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में मध्य स्थानीय संयुक्त -व्यंजनों का बाहुल्य प्राप्त होता है । इनके अन्तर्गत व्यंजन क्रम -

1- वर्गीय नासिक्य + स्पर्श व्यंजन
2- स्पर्श + अर्द्ध स्वर
3- संघर्षी + स्पर्श
4- स्पर्श + लुण्ठित

इनके अन्तर्गत सर्वाधिक संयोग स्पर्श + अर्द्ध स्वर (य) तथा लुण्ठित (र) + अन्य व्यंजन के रूप में प्राप्त होते हैं -

ह + म = ह्म - ब्रह्म[4], ब्रह्मण्ड[5], ब्राह्मण[6], ब्रह्मा[7]
व + य = व्य - दिव्य[8], द्रव्य[9]
ल + य = ल्य - कल्याण[10], कौशिल्या[11],
ल + प = ल्प - कल्प[12], विकल्प[13], अकल्प[14], कल्पतरु[15], कल्पलता[16],

---

1. रा०वि०बा०का०050/2. रा०वि०लं०का०2483/3. रा०वि०बा०का०0256
4. रा०वि०उ०का०2776/5. रा०वि०लं०का०2487/6. रा०वि०उ०का०3321
7. रा०वि०उ०का०3287/8. रा०वि०सु०का०1422/9. रा०वि०उ०का०2897
10. रा०वि०बा०का०298/11. रा०वि०अयो०का०547/12. रा०वि०उ०का०2795
13. रा०वि०लं०का०1990/14. रा०वि०लं०का०1990/15. रा०वि०बा०का०206
16. रा०वि०अयो०का०505/

<u>त वर्ग</u> - तंत[1] , पंथ[2], तदेस[3] , बंदर[4], बंधु[5] , अंत[6], आदि ।

<u>प वर्ग</u> - कंप[7] , लंपट[8] , अंबुज[9] , जंबुक[10], कंबु[11], दंभ[12] आदि ।

<u>द्वित्व - व्यंजन -</u>

द्वि-व्यंजनात्मक संयोग के अन्तर्गत द्वित्व - व्यंजन भी परिगणित किए जाते हैं । आलोच्य-ग्रन्थ "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा के अन्तर्गत इनका प्रयोग यत्र-तत्र-सर्वत्र स्वल्पांश में कुछ होता है । क , ग , ज , द , न , प , भ , व , य , ल के द्वित्व का प्रयुक्त किये गए हैं । उदाहरणार्थ -

क + क (क्क) - धिक्कार[13]

ग + ग (ग्ग) - दिग्गज[14]

ज + ज (ज्ज) - सज्जन[15], लज्जन[16], बिज्ज[17], निबिज्ज[18], अलज्ज[19],

द + द (द्द) - बद्दिप[20], तद्दिप[21],

---

1. रा० वि० कि० का० 1284/2. रा० वि० बा० का० 394/3. रा० वि० उ० का० 2747
4. रा० वि० सु० का० 1547/5. रा० वि० अर० का० 1027/6. रा० वि० अयो० का० 686
7. रा० वि० सु० का० 1657/8. रा० वि० सु० का० 1697/9. रा० वि० अयो० का० 627
10. रा० वि० लं० का० 2064/11. रा० वि० अर० का० 1121/12. रा० वि० उ० का० 2914
13. रा० वि० लं० का० 2431/14. रा० वि० बा० का० 191/15. रा० वि० बा० का० 236
16. रा० वि० अयो० का० 639/17. रा० वि० अर० का० 1008/18. रा० वि० लं० का० 1812
19. रा० वि० लं० का० 1812/20. रा० वि० लं० का० 2228/21. रा० वि० उ० का० 3340

न् + न् । न्न । - अन्न[1] , धान्न[2] , पुन्न[3] , प्रसन्न[4] ,
तुन्न[5] , किन्नर[6] , बन्नर[7]

त् + त् । त्त । - रच्छुत्तम[8] , उत्तर[9] , तत्त[10] , चित्त[11] ,
अनित्त[12] , तत्त[13] , उतत्त[14] , तत्तता[15] ,
फनमत्त[16] , बिचत्त[17] , तारत्तिक[18] , चित्त[19] ,
उत्तिम[20] , भुत्ते[21] ,

प् + प् । प्प । - छप्पन[22] ,

ब् + ब् । ब्ब । - छब्बिस[23] ,

म् + म् । म्म । - भुम्म[24] ,

द् + द् । द्द । - अद्दु[25] ,

2.5.2 त्रि - व्यंजनात्मक -संयोग -

आलोच्य महाकाव्य "रामविनोद" की भाषा में त्रि-व्यंजनात्मक-संयोग पद मध्य में ही अत्यल्प मात्रा में उपलब्ध होते हैं ।

---

1. रा० वि० उ०का०3398/2. रा० वि०बा०का०41/3. रा० वि०बा०का०151
4. रा० वि०लं०का०2329/5. रा० वि०उ०का०2933/6. रा० वि०उ०का०2803
7. रा० वि०लं०का०1864/8. रा० वि०अयो०का०704/9. रा० वि०लं०का०1799
10. रा० वि०लं०का०1851/11. रा० वि०अयो०का०556/12. रा० वि०अयो०का०556
13. रा० वि०अयो०का०512/14. रा० वि०अयो०का०513/15. रा० वि०उ०का०2889
16. रा० वि०लं०का०1798/17. रा० वि०लं०का०798/18. रा० वि०लं०का०2379
19. रा० वि०उ०का०2807/20. रा० वि०उ०का०2924/21. रा० वि०सु०का०1488
22. रा० वि०बा०का०134/23. रा० वि०लं०का०1777/24. रा० वि०बा०का०116
25. रा० वि०बा०का०227/

प्राप्त अनिवार्यतः स्वल्प विराम से उत्पन्न इकाइयाँ प्रत्येक भाषा की स्वयं की विशेषता से युक्त होता हैं। अक्षर-वितरण मूलतः श्वास प्रक्रिया पर आधारित होता है। आलोच्य ग्रन्थ "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में लघुत्तम एवं बृहत्तम अक्षर-रचना निम्नांकित प्रकार व्यवस्थित की गई है।

यथा -

[संकेत - अ = स्वर , क = व्यंजन]

1- अ - केवल एक ही स्वर अक्षर-रूप में प्राप्त होता है ; यथा -
भाई[1], गयो[2], लये[3], कये[4], गये[5], भये[6]

2- अ + क - एक स्वर और एक व्यंजन के योग से अक्षर निर्माण होता है ; यथा -
अन्न[7], अन्तु[8], अम[9], ईस[10], आन[11]

3- क + अ - एक व्यंजन तथा एक स्वर के योग से अक्षर निर्माण होता है ; यथा -
दोऊ[12], छाये[13], पाई[14], ताई[15]

4- क + अ + क - एक व्यंजन, एक स्वर तथा एक व्यंजन के योग से शब्द निर्माण होता है ; यथा -
रांजन[16] [रन्ज्], मंजन[17] [मन्ज्], रूंड[18] [रुण्ड्],

---

1. रा०वि०बा०का०269/2. रा०वि०बा०का०273/3. रा०वि०अ०का०1058
4. रा०वि०सु०का०1581/5. रा०वि०लं०का०2227/6. रा०वि०उ०का०3126
7. रा०वि०उ०का०3398/8. रा०वि०उ०का०2750/9. रा०वि०लं०का०2431
10. रा०वि०बा०का०02/11. रा०वि०बा०का०24/12. रा०वि०बा०का०105
13. रा०वि०बा०का०127/14. रा०वि०बा०का०156/15. रा०वि०अयो०का०640
16. रा०वि०कि०का०1293/17. रा०वि०अयो०का०809/18. रा०वि०लं०का०2594

2- द्व्यक्षरी शब्द -

(1) अ, अ. – आई[1], आये[2] अत्यल्प संख्या है।

(2) अ. क. अ. – अटा[3], उर[4], अति[5], अरे[6], अनी[7],

(3) क क अ. क अ. – इस कोटि के शब्द अधिक नहीं उपलब्ध होते हैं; यथा – त्याग[8], क्रूर[9], क्षुत[10], दृग[11], क्यारी[12] आदि।

(4) क क अ. अ. – इस श्रेणी के शब्दों की संख्या सीमित है; यथा – स्याई[13], प्रिउ[14]

(5) क अ. अ. – इस श्रेणी के शब्दों की संख्या स्वल्प है; यथा – लेई[15], दोउ[16], ठाई[17], कोउ[18], आदि।

(6) क अ. क अ. – इस श्रेणी के शब्दों की संख्या पर्याप्त

---

1. रा० वि० अयो० का० 640/2. रा० वि० बा० का० 104/3. रा० वि० उ० का० 3037
4. रा० वि० बा० का० 297/5. रा० वि० अर० का० 897/6. रा० वि० लं० का० 1980
7. रा० वि० लं० का० 2239/8. रा० वि० उ० का० 3346/9. रा० वि० उ० का० 3487
10. रा० वि० लं० का० 1855/11. रा० वि० उ० का० 2717/12. रा० वि० कि० का० 1177
13. रा० वि० लं० का० 2641/14. रा० वि० अयो० का० 517/15. रा० वि० अयो० का० 512
16. रा० वि० बा० का० 169/17. रा० वि० कि० का० 1255/18. रा० वि० उ० का० 2940

मात्रा में तुल्यता होती है ; यथा -

राम[1], पाय[2] देह[3], देंव[4], दूब[5], बेद,[6]

नाम[7], नेह[8], दास[9], गुन[10], पाप[11],

तेज[12], ताप[13], तुला[14]।

17: अअक० अअ० - इस श्रेणी के शब्द कम तुल्य हैं ; यथा -

तुंड[15], ठाँड[16], मेंड[17], ढेंड़[18] आदि।

3 - त्रयक्षरी शब्द -

111 अ० क अ० क अ० - इस कोटि के शब्द पर्याप्त हैं ; जैसे -

असीम[19], आयसु[20], अकाल[21],

उदार[22], आसन[23], अगाधा[24], उदास[25],

अपाय[26], अहीस[27], अबला[28], अदेस[29]

आदि।

---

1. रा०वि०बा०का०122/2. रा०वि०बा०का०61/3. रा०वि०अयो०का०519

4. रा०वि०अयो०का०605/5. रा०वि०अर०का०895/6. रा०वि०अर०का०929

7. रा०वि०कि०का०1178/8. रा०वि०कि०का०1294/9. रा०वि०सु०का०1462

10. रा०वि०सु०का०1628/11. रा०वि०लं०का०1890/12. रा०वि०लं०का०2165

13. रा०वि०उ०का०3004/14. रा०वि० उ०का०3510/15. रा०वि०अर०का०1089

16. रा०वि० अर०का०1129/17. रा०वि०अयो०का०441/18. रा०वि०लं०का०2594

19. रा०वि०बा०का०247/20. रा०वि०बा०का०364/21. रा०वि०बा०का०390

22. रा०वि०अयो०का०713/23. रा०वि०अर०का०1137/24. रा०वि०कि०का०1218

25. रा०वि०सु०का०1544/26. रा०वि०उ०का०2907/27. रा०वि०उ०का०2983

28. रा०वि०लं०का०1833/29. रा०वि०लं०का०1780/

।2। क अ. क अ. क अ. – इस कोटि के शब्द पर्याप्त मुल्भ हैं, जैसे – पुरान[1] , जीवन[2] , भागिनो[3] , दिनैया[4], भायन[5] , बयन[6] , लदन[7], परन[8] , तमाल[9] , मुक्त[10], कुपाल[11], आदि ।

।3। क अ. क अ . अ – इस कोटि के शब्द पर्याप्त हैं, जैसे – नयेउ[12], परेउ[13], दियेउ[14], तरेउ[15], रचेउ[16], छायेउ[17], भारेउ[18], गुनेउ[19], लोगाई[20], हियेउ[21] , बढ़ेउ[22] आदि ।

।4। क अ. अ. क अ. – इस कोटि के शब्द अत्यल्प हैं ; जैसे – बिउम[23], पिआल[24], पैआन[25], पाइये[26], हाइये[27], माउंम[28], कहु[29]

---

1. रा० वि०भा०को०8/2. रा० वि०भा०को०196/3. रा० वि०अपो०को०520
4. रा० वि०अपो०को०689/5. रा० वि०अर०को०1097/6. रा० वि० कि०को०1209
7. रा० वि०मु०को०1440/8. रा० वि०मु०को०1606/9. रा० वि०मं०को०1800
10. रा० वि०मं०को०2157/11. रा० वि०उ०को०3337/12. रा० वि०भा०को०272
13. रा० वि०अपो०को०592/14. रा० वि०अपो०को०459/15. रा० वि०अर०को०1117
16. रा० वि०अर०को०1077/17. रा० वि० कि०को०1358/18. रा० वि०मु०को०1484
19. रा० वि०मु०को०1478/20. रा० वि०मं०को०1946/21. रा० वि०मं०को०1798
22. रा० वि०उ०को०3321/23. रा० वि० कि०को०1374/24. रा० वि०भा०को०116
25. रा० वि०अपो०को०688/26. रा० वि०अपो०को०768/27. रा० वि०अर०को०1006
28. रा० वि०उ०को०3508/29. रा० वि०भा०को०354

15। अ क. क अ. क अ. – इस कोटि के शब्दों की मात्रा नगण्य तुल्य है ; जैसे –
अंचल[1], अंगुलि[2], अंगन[3], अंतर[4]
अंकुश[5], अंगारि[6], अंजन[7], अंगद[8], अंगुल[9] ।

16। क अ क. क अ. क अ. – इस कोटि के व्यतिक्रम के शब्द तुल्य हैं ; जैसे–
शंकर[10], मंडल[11], कंपन[12], संकट[13], दंडक[14],
कंटान[15], रंजन[16], भंजन[17], चंदन[18], संभव[19],
मंगल[20], संतत[21], संगत[22] आदि ।

17। अ. क अ क. क अ. – इस कोटि के शब्द स्वल्प तुल्य हैं ; जैसे –
अनंत[23], अतंक[24], अनंग[25], अखंड[26], अखंड[27],
अचिंत[28], उतंग[29], अदंभ[30], अपंग[31], अशांत[32] ।

---

1. रा० वि० भा० का० 160/2. रा० वि० भा० का० 88/3. रा० वि० भा० का० 185
4. रा० वि० अयो० का० 806/5. रा० वि० अयो० का० 627/6. रा० वि० अर० का० 958
7. रा० वि० यु० का० 1615/8. रा० वि० यु० का० 1616/9. रा० वि० उ० का० 3271
10. रा० वि० भा० का० 188/11. रा० वि० भा० का० 279/12. रा० वि० अयो० का० 448
13. रा० वि० अयो० का० 814/14. रा० वि० अर० का० 885/15. रा० वि० अर० का० 893
16. रा० वि० कि० का० 1354/17. रा० वि० कि० का० 1379/18. रा० वि० अयो० का० 433
19. रा० वि० लं० का० 1913/20. रा० वि० लं० का० 2212/21. रा० वि० उ० का० 2804
22. रा० वि० उ० का० 2909/23. रा० वि० भा० का० 351/24. रा० वि० भा० का० 393
25. रा० वि० अयो० का० 626/26. रा० वि० अर० का० 979/27. रा० वि० अर० का० 1008
28. रा० वि० यु० का० 1587/29. रा० वि० यु० का० 1423/30. रा० वि० लं० का० 1852
31. रा० वि० लं० का० 1842/32. रा० वि० उ० का० 2891

(8) क क अ० क अ क० क अ० - इस कोटि के शब्द अत्यल्प हैं; जैसे - प्रतंग[1], पर्यंक[2], मृदंग[3], प्रतीत[3अ]

(9) क अ० क अ क० क अ० - इस कोटि के शब्द सामान्यतः हैं; जैसे- मयंक[4], तुरंग[5], सुपंथा[6], तरंग[7], मतंग[8], कुरंग[9], कोदंड[10], विहंग[11], तुरंत[12], सतंग[13], सुगंधा[14], मयंदगयंद[15], सारंग[16], कलंक[17].

4. चतुरक्षरी शब्द -

(1) अ० क अ० क अ० क अ० - इस वर्ग के शब्द पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं ; उदाहरणार्थ अवतर[18], उपदेस[19], अपकार[20], अनुराग[21], अभिमान[22], अपनीत[23], अपराध[24], उपराग[25], अवधूत[26], अपकार[27], अवधान[28], उपचार[29].

---

1. रा० चि० अर० का० 877/2. रा० चि० अयो० का० 802/3. रा० चि० बा० का० 302
(3अ) रा० चि० कि० का० 1382
4. रा० चि० बा० का० 91/5. रा० चि० बा० का० 227/6. रा० चि० बा० का० 387
7. रा० चि० अयो० का० 430/8. रा० चि० अयो० का० 562/9. रा० चि० अयो० का० 628
10. रा० चि० अर० का० 880/11. रा० चि० अर० का० 935/12. रा० चि० कि० का० 1262
13. रा० चि० कि० का० 1387/14. रा० चि० सु० का० 1448/15. रा० चि० लं० का० 1871
16. रा० चि० उ० का० 2789/17. रा० चि० उ० का० 2993/18. रा० चि० बा० का० 403
19. रा० चि० अयो० का० 681/20. रा० चि० अयो० का० 806/21. रा० चि० अर० का० 869
22. रा० चि० अर० का० 997/23. रा० चि० कि० का० 1374/24. रा० चि० सु० का० 1496
25. रा० चि० सु० का० 1565/26. रा० चि० लं० का० 2124/27. रा० चि० लं० का० 2514
28. रा० चि० बा० का० 07 /29. रा० चि० उ० का० 3040

(2) क अ. अ. क अ. क अ. -	इस वर्ग के शब्द अत्यल्प हैं; उदाहरणार्थ - बिहार[1], भयानक[2], बिनार[2](3);
(3) अ. क अ. अ. क अ. -	इस वर्ग के शब्द अत्यल्प मात्रा में प्रयुक्त हुए हैं; उदाहरणार्थ - उजियारी[3], अँधियारी[4], उपावन[5],
(4) क अ. क अ. क अ. क अ. -	इस वर्ग के शब्दों की संख्या सर्वत्र प्रचुरता से मिलता है; उदाहरणार्थ - जगदीश[6], पुलकित[7], मनोरथ[8], मनोहर[9], विलोचन[10], निशाचर[11], रघुनाथ[12], रजनीश[13], हनुमान[14], सहोदर[15], दिवाकर[16], समाचार[17], सनातन[18],
(5) क अ क. क अ. क अ. क अ. -	इस कोटि के शब्द अत्यल्प हैं; उदाहरणार्थ- हँसपुरी[19], मँडोवर[20], बंदीजन[21]

---

1. रा० वि० बा० का० 314/2. रा० वि० बा० का० 370/ 2. (3) रा० वि० बा० का० 282
3. रा० वि० बा० का० 67/4. रा० वि० बा० का० 371/5. रा० वि० लं० का० 2492
6. रा० वि० बा० का० 15/7. रा० वि० बा० का० 39/8. रा० वि० बा० का० 360
9. रा० वि० अयो० का० 626/10. रा० वि० अर० का० 989/11. रा० वि० अर० का० 1128
12. रा० वि० कि० का० 1176/13. रा० वि० सु० का० 1470/14. रा० वि० सु० का० 1566
15. रा० वि० लं० का० 1830/16. रा० वि० लं० का० 1865/17. रा० वि० उ० का० 2739
18. रा० वि० उ० का० 2789/19. रा० वि० बा० का० 7/20. रा० वि० लं० का० 1814
21. रा० वि० बा० का० 254

16। क अ. क अ क. क अ. क अ. – इस वर्ग के शब्द सामान्यतः सुलभ हैं; उदाहरणार्थ-
पुरंदर[1], निरंजन[2], कलंकित[3], किंकर[4], तिलांजलि[5], तरंगन[6], तनीतन[7].

17। क अ. क अ. क अ क. क अ. – इस वर्ग के शब्द स्वाभाविक रूप से उपलब्ध हैं; उदाहरणार्थ -
हनुमंत[8], सतानंद[9], तरभंग[10], जामवंत[11], भगवंत[12], निरतंक[13], मालवंत[14], परजंक[15], गुनवंत[16].

18। अ. क अ क. क अ. क अ. – इस वर्ग के शब्द अत्यल्प प्राप्त होते हैं; उदाहरणार्थ -
अनंदित[17], अनंगन[18]

19। क क अ. क अ. क अ. क अ. – इस वर्ग के शब्द प्रायः प्राप्त होते हैं; उदाहरणार्थ-
प्रभाकर[19], प्रलोकन[20], प्रतापन[21]

---

1. रा० वि० बा० का० 41/2. रा० वि० बा० का० 44/3. रा० वि० अयो० का० 485
4. रा० वि० लं० का० 2274/5. रा० वि० लं० का० 2614/6. रा० वि० उ० का० 2720
7. रा० वि० उ० का० 2854/8. रा० वि० बा० का० 12/9. रा० वि० बा० का० 282
10. रा० वि० अर० का० 903/11. रा० वि० कि० कि० का० 1320/12. रा० वि० कि० का० 1325
13. रा० वि० लं० का० 1828/14. रा० वि० लं० का० 2062/15. रा० वि० लं० का० 2590
16. रा० वि० उ० का० 2781/17. रा० वि० अयो० का० 749/18. रा० वि० उ० का० 3389
19. रा० वि० बा० का० 42/20. रा० वि० अयो० का० 546/21. रा० वि० सु० का० 1506

प्रतिहार[1], प्रवाहन[2], प्रणायन[3], प्रतिबोधा[4]

(10) क अ. क अ. क अ. अ. — इस वर्ग के शब्द सर्वत्र सामान्य रूप से सुलभ हैं; उदाहरणार्थ — सुखदाई[5], निपुनाई[6], समुझाई[7], पसारेउ[8], बिरोलई[9], लघुताई[10], समुदाई[11], मचलाई[12], सारताई[13], बिराजई[14], बखानई[15].

5. <u>पंचमात्राधारी शब्द</u> —

(11) अ. क अ. क अ. क अ. क अ. — इस कोटि के शब्द अधिक नहीं प्राप्त होते हैं; यथा — अघनाशन[16], अवनीतल[17], अलकापुरी[18], अपराधन[19], उतपातन[20], अघमारग[21], अनुरपत[22], अघनागर[23],

(12) अ. क अ. क अ. क अ. अ. — इस कोटि के शब्द अधिक नहीं उपलब्ध हुए हैं; यथा — आतुरताई[24], अपनावई[25], अपराजई[26].

---

1. रा० वि० पु० का० 1622/2. रा० वि० मं० का० 2691/3. रा० वि० मं० का० 2161
4. रा० वि० उ० का० 3087/5. रा० वि० भा० का० 102/6. रा० वि० भा० का० 156
7. रा० वि० अपो० का० 473/8. रा० वि० अपो० का० 524/9. रा० वि० अर० का० 939
10. रा० वि० पु० का० 1759/11. रा० वि० पु० का० 1442/12. रा० वि० मं० का० 1925
13. रा० वि० मं० का० 2010/14. रा० वि० उ० का० 2793/15. रा० वि० उ० का० 2886
16. रा० वि० भा० का० 16/17. रा० वि० भा० का० 178/18. रा० वि० अपो० का० 441
19. रा० वि० अपो० का० 488/20. रा० वि० अर० का० 1041/21. रा० वि० मं० का० 1832
22. रा० वि० मं० का० 1858/23. रा० वि० उ० का० 2898/24. रा० वि० भा० का० 156
25. रा० वि० भा० का० 203/26. रा० वि० भा० का० 288

उपराजेउ[1] , उपजावई [2]

[3] क अ. क अ. क अ. क अ. अ. - इस श्रेणी के शब्दों की उपलब्धि स्वल्प है; जैसे -
भटकावई [3], दारूनताई [4], समुझावई [5], बखानिउ[6], सनमानेउ[7], बिसरावई[8], निरमाएउ[9]

[4] क अ. क अ. क अ. क अ. क अ. - इस श्रेणी के शब्दों की प्राप्ति अन्य की अपेक्षा प्रचुरता से है ; जैसे -
दीनदयाल[10], रघुनायक[11], राजकुमार[12], करुनाकर[13], परमारथ[14], चरनोदक[15], बिसरावत[16], कपिनायक[17], पवनसुत[18], दसबदन[19], दुजनायक[20], सुरनायक[21], करुनामय[22], परिपूरन [23], सरदायक[24], नागनायक[25],

---

1. रा० चि० अर० का० 1146/2. रा० चि० लं० का० 1796/3. रा० चि० बा० का० 257
4. रा० चि० सु० का० 1759/5. रा० चि० अयो० का० 721/6. रा० चि० कि० का० 1323
7. रा० चि० लं० का० 1897/8. रा० चि० उ० का० 2722/9. रा० चि० उ० का० 2986
10. रा० चि० बा० का० 31/11. रा० चि० बा० का० 79/12. रा० चि० बा० का० 303/
13. रा० चि० अयो० का० 433/14. रा० चि० अयो० का० 719/15. रा० चि० अर० का० 896
16. रा० चि० अर० का० 958/17. रा० चि० कि० का० 1235/18. रा० चि० कि० का० 1306
19. रा० चि० सु० का० 1481/20. रा० चि० सु० का० 1587/21. रा० चि० लं० का० 1824
22. रा० चि० लं० का० 1904/23. रा० चि० लं० का० 2710/24. रा० चि० उ० का० 2753
25. रा० चि० उ० का० 3270

होती है ; उदाहरणार्थ -
आरतभंजन[1] , रघुकुलमणि [2] , वारिज लोचन [3] , महादुखदाई [4],
पवनकुमार [5] , कमललोचन [6] , पवनतनय [7] , असुरगंजन [8] ,
मिथिलेशकुमारी[9]

आलोच्य महाकाव्य "रामविनोद" की भाषा में द्व्यक्षरी तथा त्र्यक्षरी शब्दों का बाहुल्य है । चतुरक्षरी शब्द द्व्यक्षरी एवं त्र्यक्षरी शब्दों की तुलना में कम प्राप्त होते हैं । यद्यपि पर्याप्त मात्रा में प्रयुक्त किए गए हैं । पंचाक्षरी शब्दों का प्रयोग अत्यल्प मात्रा में किया गया है ।

---

1. रा० वि० बा० का० 33/2. रा० वि० बा० का० 140/3. रा० वि० अयो० का० 590
4. रा० वि० अर० का० 927/5. रा० वि० कि० का० 1190/6. रा० वि० सु० का० 1390
7. रा० वि० लं० का० 1846/8. रा० वि० उ० का० 2803/9. रा० वि० उ० का० 2844

3- शब्द - रचना - विधान

3.0 शब्द - स्रोत -

आलोच्य कृति "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में, शब्द-रचना के परिप्रेक्ष्य में प्रयुक्त शब्दावली के 2 स्रोत हैं -

1- धातु -

वे शब्द जिनकी रचना धातु के व्युत्पादक प्रत्ययों के योग से होती है तात्पर्य यह है कि ऐसे शब्दों की प्रकृति क्रिया धातु से होती है ; यथा -

हरन[1], करन[2], भच्छन[3], भंजन[4], आवन[5], देखन[6], तारन[7] आदि शब्दों की शब्द प्रकृतियाँ क्रमशः हर्, कर्, भच्छ्, भंज्, आव्, देख्, तार आदि धातुएँ हैं।

2- अधातु - (रूढ़ शब्द) -

वे शब्द जिनकी रचना धातु पर आधारित न होकर रूढ़ शब्दों पर आधारित है, यथा- कुरावन[8], सीकन[9], दुकादाई[10], सुहाई[11], मालिन[12] आदि शब्दों की प्रकृतियाँ क्रमशः कुराव, सीक, दुकाद, सोह, माली आदि व्युत्पत्तिपरक रूढ़ शब्द में है।

---

1. रा० वि० बा० का० 284 / 2. रा० वि० अयो० का० 784 / 3. रा० वि० अर० का० 882
4. रा० वि० कि० का० 1379 / 5. रा० वि० सु० का० 1612 / 6. रा० वि० लं० का० 2485
7. रा० वि० उ० का० 2743 / 8. रा० वि० बा० का० 68 / 9. रा० वि० अयो० का० 514
10. रा० वि० अर० का० 927 / 11. रा० वि० सु० का० 1418 / 12. रा० वि० लं० का० 2268

इस प्रकार शब्द-प्रकृतियों से रचित शब्द-समूह का अध्ययन 2 प्रकार से किया जा सकता है :-

1- ऐतिहासिक आधार पर।

2- रचना के आधार पर।

1- ऐतिहासिक आधार पर - इस दृष्टि से आलोच्य महाकाव्य की समग्र शब्दावली का वर्गीकरण -

क- तत्सम

ख- अर्द्ध- तत्सम

ग - तद्भव

घ- विदेशी

आदि वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।

क- तत्सम शब्द - आलोच्य ग्रन्थ महाकवि "चन्द्रदास का" रामविनोद" मानसोत्तर रामकाव्य परंपरा का प्रतिनिधि महाकाव्य है।[1] इस पर संस्कृत के राम-साहित्य का भी प्रभाव पड़ा है। जनसामान्य एवं विद्वतवर्ग के मध्य समन्वयात्मक दृष्टि कोण का लक्ष्य निर्धारित करते हुए महाकवि ने तत्सम शब्दावली का प्रयोग प्रचुरता से किया है। उदाहरणार्थ - प्रसन्न[2], अनाथ[3], पवित्र[4], सिद्ध[5], शोभा[6], दृष्टि[7], मुष्टिका[8], ग्राम[9], अर्द्ध[10]

---

1. "रामविनोद" महाकाव्य की सम्पादकीय भूमिका पृ0 23, सं0 डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित "ललित"।

2. रा0वि0बा0का0128/3. रा0वि0बा0का0132/4. रा0वि0अयो0का0517

5. रा0वि0अर0का0917/6. रा0वि0कि0का01177/7. रा0वि0सु0का01418

8. रा0वि0लं0का02026/9. रा0वि0उ0का02616/10. रा0वि0उ0का0 3509

ख – <u>अर्द्ध-तत्सम शब्द</u> –

स्वल्प ध्वन्यात्मक परिवर्तन हो जाने के कारण तत्सम शब्दों की गिनती "अर्द्धतत्सम" के रूप में परिगणित की जाती है। आलोच्य महाकाव्य में अर्द्ध-तत्सम शब्दों का पर्याप्त मात्रा में प्रयोग प्राप्त होता है ; उदाहरणार्थ –

जन्मारम्भ[1] , हीरकराज [2], परच [3], निपुन[4] , व्रतमन[5] , वारिद[6] , रावन[7] , निरास[8] , सोक[9] , दारुन[10], नेह[11], दिढ़ता[12], मूरत[13], कष्ट[14], जनम[15]

ग – <u>तद्भव शब्द</u> –

आलोच्य महाकाव्य की भाषा में तद्भव शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया गया है। वास्तव में भाषा की स्वाभाविकता के उत्स तद्भव शब्द ही हैं, इन्हीं सरलता, सहजता, सुबोधता का सम्यक विकास भाषा में होता है। यथा –
भुक्खन[16], बिछाना[17], पाँव[18], जीभाहिं[19], अगिन[20], धुन[21], भिखार[22], बाघ[23], पीठ[24], बादर[25], सभी[26] , चौहार[27]

---

1. रा०वि०उ०का०3348/2. रा०वि०उ०का०2853/3. रा०वि०लं०का०2381
4. रा०वि०लं०का०2062/5. रा०वि०सु०का०1753/6. रा०वि०सु०का०1615
7. रा०वि०कि०का०1385/8. रा०वि० कि०का०1349/9. रा०वि०अर०का०1113
10. रा०वि०अर०का०1001/11. रा०वि०अयो०का०0607/12. रा०वि०अयो०का०0540
13. रा०वि०बा०का०0273/14. रा०वि०बा०का०0188/15. रा०वि०बा०का०012
16. रा०वि०बा०का०052/17. रा०वि०बा०का०070/18. रा०वि०अयो०का०0432
19. रा०वि०अयो०का०0553/20. रा०वि०अर०का०0980/21. रा०वि०अर०का०1002
22. रा०वि०कि०का०1214/23. रा०वि०सु०का०1410/24. रा०वि०सु०का०1513
25. रा०वि०लं०का०1832/26. रा०वि०लं०का०1867/27. रा०वि०उ०का०2954

ग – <u>विदेशी शब्दावली</u> –

आलोच्य ग्रन्थ में विदेशी शब्दों का भी प्रयोग पाया जाता है ; यथा–

वक्त[1] , गुमानन[2] , जैन[3] , हजार[4] , आला[5] , नायक[6] , बक्शीस[7] , बयार[8] , ख्याल[9] , फौज[10] ,

2– <u>रचना के आधार पर</u> –

शब्द–रचना विधान पर विस्तार पूर्वक विचार करने का प्रयास किया जा रहा है । रचना के आधार पर शब्दावली को प्रमुखतः 3 श्रेणियों में विभाजित कर अध्ययन किया जा सकता है –

1– मूल
2– यौगिक
3– सामासिक

3. 1. <u>मूल</u> –

यह शब्द–प्रकृति जो किसी प्रत्यय– योग किए बिना, अपना ध्वन्यात्मक रूप स्थिर रखते हुए स्वतन्त्र शब्द के रूप में भाषा में व्यवहृत होती है, मूल शब्द के नाम से अभिहित की जाती है । वस्तुतः अर्थ की दृष्टि से यह भाषा की अविभाज्य इकाई होती है। शब्द प्रकृति का धातु तथा अधातु रूपों में होना संभव है । निष्कर्षतः मात्र प्रकृति ही नवीन अर्थों के अभिव्यंजक शब्दों की संघटक होती है ।

---

1. र0वि0उ0क0278 1/2. र0वि0लं0क02169/3. र0वि0लं0क02506
4. र0वि0लं0क02526/5. र0वि0लं0क02579/6. र0वि0बा0क0361
7. र0वि0लं0क02679/8. र0वि0उ0क02859/9. र0वि0उ0क03067
10. र0वि0बा0क0225

आलोच्य महाकाव्य "रामविनोद" की भाषा में प्राकृत, विदेशी एवं अन्यान्य प्रादेशिक भाषाओं के शब्द प्रयुक्त किए जाने के कारण धातु निर्धारण में कठिनता है। धातु रूप में दृष्टिगत होने वाले मूल शब्दों की मात्रा पर्याप्त है, यथा-

सुन[1], रच[2], पढ़[3], पा[4], बैठ[5], तज[6], दे[7], टार[8], मार[9], ठोक[10], पी[11], भाग[12], हँस[13], फैंक[14], कूद[15], पढ़[16], पूज[17], भेंट[18],

अधातु रूप में दृष्टिगोचर होने वाले मूल-शब्द पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते हैं। ऐसे मूल शब्द संज्ञा सर्वनाम, विशेषण और अव्यय आदि शब्दावली के प्रमुख अंग का निर्माण करते हैं। रचना के विचार से तद्भव तथा अन्य शब्दों को अधातुज स्वीकार करते हुए मूल शब्द की सीमा में समावेश कर लिया गया है; यथा -

जग[19], भाट[20], दास[21], मीत[22], कथा[23], वन[24], लोक[25], सीस[26], माट[27], मात[28], चीन्ह[29],

3.2. <u>यौगिक शब्द</u> -

शब्द प्रकृति में प्रत्यय के योग से यौगिक शब्द संरचना की दृष्टि

---

1. रा0वि0बा0का0 10/2. रा0वि0बा0का0 419/3. रा0वि0अयो0का0 453
4. रा0वि0अयो0का0 534/5. रा0वि0अयो0का0 743/6. रा0वि0अर0का0 895
7. रा0वि0अर0का0 1089/8. रा0वि0कि0का0 1257/9. रा0वि0कि0का0 1382
10. रा0वि0सु0का0 1408/11. रा0वि0सु0का0 1475/12. रा0वि0सु0का0 1548
13. रा0वि0सु0का0 1740/14. रा0वि0लं0का0 1984/15. रा0वि0लं0का0 2475
16. रा0वि0उ0का0 3022/17. रा0वि0उ0का0 3052/18. रा0वि0उ0का0 3283
19. रा0वि0बा0का0 86/20. रा0वि0बा0का0 375/21. रा0वि0अयो0का0 708
22. रा0वि0अयो0का0 846/23. रा0वि0अर0का0 1035/24. रा0वि0कि0का0 1269
25. रा0वि0कि0का0 1374/ 26. रा0वि0लं0का0 1780/27. रा0वि0लं0का0 1805
28. रा0वि0उ0का0 3036/29. रा0वि0उ0का0 3436

होती है । शब्द-प्रकृतियों (धातुओं) में व्युत्पादक - प्रत्ययों के संयोग से अनेकार्थी द्योतक शब्दों की रचना होती है । शब्दों की संरचना को "व्युत्पत्ति" के नाम से अभिहित किया जाता है । यह "व्युत्पत्ति-विचार" दो दृष्टियों से संभव है -

1- ऐतिहासिक दृष्टि से

2- वर्णनात्मक दृष्टि से

प्रस्तुत अध्याय में केवल वर्णनात्मक दृष्टि से विचार किया जा रहा है । प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं -

1- व्याकरणिक ।

2- व्युत्पादक ।

1- व्याकरणिक प्रत्ययों का विवेचन पद- विचार के अन्तर्गत किया जायेगा ।

2- व्युत्पादक प्रत्यय वे हैं जो धातु अथवा प्रातिपदिक के पूर्व अथवा पश्चात् में संयुक्त होकर यौगिक शब्द निर्माण करते है । कभी-कभी शब्द के पूर्व एवं पर दोनों भागों में प्रत्यय संयुक्त होकर नवीन शब्दों का सृजन करते हैं ।

व्युत्पादक प्रत्यय 2 प्रकार के हैं -

1- पूर्व-प्रत्यय - जिसे संस्कृत में उपसर्ग कहते हैं ।

2- पर-प्रत्यय - ये 2 प्रकार के होते हैं ।-

(क) कृत (ख) तद्धित

प्रत्ययों का योग धातु -रूप तथा अधातु-रूप (शब्द) दोनों प्रकार की प्रकृतियों में होता है। आलोच्य महाकाव्य "रामविनोद" में सर्वाधिक योग इन शब्दों (अधातु-रूपों) में हुआ है ।

1-पूर्व-प्रत्यय ः उपसर्ग ः -

आलोच्य ग्रन्थ में पूर्व-प्रत्ययों के योग से निर्मित अनेकानेक शब्द सुलभ हैं । इन्हें मुख्यतः 2 श्रेणियों में रखा जा सकता है -

क- शब्द प्रकृति तथा पूर्व-प्रत्यय इस प्रकार एकाकार हो गए हैं कि उन्हें पूर्व- प्रत्यय रूप में पृथक करना दुस्तर है; यथा -

उपमा[1] , आरत[2] , अपराध[3] , अधार[4], आसन[5], उदास[6] , अधम[7] , उपचार[8] , आतुर[9] , आदर[10], अगाध[11]

ख- ऐसे शब्द जिनमें सांकालिक दृष्टि से भी पूर्व- प्रत्यय और प्रकृति सुस्पष्ट हैं ; यथा -

अनुभाव[12], सजी[13] , अनुग्रह[14], कुमत[15] , अनुराग[16], अकाज[17], अघोर[18] , अजीत[19], अगोचर[20], अचाह[21],

आलोच्य ग्रन्थ महाकवि चन्द कृत "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में प्राप्त पूर्व- प्रत्ययों ः उपसर्गों ः को रचना की दृष्टि से निम्नांकित 3 श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है -

क- वे पूर्व प्रत्यय ःउपसर्गः जो संज्ञा, विशेषण अथवा धातु से पूर्व संयुक्त होकर तद्वर्गीय शब्दावली व्युत्पन्न करते हैं ।

---

1. रा०वि०बा०का०194/2. रा०वि०बा०का०380/3. रा०वि०अयो०का०557
4. रा०वि०अयो०का०686/5. रा०वि०अर०का०881/6. रा०वि०कि०का०1167
7. रा०वि०सु०का० 1513/8. रा०वि०लं०का०1831/9. रा०वि०लं०का०2092
10. रा०वि०उ०का०3013/11. रा०वि०उ०का०3036/12. रा०वि०उ०का०3162
13. रा०वि०उ०का०2822/14. रा०वि०लं०का०2622/15. रा०वि०लं०का०2121
16. रा०वि०सु०का०1636/17. रा०वि०कि०का०1348/18. रा०वि०अर०का०1047
19. रा०वि०अयो०का०717/20. रा०वि०बा०का०313/21. रा०वि०बा०का०27

ख- ये पूर्व प्रत्यय (उपसर्ग) जो संज्ञा, विशेषण या धातु के साथ संयुक्त होकर भिन्न वर्गीय शब्दावली का निर्माण करते हैं।

ग- ये पूर्व प्रत्यय (उपसर्ग) जो उपर्युक्त दोनों श्रेणियों की शब्दावली का निर्माण करते हैं।

पूर्व- प्रत्ययों का संयोग संज्ञा, विशेषण, क्रिया विशेषण तथा धातुओं के साथ सम्पन्न होता है और उनके इस योग से संज्ञा, विशेषण, क्रिया विशेषण आदि शब्दावली व्युत्पन्न होती है। इसका पूर्ण विवेचन निम्नांकित है -

1- पूर्व प्रत्यय -+-	संज्ञा -	संज्ञा -	अर्थ हीनता -	श्रेष्ठता
अ -	सरन	असरन [1]	✓	
अ -	नीति	अनीति [2]	✓	
अ -	पच्छ	अपच्छ [3]	✓	
अ -	सुर	असुर [4]	✓	
अ -	पास	अपास [5]	स्थानवाचक	
अ -	सील	असील [6]		✓
अ -	सवार	असवार [7]		✓
अ -	भूजान	अभूजान [8]		✓
अ -	धर्म	अधर्म [9]	✓	
अ -	लेखा	अलेखा [10]	✓	

1. रा0 वि0 उ0 का0 3008/2. रा0 वि0 बा0 का0 21/3. रा0 वि0 अर0 का0 1091
4. रा0 वि0 लं0 का0 1997/5. रा0 वि0 बा0 का0 234/6. रा0 वि0 सु0 का0 1414
7. रा0 वि0 बा0 का0 304/8. रा0 वि0 अयो0 का0 448/9. रा0 वि0 सु0 का0 1478
10. रा0 वि0 उ0 का0 2984

पूर्व प्रत्यय	+ संज्ञा	= संज्ञा	= अर्थ हीनता - निषेध
अ -	हार	अहार[1]	
अ -	भार	अभार[2]	
अ -	पंग	अपंग[3]	
अ -	भेष	अभेष[4]	
अ -	जौर	अजौर[5]	
अ -	देव	अदेव[6]	
अ -	लज्ज	अलज्ज[7]	
अ -	समी	असमी[8]	
अ -	छल	अछल[9]	
अ -	टिका	अटिका[10]	
अ -	ग्यान	अग्यान[11]	
अ -	नाद	अनाद[12]	
अ -	भेदा	अभेदा[13]	
अ -	चिंत	अचिंत[14]	
आ -	तम	आतम[15]	
आ -	श्रम	आश्रम[16]	

1. रा० वि०पु०का० 1407/2. रा० वि०अयो०का० 760/3. रा० वि०अर०का० 1038
4. रा० वि०अर०का० 1057/5. रा० वि० वि०का० 1351/6. रा० वि०पु०का० 410
7. रा० वि०लं०का० 1812/8. रा० वि०लं०का० 1867/9. रा० वि०लं०का० 2041
10. रा० वि०लं०का० 2087/11. रा० वि०उ०का० 2777/12. रा० वि०उ०का० 3455
13. रा० वि०लं०का० 2368/14. रा० वि०बा०का० 341/15. रा० वि०अयो०का० 470
16. रा० वि०अयो०का० 634

आ -	रोग	आरोग[1]	
आ -	लीन	आलीन[2]	
आ -	हुत	आहुत[3]	
आ -	रति	आरति[4]	
आ -	न्हा	आन्हा[5]	क्रम
आ -	दर्श	आदर्श[6]	
अप -	लोक	अपलोक[7]	
अप -	जस	अपजस[8]	
अप -	मान	अपमान[9]	
अप -	मारग	अपमारग[10]	
अप -	बाद	अपबाद[11]	
अव -	गुन	अवगुन[12]	
अव -	रेखा	अवरेखा[13]	क्रम
अव -	लोक	अवलोक[14]	अन्य भाव
अव -	धूत	अवधूत[15]	

---

1. रा० वि० कि०का० 1315/ 2. रा० वि० लं०का० 1851/ 3. रा० वि० लं०का० 2472
4. रा० वि० उ०का० 2748/ 5. रा० वि० उ०का० 2815/ 6. रा० वि० उ०का० 3317
7. रा० वि० अयो०का० 0582/ 8. रा० वि० अयो०का० 0744/ 9. रा० वि० सु०का० 1478
10. रा० वि० लं०का० 1832/ 11. रा० वि० उ०का० 3406/ 12. रा० वि० उ०का० 2723
13. रा० वि० सु०का० 1731/ 14. रा० वि० बा०का० 0257/ 15. रा० वि० लं०का० 2124

स -	नेह	सनेह[1]	—	✓
स -	खा	सखा[2]	—	✓
स -	मान	समान[3]	—	✓
स -	पूत	सपूत[4]	—	✓
स -	संक	ससंक[5]	✓	—
स -	राह	सराह[6]	—	✓
स -	गुन	सगुन[7]	—	✓
स -	जन	सजन[8]	—	✓
स -	जीवन	सजीवन[9]	—	✓
सु -	जस	सुजस[10]	—	✓
सु -	मुठी-मुठा	सुमुठी[11]	—	✓
सु -	भाय	सुभाय[12]	—	✓
सु -	रीति	सुरीति[13]	—	✓
सु -	काल	सुकाल[14]	—	✓
सु -	मेरु	सुमेरु[15]	—	✓
सु -	मन	सुमन[16]	—	✓
सु -	नीत	सुनीत[17]	—	✓

---

1. रा० वि० बा० का० 80/2. रा० वि० अर० का० 909/3. रा० वि० बा० का० 129.
4. रा० वि० अयो० का० 541/5. रा० वि० कि० का० 1387/6. रा० वि० अर० का० 1139
7. रा० वि० लं० का० 1859/8. रा० वि० सु० का० 1702/9. रा० वि० सु० का० 1729
10. रा० वि० बा० का० 2/11. रा० वि० बा० का० 36/12. रा० वि० अयो० का० 468
13. रा० वि० अयो० का० 749/14. रा० वि० सु० का० 1750/15. रा० वि० बा० का० 180
16. रा० वि० उ० का० 3110/17. रा० वि० उ० का० 2935

सु -	पंथ	सुपंथ[1]	-	✓
सु -	मेर	सुमेर[2]	-	✓
सु -	भाय	सुभाय[3]	-	✓
सु -	दिन	सुदिन[4]	-	✓
सु -	कृता-कृत	सुकृत[5]	-	✓
सु -	मित्रा-मित्र	सुमित्रा[6]	-	✓
सु -	ठाई	सुठाई[7]	-	✓
सु -	ठारी	सुठारी[8]	-	✓
सु -	जन	सुजन[9]	-	✓
सु -	बाहु	सुबाहु[10]	-	✓
सु -	ग्रीव	सुग्रीव[11]	-	✓
सु -	ठाम	सुठाम[12]	-	✓
सु -	भाट	सुभाट[13]	-	✓
सु -	बेश	सुबेश[14]	-	✓
सु -	ठार	सुठार[15]	-	✓
सु -	मारग	सुमारग[16]	-	✓
सु -	देश	सुदेश[17]	-	✓
सु -	शील	सुशील[18]	-	✓
सु -	लोचना-लोचन	सुलोचना[19]	-	✓

1. रा0 चि0 अयो0 का0 0821/2. रा0 चि0 सु0 का0 1393/3. रा0 चि0 अर0 का0 0902
4. रा0 चि0 उ0 का0 2779/5. रा0 चि0 अयो0 का0 0513/6. रा0 चि0 अयो0 का0 0596
7. रा0 चि0 कि0 का0 1253/8. रा0 चि0 अयो0 का0 0742/9. रा0 चि0 लं0 का0 2127
10. रा0 चि0 अर0 का0 1041/11. रा0 चि0 कि0 का0 1182/12. रा0 चि0 अर0 का0 1150
13. रा0 चि0 सु0 का0 1491/14. रा0 चि0 सु0 का0 1564/15. रा0 चि0 उ0 का0 3287
16. रा0 चि0 उ0 का0 2901/17. रा0 चि0 लं0 का0 1995/18. रा0 चि0 लं0 का0 2000
19. रा0 चि0 लं0 का0 2364

बि -	मल	बिमल[1]	-	✓
बि -	नास	बिनास[2]	✓	-
बि -	राजा	बिराजा[3]	-	✓
बि -	लोचन	बिलोचन[4]	-	✓
बि -	राग	बिराग[5]	-	✓
बि -	बाद	बिबाद[6]	-	✓
बि -	रंच	बिरंच[7]	-	✓
बि -	लास	बिलास[8]	-	✓
बि -	लस	बिलस[9]	-	✓
बि -	सारद	बिसारद[10]	-	✓
बि -	हार	बिहार[11]	-	✓
बि -	लोक	बिलोक[12]	-	✓
बि -	जोग-योग	बियोग[13]	-	✓
बि -	भोग	बिभोग[14]	-	✓
बि -	छाता	बिछाता[15]	-	✓
बि -	कना	बिकना[16]	-	✓
बि -	भंग	बिभंग[17]	✓	-
बि -	राध	बिराध[18]	-	✓

1. रा० वि०उ०का०2725/2. रा० वि०लं०का०1781/3. रा० वि०अयो०का०465
4. रा० वि०अर०का०896/5. रा० वि०सु०का०1535/6. रा० वि०कि०का०1253
7. रा० वि०कि०का०1174/8. रा० वि०लं०का०1840/9. रा० वि०लं०का०1950
10. रा० वि०बा०का०201/11. रा० वि०सु०का०1422/12. रा० वि०अर०का०912
13. रा० वि०अयो०का०497/14. रा० वि०अयो०का०557/15. रा० वि०अयो०का०630
16. रा० वि०अर०का०949/17. रा० वि०लं०का०1934/18. रा० वि०अर०का०1099

प्र -	नाम	प्रनाम[1]	-	✓
प्र -	धान	प्रधान[2]	-	✓
प्र -	बोधा	प्रबोधा[3]	-	✓
प्र -	लोक	प्रलोक[4]	-	✓
प्र -	लंग	प्रलंग[5]	-	भ्रम
प्र -	याग	प्रयाग[6]	-	✓
परि -	पूरन	परिपूरन[7]	-	✓
प्रति -	हार	प्रतिहार[8]	- अन्य भाव	
प्रति -	बोधा	प्रतिबोधा[9]	-	✓
प्रति -	पाल	प्रतिपाल[10]	-	✓
प्रति -	पालक	प्रतिपालक[11]	-	✓
प्रति -	भागती	प्रतिभागती[12]	-	✓
प्रति -	लोक	प्रतिलोक[13]	-	✓
उप -	धार	उपधार[14]	-	✓
उप -	देस	उपदेस[15]	-	✓
उप -	हास	उपहास[16]	✓	

---

1. रा० वि० उ० का० 2738/2. रा० वि० बा० का० 221/3. रा० वि० सुं० का० 1392
4. रा० वि० अर० का० 1069/5. रा० वि० कि० का० 1289/6. रा० वि० उ० का० 3248
7. रा० वि० लं० का० 2710/8. रा० वि० बा० का० 208/9. रा० वि० लं० का० 1814
10. रा० वि० सुं० का० 1753/11. रा० वि० उ० का० 2831/12. रा वि० उ० का० 3161
13. रा० वि० उ० का० 3274/14. रा० वि० अर० का० 1032/15. रा० वि० अयो० का० 460
16. रा० वि० लं० का० 1858

नि -	रात	निरात[1]	✓	-
नि -	हार	निहार[2]	अन्य भाव	
नि -	वाती	निवाती[3]	-	✓
निर् -	अंजन	निरंजन[4]	-	✓
निर् -	तंक	निरतंक[5]	-	✓
अभि -	मानी	अभिमानी[6]	✓	-
अभि -	राम	अभिराम[7]	-	✓
अभि -	मान	अभिमान[8]	✓	-
पर -	देस	परदेस[9]	-	✓
पर -	नारि	परनारि[10]	-	✓
पर -	बाद	परबाद[11]	✓	-
पर -	द्रोह	परद्रोह[12]	✓	-
पर -	धाम	परधाम[13]	-	✓
पर -	लोक	परलोक[14]	-	✓
पर -	घात	परघात[15]	✓	-
पर -	काज	परकाज[16]	-	✓
पर -	बाम	परबाम[17]	-	✓

---

1. रा० वि०उ०का० 3388/2. रा० वि०उ०का० 2874/3. रा० वि०उ०का० 2995
4. रा० वि०अ०का० 0158/5. रा० वि०ल०का० 1023/6. रा० वि०उ०का० 3378
7. रा० वि० कि०का० 1194/8. रा० वि०उ०का० 3057/9. रा० वि०बा०का० 1879
10. रा० वि०बा०का० 2063/11. रा० वि०उ०का० 2867/12. रा० वि०उ०का० 2896
13. रा० वि०उ०का० 2898/14. रा० वि०उ०का० 3134/15. रा० वि०उ०का० 3401
16. रा० वि०उ०का० 3399/17. रा० वि०उ०का० 3410

त -	रंग	तरंग[1]	-	✓
त -	मोल	तमोल [2]	-	✓
त -	माल	तमाल[3]	-	✓
सु -	रंग	सुरंग[4]	-	✓
सह् -	गुन	सगुन[5]	-	✓
सह् -	वग्य-ज्ञ	सर्वग्य[6]	-	✓
ब -	लम्हा	बलम्हा[7]	-	✓
ब -	खुदा	बखुदा[8]	- स्थान	
बे -	हाल	बेहाल[9]	✓	
बे -	खुद	बेखुद [10]	-	✓
बे -	ताल	बेताल[11]	-	✓
बे -	राग	बेराग [12]	-	✓
गु -	मान	गुमान[13]	✓	-
दर -	बार	दरबार[14]	-	✓

1. रा० पि०नं०ना०1853/2. रा० पि०उ०ना०2860/3. रा० पि०उ०ना०3223
4. रा० पि०उ०ना०2840/5. रा० पि०उ०ना०3349/6. रा० पि०पो०ना०435
7. रा० पि०रा०ना०881/8. रा० पि०नं०ना०1908/9. रा० पि०ना०ना०91
10. रा० पि०नं०ना०1911/11. रा० पि०रा०ना०1015/12. रा० पि०उ०ना०3025
13. रा० पि०उ०ना०3059/14. रा० पि०नं०ना०1888

2- पूर्व प्रत्यय +	संज्ञा	विशेषण	अर्थ: हीनता	अर्थ: [illegible]
अ -	खाँड	अखाँड[1]		✓
अ -	पार	अपार[2]		✓
अ -	संडा	असंडा[3]		✓
अ -	घोर	अघोर[4]		✓
अ -	मोल	अमोल[5]		✓
अ -	हाल	अहाल[6]		✓
अ -	जीत	अजीत[7]		✓
अ -	भै	अभै[8]		✓
अ -	रोग	अरोग[9]		✓
अ -	थाह	अथाह[10]		✓
अ -	खिल	अखिल[11]		✓
अ -	कार	अकार[12]		✓
अ -	लोप	अलोप[13]		✓
अ -	हार	अहार[14]		✓
अ -	मला-मल	अमला[15]		✓
अ -	जय	अजय[16]		✓
अ -	मारग	अमारग[17]	✓	
अ -	सिद्ध	असिद्ध[18]	✓	

1. रा० वि०लं०का०2487/2. रा० वि०उ०का०2787/3. रा० वि०सु०का०1420
4. रा० वि०कि०का०1268/5. रा० वि०अयो०का०497/6. रा० वि०बा०का०132
7. रा० वि०बा०का०133/8. रा० वि०अर०का०922/9. रा० वि०अर०का०989
10. रा० वि०लं०का०2670/11. रा० वि०अयो०का०630/12. रा० वि०उ०का०3384
13. रा० वि०लं०का०2348/14. रा० वि०उ०का०3511/15. रा० वि०अयो०का०661
16. रा० वि०उ०का०3111/17. रा० वि०बा०का०387/18. रा० वि०बा०का०393

अ -	नेक	अनेक[1]
अ -	पर	अपर[2]
अ -	नीत	अनीत[3]
अनु -	सार	अनुसार[4]
स -	कोप	सकोप[5]
स -	हित	सहित[6]
स -	नेह	सनेह[7]
स -	प्रीत	सप्रीत[8]
निर् -	अंतर	निरंतर[9]

4- पूर्व प्रत्यय + विशेषण विशेषण

अ -	पावन	अपावन[10]
अ -	लोभ	अलोभ[11]
अ -	दोष	अदोष[12]
अ -	शुद्ध	अशुद्ध[13]

---

1. रा0 वि0 अयो0 का0 440 / 2. रा0 वि0 उ0 का0 3512 / 3. रा0 वि0 बा0 का0 284
4. रा0 वि0 उ0 का0 3501 / 5. रा0 वि0 कि0 का0 1224 / 6. रा0 वि0 सु0 का0 1465
7. रा0 वि0 लं0 का0 1815 / 8. रा0 वि0 कि0 का0 1161 / 9. रा0 वि0 उ0 का0 3010
10. रा0 वि0 बा0 का0 149 / 11. रा0 वि0 अर0 का0 895 / 12. रा0 वि0 बा0 का0 397
13. रा0 वि0 सु0 का0 1528

वि –	मोच्	विमोच[1]
वि –	पच्	विपक[2]
वि –	भंज्	विभंज[3]
वि –	रूढ्	विरूढ[4]

अतः प्रस्तुत आलोच्य "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में प्रयुक्त पूर्व प्रत्यय । उपसर्ग । अ –, अ –, अप –, अभ –, अन –, अनु –, क –, कु –, स–, दु –, वि –, दुर –, प्र –, परि –, प्रति –, उ –, उप –, अत –, नि –, निर –, अति –, पर –, स –, सु –, सर –, ब –, बे –, बे –, सु –, दर –, आदि हैं ।

2– पर प्रत्यय –

जो प्रत्यय प्रकृति के पश्चात् ।अन्त। में संयुक्त होकर नवीन शब्दावली का सृजन करते है, "परप्रत्यय" कहलाते हैं । पर प्रत्ययों से विशेष विविध अर्थों की उपलब्धि होती है ।

आलोच्य महाकाव्य की भाषा में जिन पर प्रत्ययों का प्रयोग किया गया है, उन्हें 2 प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है –

1– कृत
2– तद्धित

1– कृतप्रत्यय –

धातुओं में संलग्न होकर जो परप्रत्यय संज्ञा, विशेषण आदि शब्दों की संरचना करते हैं,"कृतप्रत्यय" कहलाते हैं ।

1, रा0वि0अयो0का0830/2, रा0वि0सं0का02183/3, रा0वि0सं0का0246/
4, रा0वि0सं0का02564

2- तद्धित परप्रत्यय-

रुढ़ शब्द (अधातु) में संयुक्त होने वाले परप्रत्यय "तद्धित परप्रत्यय" कहलाते हैं।

अ - कृत परप्रत्यय -

आलोच्य महाकाव्य की भाषा में प्रयुक्त परप्रत्यय (कृत) इस प्रकार हैं -

(1) अन - न के योग से संज्ञाओं की रचना होती है -

धातु	+	परप्रत्यय	क्रियार्थक संज्ञा
बोल्	-	अन	बोलन[1]
सोच्	-	अन	सोचन[2]
रोद्	-	अन	रोदन[3]
बिलोच्	-	अन	बिलोचन[4]
संभार्	-	अन	संभारन[5]
भांज्	-	अन	भांजन[6]
कर्	-	अन	करन[7]
भार्	-	अन	भारन[8]
आच्	-	अन	आचन[9]

---

1. रा० वि०बा०का०47/2. रा० वि०बा०का०92/3. रा० वि०अयो०का०486
4. रा० वि०अरु०का०986/5. रा० वि० कि०का०1173/6. रा० वि० कि०का०1379
7. रा० वि०सु०का०1595/8. रा० वि०सु०का०1595/9. रा० वि०लं०का०1814

भेंट्	- अन	भेंटन[1]
देख्	- अन	देखन[2]
गम-गम्	- अन	गमन[3]
ले	- न	लेन[4]

॥2॥ अन परप्रत्यय के योग से संज्ञा का निर्माण होता है; यथा-

धातु	परप्रत्यय	संज्ञा
बिलोक्	- अन	बिलोकन[5]
नास्	- अन	नासन[6]
बिनास्	- अन	बिनासन[7]

॥ 3 ॥ आवन- आवनी - आवने - आवनो - आवनी से संज्ञाओं का निर्माण होता है; यथा-

धातु	परप्रत्यय	संज्ञा
न्ह् - नाह्	- आवन	न्हावन[8]
सुह - सोह	- आवनी	सुहावनी[9]
सुह - सोह	- आवने	सुहावने[10]
बढ़् -	- आवनो	बढ़ावनो[11]
लज्-लाज्	-आवनी	लजावनी[12]

---

1. रा० वि० लं० का० 2419/2. रा० वि० लं० का० 2485/3. रा० वि० उ० का० 2828
4. रा० वि० उ० का० 3350/5. रा० वि० बा० का० 96/6. रा० वि० अयो० का० 506
7. रा० वि० अयो० का० 635/8. रा० वि० बा० का० 212/9. रा० वि० अर० का० 984
10. रा० वि० अयो० का० 678/11. रा० वि० बा० का० 373/12. रा० वि० अर० का० 991

मिट् –	– आवनी	मिटावनी[1]
सोह् –	– आवनी	सोहावनी[2]
लाग् –	– आवनी	लगावनी[3]
मिट् –	– आवनी	मिटावनी[4]

। 4 । आ – ना पर प्रत्यय के योग से अत्यल्प संज्ञा शब्द निर्मित हैं-

धातु	पर प्रत्यय	संज्ञा
हँस्	– आ	हँसा[5]
रच्	– ना	रचना[6]

। 5 । अन पर प्रत्यय के योग से कर्तृवाचक संज्ञायें निर्मित होती हैं; जैसे-

धातु +	पर प्रत्यय	संज्ञा कर्तृवाचक
भंज्	– अन	भंजन[7]
हर्	– अन	हरन[8]
भोज्	– अन	भोजन[9]
प्रहार्	– अन	प्रहारन[10]
कर्	– अन	करन[11]
खांड्	– अन	खांडन[12]
मंज्	– अन	मंजन[13]
तार्	– अन	तारन[14]

---

1. रा० वि०अयो०का०833/2. रा० वि०उ०का०3015/3. रा० वि०उ०का०3015
4. रा० वि०उ०का०3015/5. रा० वि०लं०का०2085/6. रा० वि०बा०का०45
7. रा० वि०बा०का०18/8. रा० वि०बा०का०4/9. रा० वि०अयो०का०788
10. रा० वि०अयो०का०719/11. रा० वि०लं०का०1814/12. रा० वि०लं०का०2660
13. रा० वि०उ०का०2786/14. रा० वि०उ०का०3226

(6) नि - नी - अनि - अनी - आनी पर प्रत्ययों के योग से संज्ञायें बनती हैं, उदाहरणार्थ -

धातु		पर प्रत्यय	संज्ञा
आ	-	नि	आनि[1]
जा	-	नी	जानी[2]
भर	-	अनी	भरनी[3]
भर	-	अनि	भरनि[4]
कर	-	अनी	करनी[5]
हर	-	अनी	हरनी[6]
तर	-	अनी	तरनी[7]
बिक	-	आनी	बिकानी[8]
बिसर	-	आनी	बिसरानी[9]

(7) त - आ - इत पर प्रत्ययों के योग से कृदन्त विशेषणों की संरचना सम्पन्न होती है, यथा -

धातु		पर प्रत्यय	विशेषण (कृदन्त)
दे	-	त	देत[10]
जा	-	त	जात[11]
ले	-	त	लेत[12]

---

1. रा० वि०बा०का० 259/2. रा० वि०उ०का० 3426/3. रा० वि०उ०का० 3509
4. रा० वि०अर०का० 1338/5. रा० वि०अयो०का० 730/6. रा० वि०अर०का० 908
7. रा० वि०अर०का० 991/8. रा० वि०बा०का० 316/9. रा० वि०अयो०का० 437
10. रा० वि०अयो०का० 446/11. रा० वि०कि०का० 1186/12. रा० वि०सु०का० 1424

लोह्	- अत	लोहत[1]
बिलोक्	- अत	बिलोकत[2]
चल्	- अत	चलत[3]
कह्	- अत	कहत[4]
सुन्	- अत	सुनत[5]
देख्	- अत	देखत[6]
चाह्	- अत	चाहत[7]
कर्	- अत	करत[8]
पुलक्	- इत	पुलकित[9]
रच्	- इत	रचित[10]

। 8 । अय - आय - अये - आये पर प्रत्ययों के योग से निर्मित

धातु +	पर प्रत्यय	
रच्	- अय	रचय[11]
मिट्	- अय	मिटय[12]
चल्	- अय	चलय[13]
पढ़्	- आय	पढ़ाय[14]
सुन् +	- आय	सुनाय[15]

---

1. रा० वि० बा० क० 16/2. रा० वि० बा० क० 114/3. रा० वि० अयो० क० 439
4. रा० वि० अयो० क० 666/5. रा० वि० अर० क० 887/6. रा० वि० लं० क० 1833
7. रा० वि० लं० क० 2513/8. रा० वि० उ० क० 2799/9. रा० वि० बा० क० 39
10. रा० वि० सुं० क० 1454/11. रा० वि० बा० क० 10/12. रा० वि० अयो० क० 564
13. रा० वि० अयो० क० 827/14. रा० वि० बा० क० 64/15. रा० वि० अयो० क० 452

बिक्	- आय	बिकाय[1]
जग्	- आय	जगाय[2]
उठ्	- आय	उठाय[3]
बोल्	- आय	बुलाय[4]
बन्	- आय	बनाय[5]
पढ़्	- आय	पढ़ाय[6]
बिलख्	- आय	बिलखाय[7]
पठ्	- अये	पठये[8]
कह्	- आये	कहाये[9]
पहिर	- आये	पहिराये[10]

। 9 । एड पर प्रत्यय का सर्वाधिक आलोच्य महाकाव्य की भाषा संरचना में प्रयोग हुआ है । इसके योग से निर्मित -

<u>धातु</u> + <u>पर प्रत्यय</u>

बह्	- एउ	बहेउ[11]
चढ़्	- एउ	चढ़ेउ[12]
रह्	- एउ	रहेउ[13]
दह्	- एउ	दहेउ[14]
कलप्	- एउ	कलपेउ[15]

1. रा० वि०अयो०का०640/2. रा० वि०आर०का०936/3. रा० वि० कि०का०1219
4. रा० वि०सु०का०1481/5. रा० वि०लं०का०1768/6. रा० वि०उ०का०2760
7. रा० वि०उ०का०2999/8. रा० वि०लं०का०2611/9. रा० वि०बा०का०074
10. रा० वि०उ०का०2824/11. रा० वि०बा०का०023/12. रा० वि०बा०का०038
13. रा० वि०अयो०का०430/14. रा० वि०अयो०का०705/15. रा० वि०आर०का०919

डाट्	- एउ	डाटेउ[1]
छाड़्	- एउ	छाड़ेउ[2]
गढ़्	- एउ	गढ़ेउ[3]
टिक्	- एउ	टिकेउ[4]
नाख्	- एउ	नाखेउ[5]
हाँक्	- एउ	हाँकेउ[6]
झाँक्	- एउ	झाँकेउ[7]

। 10 । य - आय - ये - आये - आयें पर प्रत्ययों के योग से निर्मित

धातु +	पर प्रत्यय	
जा	- य	जाय[8]
खा	- य	खाय[9]
समुझ्	- आय	समुझाय[10]
सुन्	- आय	सुनाय[11]
देख्	- आय	देखाय[12]
पा	- ये	पाये[13]
आ	- ये	आये[14]
जा	- ये	जाये[15]
पी	- ये	पीये[16]
बढ़्	- आये	बढ़ाये[17]

---

1. रा० वि० कि० का० 1171 / 2. रा० वि० कि० का० 1201 / 3. रा० वि० सुं० का० 1390
4. रा० वि० लं० का० 1799 / 5. रा० वि० लं० का० 2102 / 6. रा० वि० उ० का० 2987
7. रा० वि० उ० का० 3362 / 8. रा० वि० कि० का० 1350 / 9. रा० वि० लं० का० 2008
10. रा० वि० बा० का० 145 / 11. रा० वि० अयो० का० 777 / 12. रा० वि० बा० का० 83
13. रा० वि० बा० का० 176 / 14. रा० वि० लं० का० 1942 / 15. रा० वि० लं० का० 2494
16. रा० वि० लं० का० 2589 / 17. रा० वि० बा० का० 101

<u>धातु</u> +	<u>पर प्रत्यय</u>	
खिलाड़	- इया	खिलाड़िया[1]
रच्	- आइया	रचाइया[2]
सुन्	- आइया	सुनाइया[3]
मान्	- इये	मानिये[4]
कर्	- इये	करिये[5]
हर्	- इये	हरिये[6]
कर्	- इये	करिये[7]
देख्	- इये	देखिये[8]
टार्	- इये	टारिये[9]
मार्	- इये	मारिये[10]
तार्	- इये	तारिये[11]
जान्	- इये	जानिये[12]
कह्	- इये	कहिये[13]
बिलोक्	- इये	बिलोकिये[14]
पा	- इये	पाइये[15]
राख्	- इये	राखिये[16]
जा	- इये	जाइये[17]
सुन्	- इये	सुनिये[18]
पढ़्	- आइये	पढ़ाइये[19]

---

1. रा० वि०अ०का०0962/2. रा० वि०अ०का०3436/3. रा० वि० उ०का०3464
4. रा० वि०बा०का०0168/5. रा० वि०बा०का०0188/6. रा० वि०अ०का०0870
7. रा० वि०अ०का०0955/8. रा० वि० कि०का०1331/9. रा० वि०सु०का०1572
10. रा० वि०लं०का०2228/11. रा० वि०लं०का०2663/12. रा० वि०उ०का०2801
13. रा० वि०उ०का०2890/14. रा० वि०उ०का०3114/15. रा० वि०बा०का०0400
16. रा० वि०अयो०का०0543/17. रा० वि०सु०का०1670/18. रा० वि०अयो०का०0566
19. रा० वि०बा०का०0400

। 15 । ईचिये पर प्रत्यय के योग से निर्मित -

धातु	+	पर प्रत्यय	
सुन्		- ईचिये	सुनीचिये[1]

। 16 । उ - उँ - अउ - अउँ - अऊँ - आउँ - परप्रत्यय के योग से संरचित -

धातु	+	पर प्रत्यय	
खा		- उ	खाउ[2]
जा		- उ	जाउ[3]
ले		- उँ	लेउँ[4]
दे		- उँ	देउँ[5]
पा		- ऊँ	पाऊँ[6]
चल्		- अउ	चलउ[7]
लड़्		- अउ	लड़उ[8]
निकार्		- अउ	निकारउ[9]
चढ़्		- अउ	चढ़उ[10]
गढ़्		- अउ	गढ़उ[11]
पूछ्		- अउ	पूछउ[12]

---

1. रा0वि0मुं0का02406/2. रा0वि0अयो0का0521/3. रा0वि0मं0का02690
4. रा0वि0अयो0का0624/5. रा0वि0बा0का0395/6. रा0वि0अयो0का0553
7. रा0वि0अयो0का0496/8. रा0वि0अर0का0951/9. रा0वि0सुं0का01723
10. रा0वि0कि0का01782/11. रा0वि0उ0का02875/12. रा0वि0उ0का02983

मांझ	- अउ	मांझउ[1]
बोल्	- अउँ	बोलउँ[2]
देख्	- अउँ	देखउँ[3]
पढ़्	- अउँ	पढ़उँ[4]
मिट्	- आऊँ	मिटाऊँ[5]

117। वई - आवई पर प्रत्ययों के योग से निर्मित -

धातु +	पर प्रत्यय	
गा	- वई	गावई[6]
पा	- वई	पावई[7]
सुन्	- आवई	सुनावई[8]
सिख्	- आवई	सिखावई[9]
तिखट्	- आवई	तिखटावई[10]
रच्	- आवई	रचावई[11]
बढ़्	- आवई	बढ़ावई[12]
उपज्	- आवई	उपजावई[13]
ढह्	- आवई	ढहावई[14]
छिप्	- आवई	छिपावई[15]
बिसर्	- आवई	बिसरावई[16]
बच्	- आवई	बचावई[17]

---

1. रा० वि० उ० का० 3339/2. रा० वि० सु० का० 1490/3. रा० वि० कि० का० 1196
4. रा० वि० बा० का० 125/5. रा० वि० अयो० का० 553/6. रा० वि० बा० का० 203/
7. रा० वि० सु० का० 1541/8. रा० वि० बा० का० 203/9. रा० वि० बा० का० 257
10. रा० वि० अयो० का० 597/11. रा० वि० अयो० का० 477/12. रा० वि० सु० का० 1642
13. रा० वि० लं० का० 1796/14. रा० वि० लं० का० 2074/15. रा० वि० लं० का० 2434
16. रा० वि० उ० का० 2722/17. रा० वि० उ० का० 2804

। 18 । ऐगे - औगे - अबो - आयहँ - आयहु आदि अन्य स्थान पर-प्रत्ययों के योग से निर्मित -

धातु +	पर-प्रत्यय	
हर्	- ऐगे	हरैगे[1]
तप्	- औगे	तपौगे[2]
मिल्	- अबो	मिलबो[3]
रच्	- आयहँ	रचायहँ[4]
सुन्	- आयहु	सुनायहु[5]

ब - तद्धित पर प्रत्यय -

आलोच्य महाकाव्य "रामविनोद" की भाषा की शब्दावली में निम्नांकित तद्धित पर-प्रत्यय प्राप्त होते हैं -

।1। ई , आई पर प्रत्ययों के योग से संरचित संज्ञाएँ; यथा -

संज्ञा +	पर-प्रत्यय	संज्ञा
लोभ	- आई	लोभाई[6]
तरुण।तरुन।	- ई	तरुनी[7]
मंत्र	- ई	मंत्री[8]

---

1. रा०वि०सुं०का०सु०का०।436/2. रा०वि०लं०का०।621/3. रा०वि०लं०का०।936
4. रा०वि०उ०का०।2717/5. रा०वि०उ०का०।3226/6. रा०वि०अयो०का०।640
7. रा०वि०अर०का०।976/8. रा०वि०कि०का०।1273

नागकुमार	- ई	नाग कुमारी[1]
मकर	- ई	मकरी[2]
चोर	- ई	चोरी[3]
प्रान	- ई	प्रानी[4]

(2) नी, इन - इनी पर प्रत्ययों के योग से निर्मित संज्ञाएं यथा -

संज्ञा +	पर प्रत्यय -	संज्ञा
छार	- नी	छारनी[5]
पति	- नी	पतिनी[6]
बरात	- इन	बरातिन[7]
जोग	- इन	जोगिन[8]
माली (माल)	- इन	मालिन[9]
बैर	- इन	बैरिन[10]
पिसाच	- इनी	पीसाचिनी[11]
जोग	- इनी	जोगिनी[12]

(3) इया पर प्रत्यय के संयोग से संरचित शब्द, यथा -

बात (बत)	- इया	बतिया[13]
दास (दस)	- इया	दसिया[14]

---

1. रा० वि० सुं० का० 1447/ 2. रा० वि० लं० का० 2132/ 3. रा० वि० लं० का० 1976
4. रा० वि० उ० का० 3059/ 5. रा० वि० लं० का० 2164/ 6. रा० वि० उ० का० 2959
7. रा० वि० बा० का० 236/ 8. रा० वि० अर० का० 1015/ 9. रा० वि० लं० का० 2270
10. रा० वि० लं० का० 2314/ 11. रा० वि० अयो० का० 710/ 12. रा० वि० उ० का० 2499
13. रा० वि० बा० का० 56/ 14. रा० वि० उ० का० 3261

। 4 । क – इ का पर प्रत्ययों के योग से बनी संज्ञाएँ, यथा-

संज्ञा +	पर-प्रत्यय	संज्ञा
संदेस	– क	संदेसक[1]
प्रतिपाल	– क	प्रतिपालक[2]
पाल	– क	पालक[3]
घाल	– क	घालक[4]
निंदा । निंद।	– क	निंदक[5]
पात	– क	पातक[6]
काल	– इका	कालिका[7]
माल	– इका	मालिका[8]

। 5 । हारी पर प्रत्यय के योग से रचित कतिपय कर्तृवाचक संज्ञाएँ, यथा-

संज्ञा +	पर-प्रत्यय	कर्तृवाचक संज्ञा
चित्त	– हारी	चित्तहारी[9]
भ्रम	– हारी	भ्रमहारी[10]
प्राण	– हारी	प्राणहारी[11]
तेज	– हारी	तेजहारी[12]
बुद्धि	– हारी	बुद्धिहारी[13]

---

1. रा०चि०बा०छं०208/2. रा०चि०अयो०छं०618/3. रा०चि०अर०छं०916
4. रा०चि०अर०छं०916/5. रा०चि०उ०छं०3315/6. रा०चि०उ०छं०3409
7. रा०चि०लं०छं०2529/8. रा०चि०लं०छं०2530/9. रा०चि०लं०छं०2259
10. रा०चि०लं०छं०2275/11. रा०चि०उ०छं०3400/12. रा०चि०लं०छं०2464
13. रा०चि०लं०छं०2574

(6) आरी पर प्रत्यय योग से संज्ञा; यथा-

भीख (भिख) + आरी — भिखारी[1]

(7) "कारी" पर प्रत्यय के योग से रचित विशेषण; यथा -

संज्ञा	+ पर प्रत्यय	विशेषण
बोधा	- कारी	बोधाकारी[2]
दुष्ट	- कारी	दुष्टकारी[3]
नक्त	- कारी	नक्तकारी[4]
चित्त	- कारी	चित्तकारी[5]
स्वाद	- कारी	स्वादकारी[6]

(8) " ई " पर प्रत्यय से निर्मित कर्तृवाचक संज्ञाएँ ; यथा -

संज्ञा	+ पर प्रत्यय	संज्ञा
अपकार	- ई	अपकारी[7]
ठग	- ई	ठगी[8]
गुन	- ई	गुनी[9]
भोग	- ई	भोगी[10]
पात	- ई	पाती[11]
जोग	- ई	जोगी[12]
बरदान	- ई	बरदानी[13]

---

1. रा० वि० सं० भा० 1907/2. रा० वि० सं० भा० 1910/3. रा० वि० सं० भा० 2259
4. रा० वि० सं० भा० 2574/5. रा० वि० उ० भा० 3334/6. रा० वि० उ० भा० 3400
7. रा० वि० बा० भा० 15/8. रा० वि० बा० भा० 114/9. रा० वि० अयो० भा० 600
10. रा० वि० अयो० भा० 470/11. रा० वि० सु० भा० 1744/12. रा० वि० सं० भा० 1851
13. रा० वि० सं० भा० 1861

सत	- ई	सती[1]
पुरखात	- ई	पुरखाती[2]

। 9 ।"- पना" पर प्रत्यय के संयोग से निर्मित भाववाचक संज्ञा, यथा-

संज्ञा	+ पर प्रत्यय	संज्ञा भाववाचक
बाल	- पना	बालपना[3]

। 10 । "- ता" पर प्रत्यय के संयोग से संरचित भाववाचक संज्ञाएँ, यथा-

विशेषण	+ पर प्रत्यय	संज्ञा भाववाचक
कोमल	- ता	कोमलता[4]
मनोहर	- ता	मनोहरता[5]
दुष्ट	- ता	दुष्टता[6]
सुन्दर	- ता	सुन्दरता[7]
सठ	- ता	सठता[8]
दृढ़	- ता	दृढ़ता[9]
लघु	- ता	लघुता[10]
छम	- ता	छमता[11]
व्याकुल	- ता	व्याकुलता[12]
निपुन	- ता	निपुनता[13]

---

1. रा० मि०उ०का०2753/2. रा० मि०उ०का०2846/3. रा० मि०उ०का०2995
4. रा० मि०बा०का०67/5. रा० मि०उ०का०166/6. रा० मि०अयो०का०501
7. रा० मि०अर०का०976/8. रा० मि० कि०का०1175/9. रा० मि० कि०का०1238
10. रा० मि०सु०का०1410/11. रा० मि०लं०का०2251/12. रा० मि०लं०का०2523
13. रा० मि०उ०का०2925

अरि	- ता	अरिता[1]
सन्त	- ता	सन्तता[2]

(11) - "आई" पर प्रत्यय के योग से रचित भाववाचक संज्ञाएँ, यथा-

संज्ञा/विशेषण	+ पर प्रत्यय	संज्ञा भाववाचक
निपुण (निपुन)	- आई	निपुनाई[3]
अधिक (अधक)	- आई	अधकाई[4]
प्रभु (-ता)	- आई	प्रभुताई[5]
दारुन (-ता)	- आई	दारुनताई[6]
लघु (-ता)	- आई	लघुताई[7]
सुभग (-ता)	- आई	सुभगताई[8]
सार (-ता)	- आई	सारताई[9]
ताप (-ता)	- आई	तापताई[10]

(12) "ई" पर प्रत्यय के योग से संरचित विशेषण, जैसे -

संज्ञा	+ पर प्रत्यय	विशेषण
दान	- ई	दानी[11]
पावन	- ई	पावनी[12]
सुभग	- ई	सुभगी[13]
ज्ञान	- ई	ज्ञानी[14]
तप	- ई	तपी[15]

---

1. रा० वि० उ० का० 3093/ 2. रा० वि० उ० का० 3430/ 3. रा० वि० बा० का० 156
4. रा० वि० बा० का० 321/ 5. रा० वि० सु० का० 1418/ 6. रा० वि० सु० का० 1759/
7. रा० वि० सु० का० 1759/ 8. रा० वि० लं० का० 1946/ 9. रा० वि० लं० का० 2010
10. रा० वि० लं० का० 2111/ 11. रा० वि० बा० का० 148/ 12. रा० वि० अयो० का० 785
13. रा० वि० अयो० का० 800/ 14. रा० वि० अर० का० 1052/ 15. रा० वि० सु० का० 1741

ज्ञान	- ई	ज्ञानी[1]
राग	- ई	रागी[2]
त्याग	- ई	त्यागी[3]
विजय	- ई	विजयी[4]
लोभ	- ई	लोभी[5]

। 13 । "- वन्त" पर प्रत्यय के प्रयोग से बने विशेषण; उदाहरणार्थ-

संज्ञा	+ पर प्रत्यय	विशेषण
ज्ञान	- वंत	ज्ञानवंत[6]
गुन	- वंत	गुनवंत[7]
भाग	- वंत	भागवंत[8]
आरत	- वंत	आरतवंत[9]
नाम	- वंत	नामवंत[10]
बल	- वंत	बलवंत[11]
मान	- वंत	मानवंत[12]
दया	- वंत	दयावंत[13]
हनु	- वंत	हनुवंत[14]
पोत	- वंत	पोतवंत[15]

---

1. रा० वि० लं० का० 1830/2. रा० वि० लं० का० 2263/3. रा० वि० उ० का० 3002
4. रा० वि० उ० का० 3111/5. रा० वि० कि० का० 1168/6. रा० वि० बा० का० 362
7. रा० वि० बा० का० 382/8. रा० वि० अयो० का० 569/9. रा० वि० कि० का० 1269
10. रा० वि० कि० का० 1320/11. रा० वि० लं० का० 1772/12. रा० वि० सु० का० 1674
13. रा० वि० लं० का० 2127/14. रा० वि० लं० का० 2693/15. रा० वि० उ० का० 2871 ।

(14) "- र" पर प्रत्यय के योग से निर्मित विशेषण; जैसे -

संज्ञा	+ पर प्रत्यय	विशेषण
रुधि	- र	रुधिर[1]
मधु	- र	मधुर[2]

(15) "- इत" पर प्रत्यय के संयोग से संरचित विशेषण; उदाहरणार्थ -

संज्ञा	+ पर प्रत्यय	विशेषण
भास	- इत	भासित[3]
दोष	- इत	दोषित[4]
भाष	- इत	भाषित[5]
कलंक	- इत	कलंकित[6]
पुलक	- इत	पुलकित[7]
क्रोध	- इत	क्रोधित[8]

(16) "-वान" से निर्मित अत्यल्प विशेषण; यथा-

भग	- वान	भगवान[9]
बल	-वान	बलवान[10]

(17) "-ल" से संरचित विशेषण ; यथा -

दीनदया	- ल	दीनदयाल[11]
कृपा	- ल	कृपाल[12]

1. रा० वि० बा० का० 310/2. रा० वि० उ० का० 968/3. रा० वि० बा० का० 15
4. रा० वि० अयो० का० 474/5. रा० वि० अयो० का० 686/6. रा० वि० उ० का० 957
7. रा० वि० उ० का० 968/8. रा० वि० कि० का० 1298/9. रा० वि० लं० का० 2143
10. रा० वि० लं० का० 2152/11. रा० वि० बा० का० 31/12. रा० वि० बा० का० 367

बल	- हीन	बलहीन[1]
प्रिय	- हीन	प्रियहीन[2]
दया	- हीन	दयाहीन[3]
सील	- हीन	सीलहीन[4]
ज्ञान	- हीन	ज्ञानहीन[5]
आदर	- हीन	आदरहीन[6]
ध्यान	- हीन	ध्यानहीन[7]
धरन	- हीन	धरनहीन[8]
छाइ (छार)	- हीन	छारहीन[9]
भुजा	- हीन	भुजाहीन[10]
रूप	- हीन	रूपहीन[11]
व्रत	- हीन	व्रतहीन[12]
सुर	- हीन	सुरहीन[13]
भगति	- हीन	भगतिहीन[14]
संगत	- हीन	संगतहीन[15]

(2) "-धर-वर" पर प्रत्यय योग से निर्मित विशेषण, उदाहरणार्थ-

संज्ञा	+ पर प्रत्यय	विशेषण
भुजा	- धर	भुजाधर[16]
गिरि (गिर)	- धर	गिरधर[17]

---

1. रा०वि०अर०का०1091/2. रा०वि०कि०का०1180/3. रा०वि०कि०का०1315
4. रा०वि०सु०का०1494/5. रा०वि०सु०का०1537/6. रा०वि०सु०का०1736/
7. रा०वि०लं०का०1829/8. रा०वि०लं०का०2199/9. रा०वि०लं०का०2208
10. रा०वि०लं०का०2209/11. रा०वि०लं०का०2502/12. रा०वि०लं०का०2572
13. रा०वि०उ०का०3293/14. रा०वि०उ०का०3294/15. रा०वि०उ०का०3032
16. रा०वि०बा०का०094/17. रा०वि०अर०का०1094

मिरिटा	- बर	मिरिटाबर[1]
कपि	- बर	कपिबर[2]
सुर	- बर	सुरबर[3]
राज	- बर	राजबर[4]
मुनि	- बर	मुनिबर[5]
तरु ।तारि ।	- बर	तारिबर[6]
रबि	- बर	रबिबर[7]
पद	- बर	पदबर[8]
बुध	- बर	बुधबर[9]
कपा	- बर	कपाबर[10]
रामभुआ	- बर	रामभुआबर[11]
रघु	- बर	रघुबर[12]
करुना	- बर	करुनाबर[13]
सुजा	- बर	सुजाबर[14]

<u>क्रियाधातु व्युत्पादक पर प्रत्यय -</u>

इस प्रकार के पर प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवम् क्रिया विशेषण शब्दों में संयुक्त होकर नाम धातुओं का निर्माण करते हैं । - ए , - आ पर प्रत्ययों के योग से नाम धातुएँ व्युत्पन्न हुई हैं ; यथा-

---

1. रा० वि० अ० का० 1095/2. रा० वि० सु० का० 1390/3. रा० वि० लं० का० 1778
4. रा० वि० लं० का० 1941/5. रा० वि० लं० का० 2130/6. रा० वि० लं० का० 2171
7. रा० वि० लं० का० 2191/8. रा० वि० लं० का० 2212/9. रा० वि० लं० का० 2392
10. रा० वि० लं० का० 2449/11. रा० वि० लं० का० 2537/12. रा० वि० लं० का० 2620
13. रा० वि० लं० का० 2662/14. रा० वि० उ० का० 2765

(1) संज्ञा + पर प्रत्यय नामधातु

संज्ञा	पर प्रत्यय	नामधातु
धिरकारा–धिक्कारा	-0	धिक्कार (धिक्कारी)[1] भूतकालिक कृदन्त रूप
तिक्कार	-0	तिक्कार (तिक्कारे)[2] भूतकालिक कृदन्त रूप
अनुराग	-0	अनुराग (अनुरागे)[3] भूतकालिक कृदन्त रूप
पुलक	-0	पुलक (पुलके)[4] भूतकालिक कृदन्त रूप
आलस (अलस)	-0	अलस (अलसाने)[5] भूतकालिक कृदन्त रूप
त्याग	-0	त्याग (त्यागि)[6] भूतकालिक कृदन्त रूप
भोग	-0	भोग (भोगे)[7] भूतकालिक कृदन्त रूप
गह	-0	गंह (गहे)[8] भूतकालिक कृदन्त रूप
फूल	-0	फूल (फूले)[9] भूतकालिक कृदन्त रूप
गुहार	-0	गुहार (गुहारि)[10] भूतकालिक कृदन्त रूप
सुमिर	-0	सुमिर (सुमिरे)[11] भूतकालिक कृदन्त रूप
परस	-0	परस (परसे)[12] भूतकालिक कृदन्त रूप
भूल	-0	भूल (भूले)[13] भूतकालिक कृदन्त रूप

(2) सर्वनाम + पर प्रत्यय नाम धातु

सर्वनाम	पर प्रत्यय	नाम धातु
अपना	[illegible]	अपना (अपनायउ)[14] भूतकालिक कृदन्त रूप

(3) विशेषण + पर प्रत्यय नामधातु

विशेषण	पर प्रत्यय	नामधातु
पूज	-0	पूज (पूजे)[15] भूतकालिक कृदन्त रूप

---

1. रा०वि० बा०का०80/2. रा०वि०बा०का०88/3. रा०वि०बा०का०221
4. रा०वि०अयो०का०434/5. रा०वि०अयो०का०548/6. रा०वि०अर०का०983
7. रा०वि०अर०का०1085/8. रा०वि०कि०का०1160/9. रा०वि०सु०का०1533
10. रा०वि०लं०का०1828/11. रा०वि०लं०का०1970/12. रा०वि०उ०का०2809
13. रा०वि०उ०का०2920/14. रा०वि०बा०का०203/15. रा०वि०बा०का०357

तरस	-0 तरस ।तरसे ।[1] भूतकालिक कृदन्त रूप
सुहायन	-0 सुहायन।सुहायनो।[2] भूतकालिक कृदन्त रूप
प्रगट	-0 प्रगट ।प्रगटे।[3] भूतकालिक कृदन्त रूप
भुक्त।भुत्त।	-0 भुत्त ।भुत्तो।[4] भूतकालिक कृदन्त रूप
उखाड़।-उखार।	-0 उखार ।उखारि।[5] भूतकालिक कृदन्त रूप
आकुल।-अकुल।	-0 अकुल ।अकुलानी।[6] भूतकालिक कृदन्त रूप
मीठा ।-मीठ ।	-0 मीठ ।मीठे।[7] भूतकालिक कृदन्त रूप

।4। क्रिया विशेषण + परप्रत्यय नामधातु

अनुसार	-0 अनुसार ।अनुसारी।[8] भूतकालिक कृदन्त रूप
पलट	-0 पलट । पलटे ।[9] भूतकालिक कृदन्त रूप
पाठ	-0 पाठ । पाठे ।[10] भूतकालिक कृदन्त रूप

आलोच्य महाकाव्य "रामविनोद" की भाषा में एक ही शब्द प्रकृति के साथ पूर्व प्रत्यय एवं परप्रत्यय के योग से संरचित शब्द उपलब्ध होते हैं ; यथा -

पूर्व प्रत्यय +	शब्द प्रकृति +	पर प्रत्यय	संज्ञा/विशेषण
अ -	ग्यान	- ता	अग्यानता[11]
अ -	कांड	- इत	अकांडित[12]
वि -	योग।योग।	- ई	वियोगी[13]
स -	संक	-इत	ससंकित[14]

---

1. रा0वि03यो0का0628/2. रा0वि03यो0का0678/3. रा0वि03रा0का0975
4. रा0वि03सु0का01488/5. रा0वि0कि0का01885/6. रा0वि0कि0का02039
7. रा0वि030का02918/8. रा0वि0बा0का0133/9. रा0वि0बा0का0263
10. रा0वि0बा0का0277/11. रा0वि0बा0का0395/12. रा0वि03यो0का0753
13. रा0वि03यो0का0851/14. रा0वि03रा0का0883

अ -	लंक	- आ	अलंका[1]
अ + वि -	नाश	- ई	अविनाशी[2]
अ -	रोग	- ई	अरोगी[3]
स -	रस	- ई	सरसी[4]
अभि -	मान	- ई	अभिमानी[5]
सु -	लोचन	- आ	सुलोचना[6]
ता -	रक	- ई	तारकी[7]
सु -	मुख	- ई	सुमुखी[8]
वि -	जय	- ई	विजयी[9]

आलोच्य ग्रन्थ की भाषा में सर्वाधिक योग एक पद प्रत्यय से रचित शब्दावली का है ।

3 . 3 सामासिक -

समास का अर्थ है संक्षेप, सम् + अस् + अ । घञ् । = समास अर्थात् विभिन्न पदों का एक में सम्यक् निक्षेप । वस्तुतः एक प्रकार से शब्द-प्रकृति प्रत्यय-रहित स्थिति में मूल शब्द- रचना तथा प्रत्यय सहित स्थिति में यौगिक शब्द-रचना करती है साथ ही क्रिया धातुओं और रूढ़- शब्दों तथा यौगिक शब्दों के संयोग से शब्द रचना संभव होती है, वही समास है । आलोच्य महाकाव्य "रामविनोद" की भाषा की मुख्य प्रवृत्ति दो शब्द-प्रकृतियों के योग से संरचित समास की है । किन्हीं छन्दों में समासों की छटा दर्शनीय है ।

---

1. रा० वि० अ० का० 1036/2. रा० वि० अ० का० 1069/3. रा० वि० कि० का० 1168
4. रा० वि० सु० का० 1510/5. रा० वि० लं० का० 1788/6. रा० वि० लं० का० 2364
7. रा० वि० लं० का० 2572/8. रा० वि० उ० का० 2771/9. रा० वि० उ० का० 3111

दो प्रातिपदिकों के योग से संरचित समास इस प्रकार हैं ;
उदाहरणार्थ-

प्रातिपदिक	+	प्रातिपदिक	समास
दुःखा		दोष	दुःखा-दोष[1]
चंदन		अक्षत	चंदन-अक्षत[2]
पुत्र		कलत्र	पुत्र-कलत्र[3]
तप		तेज	तप-तेज[4]
पातर		रात	पातर-रात[5]
आतन		अतन	आतन-अतन[6]
फल		फूल	फल-फूल[7]
मोह		माया	मोह-माया[8]
बेद		पुरान	बेद-पुरान[9]
नर		नारि	नर-नारि[10]
तति		सुर	तति-सुर[11]
दानव		देव	दानव-देव[12]
नृत्य		गीत	नृत्य-गीत[13]
सुर		जच्छ	सुर-जच्छ[14]
राम		रमा	राम-रमा[15]
नल		नील	नल-नील[16]

---

1. रा०वि०बा०का०01/2. रा०वि०बा०का०0132/3. रा०वि०अयो०का०0464
4. रा०वि०अयो०का० 620/5. रा०वि०अयो०का०0850/6. रा०वि०अर०का०0920
7. रा०वि०अर०का०01138/8. रा०वि०कि०का०01178/9. रा०वि०अयो०का०0666
10. रा०वि०सु०का०01393/11. रा०वि०सु०का०01516/12. रा०वि०सु०का०01581
13. रा०वि०लं०का०01841/14. रा०वि०लं०का०02257/15. रा०वि०लं०का० 2334
16. रा०वि०उ०का०02799

मात	पिता	मात-पिता[1]
जनम	मरन	जनम-मरन[2]
भाग	सुग	भाग-सुग[3]

<u>प्रातिपदिक</u> +	<u>धातु</u>	<u>समास</u>
निशा	चर्	निशाचर[4]
बसुधा	धार्	बसुधाधार[5]
जल	धार्	जलधार[6]
गो	चर्	गोचर[7]

<u>धातु</u> +	<u>धातु</u>	<u>समास</u>
सुन्	जा ।आई।	सुनआई[8]
देख् ।ता।	उठ्	देखताउठ[9]
कह् ।कही।	सुन्	कहीसुन[10]
सुन्	मिलेंस	सुनमिलेंस[11]
रच् । रचे ।	कह् ।कहे।	रचे कहे[12]

आलोच्य ग्रन्थ की भाषा के शोध अध्ययन सुविधार्थ उपलब्ध समास रचना को निम्नांकित श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है -

1- समस्त पद संज्ञा

2- समस्त पद क्रिया

---

1. रा० वि०उ०का०3318/2. रा० वि०उ०का०3343/3. रा० वि०उ०का०3407
4. रा० वि०सु०का०1415/5. रा० वि०लं०का०2101/6. रा० वि०अयो०का०799
7. रा० वि०अर०का०974/8. रा० वि०बा०का०40/9. रा० वि०अयो०का०646
10. रा० वि०अयो०का०767/11. रा० वि०अर०का०1149/12. रा० वि०अर०का०1158

नाना बिंजन फूल फल धूप अगर सिंगार ।[1]

छ बिंजन सात घर जामे पूरन मिया त्रिभुवन नाथ की ।[2]

2- <u>द्विगु समास</u> - उदाहरण स्वल्प प्रस्तुत ; यथा -

त्रिगुन [3], त्रिदोष [4], पंचवटी [5], त्रिभुवन [6], त्रैलोक [7], त्रिपटी[8], त्रिकूट [9], त्रिशूल[10]

3- <u>तत्पुरुष समास</u> - स्वल्प उदाहरणार्थ द्रष्टव्य हैं ; यथा -

<u>अ - कर्म</u> - मनोहर[11], सरनागत[12], आरत हरन [13];

<u>आ - करण</u> - पूरन पाप[14], राम सनेह[15], नारी बिबस[16], राम अनुराग [17]

इ - <u>सम्प्रदान</u> - होम समग्री[18], राज समाज [19]; रामनिवास[20], प्रेम - प्रतीत[21]

ई- <u>अपादान</u> - गुन हीन [22]; बलहीन[23], सीलहीन [24]; पर द्रोह [25]; रामबिरोधी[26]

---

1. रा० वि० लं० का० 2273/2. रा० वि० उ० का० 3007/3. रा० वि० बा० का० 89
4. रा० वि० अयो० का० 683/5. रा० वि० अर० का० 930/6. रा० वि० अर० का० 940
7. रा० वि० कि० का० 1320/ 8. रा० वि० सु० का० 1489/9. रा० वि० लं० का० 1998
10. रा० वि० लं० का० 2315/11. रा० वि० बा० का० 158/12. रा० वि० सु० का० 1680
13. रा० वि० सु० का० 1691/14. रा० वि० बा० का० 151/15. रा० वि० बा० का० 217
16. रा० वि० अयो० का० 555/17. रा० वि० सु० का० 1685/18. रा० वि० बा० का० 34
19. रा० वि० अयो० का० 713/20. रा० वि० अर० का० 934/21. रा० वि० कि० का० 1183
22. रा० वि० उ० का० 3357/23. रा० वि० लं० का० 1764/24. रा० वि० सु० का० 1494
25. रा० वि० अयो० का० 474/26. रा० वि० अयो० का० 3476

उ - सम्बन्ध - तातरंगत[1], भानुजी भेन[2], राजद्रोह[3], भूपगृह[4] सुवाधाम[5]

ऊ - अधिकरण- दुखाबीज[6], बोह-निमास[7], पाप-हिये[8], उर-पुलक[9]

4 - अव्ययीभाव समास - कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :-

यथायोग[10], निरतंक[11], यथा विधि[12], निरंतर[13], भली विधि[14], निहप्रति[15]

महाकवि चन्द्रकुल "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में ऐसे शब्द उल्लेखनीय हैं जिनमें "प्रति" का प्रयोग न कर संज्ञा शब्दों की द्विरुक्ति करके अव्ययीभाव समास निर्मित किए गए हैं। संज्ञा की द्विरुक्ति समाप्त करने के निमित्त "प्रति" का प्रयोग वांछित होता है। इस प्रकार के उदाहरण प्रचुरता से प्राप्त होते हैं; यथा-

तत्त तत्त[16], अंबर अंबर[17], पद पद[18], तांत तांत[19], ग्रह ग्रह[20], रोम रोम[21], अंग अंग[22], पन पन[23]

5- कर्मधारय समास - स्वल्प उदाहरण प्रस्तुत हैं; यथा -

अ - विशेषण पूर्वपद - सुदुर्क[24], पूरन प्रेम[25], महा किरा[26], दिव्य गिरा[27],

---

1. रा0 वि0अर0का0979/2. रा0 वि0 कि0का01322/3. रा0 वि0सु0का01497
4. रा0 वि0अयो0का0594/5. रा0 वि0बा0का0116/6. रा0 वि0 कि0का01212
7. रा0 वि0 कि0का01207/8. रा0 वि0अयो0का0601/9. रा0 वि0बा0का0269
10. रा0 वि0बा0का0246/11. रा0 वि0बा0का0393/12. रा0 वि0बा0का0416
13. रा0 वि0अयो0का0510/14. रा0 वि0लं0का02303/15. रा0 वि0उ0का02852
16. रा0 वि0उ0का03367/17. रा0 वि0सु0का01671/18. रा0 वि0सु0का01671
19. रा0 वि0सु0का01520/20. रा0 वि0सु0का01443/21. रा0 वि0अर0का01058
22. रा0 वि0अयो0का0653/23. रा0 वि0अयो0का0754/24. रा0 वि0बा0का062
25. रा0 वि0अयो0का0470/26. रा0 वि0 अर0का01070/27. रा0 वि0 कि0का01229

कटु बैन[1], सेत सिला [2]

ब - <u>विशेषणोत्तर पद</u> -

रघुत्तम [3], कमुरन [4], गिरवर [5], मगनायन [6], बचन मृदु[7]
बानी दीन [8], रघुबर[8 अ].

स - <u>उपमान पूर्वपद</u> -

ध्यान दीपक[9], कंज उर[10], छीर समुद्र[11], सोग हुतासन [12],
घनस्याम[13] कमल पद[14]

द- <u>उपमानोत्तर पद</u> - चरन सरोज[15], मुख कंज [16]

6- <u>बहुव्रीहि समास</u> है- उदाहरणार्थ कुछ समास प्रस्तुत हैं -
दसमाथ [17], दसकंठ[18], दसमुख[19], दसबदन[20], दससीस[21], दसकंधर[22]
दसानन[23], दसरथ[24], षटरस[25], चतुरानन[26]

आलोच्य ग्रन्थ "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में समासों का प्रयोग अधिक सरलता से उपलब्ध होता है। सभी प्रकार के समासों का प्रयोग पर्याप्त रूप से किया गया है।

---

1. रा० वि० सु० का० 1512/2. रा० वि० लं० का० 1845/3. रा० वि० उ० का० 2778
4. रा० वि० बा० का० 057/5. रा० वि० कि० का० 1215/6. रा० वि० अयो० का० 465
7. रा० वि० सु० का० 1518/8. रा० वि० अर० का० 1003/8 अ. रा० वि० लं० का० 2649
9. रा० वि० उ० का० 3221/10. रा० वि० उ० का० 2801/11. रा० वि० बा० का० 108
12. रा० वि० अयो० का० 581/13. रा० वि० बा० का० 091/14. रा० वि० अयो० का० 651
15. रा० वि० लं० का० 2620/16. रा० वि० उ० का० 2801/17. रा० वि० लं० का० 2520/
18. रा० वि० बा० का० 012/19. रा० वि० लं० का० 2522/20. रा० वि० लं० का० 2524
21. रा० वि० लं० का० 2528/22. रा० वि० लं० का० 2532/23. रा० वि० लं० का० 2549
24. रा० वि० लं० का० 2666/25. रा० वि० बा० का० 290/26. रा० वि० बा० का० 347

3.4 संज्ञा -रूप -रचना

"रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में संज्ञा-रूप-संरचना प्रातिपदकों में लिंग-वचन -कारक-संबन्ध दर्शित करने वाले विभक्ति- प्रत्ययों के योग से हुई है । शब्द-रचना की दृष्टि से आलोच्य ग्रन्थ में प्रातिपादिक 3 प्रकार के प्राप्त होते हैं -

1- रूढ़
2- यौगिक
3- सामासिक

शब्द रचना-विधान ‡विषय क्रम 3. ‡ के अन्तर्गत रूढ़ यौगिक एवं सामासिक प्रातिपदकों का विवेचन सविस्तार किया जा चुका है । यहाँ पर संज्ञा-रूप-रचना को सुस्पष्ट करने के लिए प्राति-पादिक अंश एवं विभक्ति प्रत्ययों का विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है । सुविधार्थ इसे 4 श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है -

1- प्रातिपादिक अंश
2- लिंग
3- वचन
4- कारक

3.5 प्रातिपादिक अंश -

संज्ञा के समस्त रूपों में उपलब्ध प्रकृति-तत्व‡अभिधार्थ-वाचक ‡ प्रातिपादिक अंश कहलाता है । लिंग-वचन -कारक संबंधदर्शी विभक्ति- प्रत्ययों के संयोग से प्रातिपादिक अंश की रूप-रचना सम्पन्न होती है , प्रातिपदकों के रूपों की प्राप्ति अन्त्य-ध्वनि के दृष्टिकोण

वे निम्नवत् है -

1- अ -

आलोच्य महाकाव्य में उपलब्ध समस्त संज्ञा शब्दों के अधिकतर प्रयोग इसी श्रेणी में आते हैं। समस्त ग्रन्थ में इस श्रेणी के प्रयोग का औसत एक सा प्राप्त होता है ; यथा -

राम[1], कृत[2], नर[3], चंदन[4], नाथ[5], मन[6], बाग[7], जीव[8], कुल[9], तात[10], जन[11], काल[12], सायक[13], गगन[14], तन[15], भाग[16], बालक[17], भुजा[18]

2- आ -

आकारान्त संज्ञा शब्दों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है। तुलनात्मक दृष्टि से अकारान्त संज्ञाओं की अपेक्षाकृत प्रतिशत कम है; यथा -

सखा[19], पिता[20], सिया[21], रसना[22], कथा[23], सिखा[24],

---

1. रा०वि०बा०का०9/2. रा०वि०बा०का०241/3. रा०वि०बा०का०423
4. रा०वि०अयो०का०433/5. रा०वि०अयो०का०619/6. रा०वि०अयो०का०826
7. रा०वि०अर०का०372/8. रा०वि०अर०का०1156/9. रा०वि०कि०का०1222
10. रा०वि०कि०का०1323/11. रा०वि०सु०का०1415/12. रा०वि०सु०का०1731
13. रा०वि०लं०का०1773/14. रा०वि०लं०का०1953/15. रा०वि०लं०का०2472
16. रा०वि०उ०का० 2857/17. रा०वि०उ०का०3129/18. रा०वि०उ०का०3353
19. रा०वि०उ०का०3444/20. रा०वि०उ०का०3135/21. रा०वि०लं०का०2634
22. रा०वि०लं०का०2398/23. रा०वि०सु०का०1747/24. रा०वि०सु०का०1483

अन्त्य स्वरों में परिवर्तन -

आलोच्य ग्रन्थ "रामविनोद" महाकाव्य में अन्त्य स्वरों की प्रयोग स्थिति परिवर्तनशील है । प्रायः छन्दानुरोध से दीर्घ स्वरांत संज्ञाएं ह्रस्व स्वरान्त और ह्रस्व स्वरांत संज्ञाएं दीर्घ स्वरांत हो गई हैं ; यथा-

आ > अ - गंग[1], निस[2], मात[3], सारद[4]

वस्तुतः उक्त प्रातिपदिक सब आकारांत हैं किन्तु छन्दानुरोध से अकारान्त कर दिए गए हैं ।

अ > आ - क्रोधा[5], सुगा[6], गुहा[7], शरीरा[8], सुरा[9]

उक्त प्रातिपदिक मूलतः अकारान्त होते हुए भी छन्दानुरोध से आकारान्त हो गए हैं ।

-अ - उ - आयसु[10], पसु[11], रघु[12], अंसु[13] ।अवधी।

अवधी में यह आज भी सजीव प्रवृत्ति है । इस प्रकार के प्रयोगों को वैकल्पिक कहा जा सकता है ।

- अ > ई - कुलही[14], सरनी[15], पाती[16], छाती[17]

अकारान्त संज्ञा प्रातिपदिक ईकारान्त हो गए हैं ।

---

1. रा० वि० उ० का० 3231/2. रा० वि० अयो० का० 0498/3. रा० वि० उ० का० 2766
4. रा० वि० लं० का० 2600/5. रा० वि० उ० का० 3097/6. रा० वि० उ० का० 2928
7. रा० वि० लं० का० 2710/8. रा० वि० अयो० का० 0630/9. रा० वि० लं० का० 2025
10. रा० वि० उ० का० 3460/11. रा० वि० उ० का० 3001/12. रा० वि० लं० का० 2712
13. रा० वि० लं० का० 2497/14. रा० वि० कि० का० 1381/15. रा० वि० उ० का० 3393
16. रा० वि० लं० का० 2235/17. रा० वि० कि० का० 1205

ई > अ - ईकारान्त संज्ञा प्रातिपादिक स्वल्प मात्रा में अकारान्त प्राप्त होते हैं ; जैसे -

नार[1], भामिन[2]

3. 6 लिंग - विधान

आलोच्य प्रबन्ध महाकाव्य "रामविनोद" के अन्तर्गत संज्ञा पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग में प्राप्त होती हैं । प्राणिवाचक और अप्राणिवाचक दोनों प्रकार की संज्ञाएँ दोनों लिंगों के अन्तर्गत आती हैं । लिंग निर्धारण के लिए निश्चित सिद्धान्त प्रतिपादित करना अत्यन्त कठिन है । किन्तु फिर भी दो आधार बनाए जा सकते हैं, यथा-

प्रथम -

शब्द गठन अर्थात अन्त्य स्वरों के आधार पर कुछ लिंगभाव उपलब्ध होता है ।

द्वितीय-

प्रयोग अर्थात वाक्यगत शब्द प्रयोगों के अनुसार लिंग स्पष्ट होता है ।

अकारान्त या व्यंजनान्त संज्ञाओं का लिंग-निर्धारण करना अत्यन्त कठिन है। इस प्रकार की संज्ञाएँ पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग दोनों में प्रचुरता से प्राप्त होती है । जैसे -

अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा रूप -

शंकर[1], वीर[2], जनक[3]

---

1 क. रा० वि० उ० का० 2784 / 2 क. रा० वि० बा० का० 328

1. रा० वि० बा० का० 11/2. रा० वि० बा० का० 122/3. रा० वि० बा० का० 309

सुन सो कथा सुंदर रामप्रिया अति दीन मलीन वियोग भारी ।[1]
वचन कहि कठोर पुनि फाँस त्यागी । कछु सम आय सो कंठ लगी ।[2]
वारिदा के तट भीर परी ।[3]
कपिकली सब देखा भागी सो कपी कथा मारग माँहि लोगाई ।[4]
सहित प्रेम तत्काल, चली पालकी जानुकी ।[5]
प्रति उत्तर दान दियेउ सबही जब रामकथा उन बाँच कही ।[6]
तत्काल सिया तहँ आय गई । रचना लखा सो उर भीत भई ।[7]

सामान्य रूप से कर्ता के लिंग के अनुसार क्रिया का लिंग परिवर्तित किया गया है । क्रिया का स्त्रीलिंग प्रायः इकारान्त एवं ईकारान्त । है सो सुस्पष्ट हो जाता है कि कर्ता स्त्रीलिंग है अन्यथा पुल्लिंग ; उदाहरणार्थ -

सा दिवढ़ै रघुनायक हाथ को धन को मन चोप बढ़ावत ।[8]
बंधु समेत सिये उर हेत को माहि पावन पावन आवत ।[9]
पुनि आपुहि रघुनाथ प्रभु गुरु के ढिग अति चित आय भये ।[10]
आवत देखा नरेश ... ।[11]
आशु चली मम श्रेष्ठ प्रभु कर देव सुमन अपराध हरी ।[12]
सुन निशाचर सुता वचन सुन्दर, भारत लखेउ निशाचर ।[13]
पद्धिप कीयेउ अगाध अन्न सद्धिप करी न माल ।[14]

---

1. रा० वि० सु० का० 1467/2. रा० वि० सु० का० 1571/3. रा० वि० लं० का० 1774
4. रा० वि० लं० का० 1946/5. रा० वि० लं० का० 2642/6. रा० वि० उ० का० 2965
7. रा० वि० उ० का० 3023/8. रा० वि० बा० का० 96/9. रा० वि० बा० का० 142
10. रा० वि० बा० का० 351/11. रा० वि० अयो० का० 500/12. रा० वि० अयो० का० 605
13. रा० वि० अयो० का० 767/14. रा० वि० अर० का० 963

पुल्लिंग -

मृदु बैन[1], चारु कुमार[2], बैन किरातन[3], लोचन ललित[4], बैन मनोहर[5], दारुन नाद[6], पुरन पाप[7], धीरे बन[8], सूक्ष्म देह[9], दारुन नीर[10], बिकट दल[11], चतुर बिवेक[12], बिकट भेष[13], काल कराल[14], दारुन तेज[15]

पुरुष वाचक सम्बन्ध कारकीय रूपों (सर्वनाम) से भी संज्ञाओं का लिंग स्पष्ट होता है। तुम्हरी - तुम्हारी, हमरी - हमारी से स्त्री लिंग संज्ञाओं का बोध होता है -

पुनि पाँय परेउ रिषिनायक के तुम्हरी कृपा जग लीक रही ।[16]
तुम्हरी कृपा भव ताप हरै ।[17]
तुम्हरी ममता मन ग्रास करै तौ धारै भुजमा रघुनाथ धनी ।[18]
मैं सिसु तुच्छ सरीर प्रभु जन कीरत दारुन है धौं तुम्हरी ।[19]
तुम्हारी कृपा कृपा प्रभु की काल के दल को छिन माँहि दहै ।[20]
सुनिये करुनाधन कृपा हमरी तुम्हरी भुजमा केहि भाँति भी ।[21]
कहेउ भूप सों तात बिनती हमारी ।[22]

---

1. रा० वि० बा० का० 218/ 2. रा० वि०, बा० का० 230/ 3. रा० वि० अयो० का० 506
4. रा० वि० अयो० का० 678/ 5. रा० वि० अर० का० 1069/ 6. रा० वि० अर० का० 1093
7. रा० वि० कि० का० 1215/ 8. रा० वि० कि० का० 1327/ 9. रा० वि० सु० का० 1427
10. रा० वि० सु० का० 1442/ 11. रा० वि० सु० का० 1565/ 12. रा० वि० लं० का० 1859
13. रा० वि० लं० का० 2205/ 14. रा० वि० उ० का० 3087/ 15. रा० वि० उ० का० 3092
16. रा० वि० बा० का० 247/ 17. रा० वि० अर० का० 875/ 18. रा० वि० उ० का० 3183
19. रा० वि० बा० का० 133/ 20. रा० वि० लं० का० 2707/ 21. रा० वि० उ० का० 3261
22. रा० वि० अयो० का० 615

ताके काल प्रभाव की साखी सुनी निदान।[1]

छल के बल सों गहि बाँधि लेउ उर कोप कृपान तव आनन दै।[2]

युवराज सम रन जीत दामी निकट आये राम के।[3]

सुनत बैन ताके ...।[4]

स्त्री लिंग -

रवि की गति अस्त बिलोकिहिये ...।[5]

सुखद भाग्य की रेखा नाहि पेख पाये।[6]

नाच की समाप्ति भाय नीर ते बिरोलई।[7]

तिहुँ लोक जाकी सरन।[8]

जिनकी कला करनी कर सो।[9]

गुन सील प्रभाव कहि भारत की। अनुराग कथा रस स्वारथ की।[10]

ताकी महिमा बेद कहि बरन न सकै बिचार।[11]

पुल्लिंग संज्ञाओं को स्त्री लिंग बनाते समय उनकी अन्त्य-ध्वनियों में कई प्रकार के परिवर्तन प्राप्त होते हैं - जिन्हें निम्नवत् स्पष्ट किया गया है ; जैसे -

1- आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं में- आ के स्थान पर "-ई" प्रत्यय का प्रयोग किया गया है, उदाहरणार्थ -

- -ई : राना (राणा) - रानी[12], डोला - डोली[13], सखा- सखी[14]

---

1. रा० वि० कि० का० 1220/2. रा० वि० सु० का० 1416/3. रा० वि० लं० का० 2358
4. रा० वि० उ० का० 2980/5. रा० वि० बा० का० 090/6. रा० वि० अयो० का० 0699
7. रा० वि० अर० का० 0939/8. रा० वि० कि० का० 1305/9. रा० वि० सु० का० 1581
10. रा० वि० लं० का० 2146/11. रा० वि० उ० का० 3374/12. रा० वि० उ० का० 3464
13. रा० वि० लं० का० 2393/14. रा० वि० सु० का० 1444

2- ईकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं में "-ई" का "-इ" में परिवर्तन करके "-इन" प्रत्यय का योग किया गया है -

- इन : माली - मालिन[1], जोगी - जोगिन[2]

- इनी : जोगी - जोगिनी[3]

3- अकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं में "-अ" के स्थान पर निम्न प्रत्ययों का योग प्राप्त होता है ; यथा-

- ई : छुर - छुरी[4], पुर - पुरी[5], चोर - चोरी[6],
  सख - सखी[7], पात - पाती[8], जाल - जाली[9],
  तरुन - तरुनी[10], दास - दासी[11], अयान - अयानी[12],
  उजियार - उजियारी[13], संकर - संकरी[14], कन - कनी[15],
  अँधियार - अँधियारी[16]

- इनी : पीताम्ब - पीताम्बिनी[17]

-आई : लोग - लोगाई[18]

-इ : राजकुमार - राजकुमारि [18 (अ)]

-इका : पत्र - पत्रिका[19]

-आ : सुत - सुता[20], पिय - पिया[21], कमल - कमला[22]

---

1. रा० वि० लं० का० 0227/2. रा० वि० अर० का० 01015/3. रा० वि० लं० का० 02499
4. रा० वि० लं० का० 01937/5. रा० वि० लं० का० 01849/6. रा० वि० लं० का० 01976
7. रा० वि० लं० का० 01998/8. रा० वि० सु० का० 01744/9. रा० वि० सु० का० 01733
10. रा० वि० सु० का० 01436/11. रा० वि० अर० का० 0997/12. रा० वि० बा० का० 0179
13. रा० वि० बा० का० 067/14. रा० वि० बा० का० 064/15. रा० वि० बा० का० 059
16. रा० वि० बा० का० 0371/17. रा० वि० अयो० का० 0710/18. रा० वि० लं० का० 01946
18. (अ) रा० वि० सु० का० 01523/19. रा० वि० बा० का० 0215
20. रा० वि० अयो० का० 0688/21. रा० वि० बा० का० 083/22. रा० वि० अयो० का० 0570

4 - बिना परिवर्तन के " - नी " प्रत्यय का योग ; जैसे -

- नी : पति - पतिनी[1]

5 - संस्कृत के मूल व्यंजनांत शब्दों में " - ई " प्रत्यय का योग -

- ई : युवक । युवा । मूल युवन - युवती[2]

6 - छन्दानुकूल स्त्रीलिंग- बोधक प्रत्यय न प्राप्त होने पर आलोच्य ग्रन्थ में - नारि, - त्रिया - रानी - बहू जोड़ कर स्त्रीलिंग शब्द निर्मित उपलब्ध होते हैं -

कुनारि[3], रघुपति नार[4] ।नारि। , राम त्रिया[5], कुल - रानी[6], कुल बहू ।ना[7]

3.7 वचन - विधान

आलोच्य महाकाव्य "रामविनोद" के अन्तर्गत वचन-विधान की दृष्टि से दो रूप में संज्ञायें प्राप्त होती हैं; यथा -

1- एकत्व बोधक रूप   2- आधिक्य बोधक रूप

इन्हें क्रमशः संज्ञा का एक वचन और बहुवचन रूप कहा जा सकता है । संज्ञा रूपों में पाए जाने वाले वचन के विकारी-प्रत्ययों को , कारक-सम्बन्धों को स्पष्ट करने वाले विकारी -प्रत्ययों से पृथक

---

1. रा०वि०उ०का०295/2. रा०वि०बा०का०198/3. रा०वि०बा०का०62
4. रा०वि०कि०का०1195/5. रा०वि०अर०का०1093/6. रा०वि०अयो०का०550
7. रा०वि०बा०का०192

करके दिखलाना सम्भव नहीं। बहुवचन के द्योतन के दो ढंग हैं -

1- संश्लिष्ट विधान या

2- विश्लिष्ट विधान

संश्लिष्ट विधान के अन्तर्गत विभक्तियाँ आती हैं।

विश्लिष्ट विधान के अन्तर्गत स्वतन्त्र शब्द तथा पुनरुक्ति।

विश्लिष्ट - विधान के अन्तर्गत पृथक से गन - गना, लोग, वृन्द, जन आदि शब्द जोड़कर भी एक वचन से बहुवचन का बोध कराया गया है; जैसे -

॥1॥ गन - गना - बिधि सुर मुनिवर बधगन बड़ो भयन निधि आन।[1]
कुमारग कुगागन भयकन केसर उठ हार सुकर बाय करी।[2]
बहुरि मुद्रिका हाथ, दई राम तम सिर गन।[3]
येहि पुर बसी मिताचम, ताई हीन तम काल।[4]
कुा अप्सरीगन गाय मंगल ताल बीना बाजई।[5]

॥2॥ लोग - पुर के पुर लोग प्रयोजन लेकर बोनान ते रच ध्यान टारी।[6]
पालक प्रभु पुर लोग, रावेंद्र कुमार सुखा।[7]
नरनारि पुरीजन लोग सबै कुछ अपार देख विचार करें।[8]

॥3॥ वृन्द - आ लिया लोक सलोक रहै प्रगटे शाल वृन्द महा अपकारी।[9]
देखी बाग वन वृन्द बहु, पावक बोजित मोर।[10]

---

1. रा0 चि0 बा0 छं0 24/2. रा0 चि0 उ0 छं0 882/3. रा0 चि0 कि0 छं0 1324
4. रा0 चि0 सु0 छं0 1456/5. रा0 चि0 लं0 छं0 1785/6. रा0 चि0 बा0 छं0 415
7. रा0 चि0 अयो0 छं0 428/8. रा0 चि0 उ0 छं0 2719/9. रा0 चि0 बा0 छं0 15
10. रा0 चि0 उ0 छं0 872

नाग बृन्द अनेक तमाल लसैं तिनकी ललना रचना रस बासैं ।[1]

आसु दुष्ट अधाम सठ के प्रान गहि सायक हरौं ।[2]

जिनके गुन लेखा विरंच पढ़ै ।[3]

गहि हाथ कृपान सो प्रान हरौं ।[4]

प्रबल भानु अरु शीत चहुँ ओर लावैं। उसी काल माया असुर पेठावैं।[5]

कुसुमंदिर मे अति मोद बढ़ेउ चहुँ ओर सोकाचिन कैंध लरैं ।[6]

रज पंक तुरंग न पांव धरैं । जल अरु अन्न ते नाहिं पान करैं ।[7]

3.8 कारक – विधान

कारक संज्ञा अथवा सर्वनाम का वह रूप होता है जो वाक्य में किसी अन्य पद से अपना संबंध स्पष्ट प्रदर्शित करता है । प्रस्तुत "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में संज्ञा रूप दो प्रकार के उपलब्ध होते हैं । अतः संज्ञाओं के 2 कारक हैं –

1– मूल
2– तिर्यक

1– मूल कारक के अन्तर्गत निर्विभक्तिक रूपों को प्रदर्शित किया गया है।

2– तिर्यक कारक के अन्तर्गत अन्य रूपों । परसर्ग रहित या परसर्ग सहित को दर्शाया गया है ।

इन दोनों प्रकार के कारक रूपों के द्वारा वाक्य में कर्तृत्व, कर्मत्व , करणत्व आदि अनेक प्रकार के संबंध प्रकट किए गए हैं ।

---

1. रा० वि० अर० का० 873/2. रा० वि० कि० का० 1216/3. रा० वि० लं० का० 1816
4. रा० वि० सु० का० 1682/5. रा० वि० लं० का० 2490/6. रा० वि० उ० का० 2719
7. रा० वि० उ० का० 2992

कही रघुबीर सुनो दुख टारि ।[1]

हतो निशाचर राम ।[2]

पहुँचो लछमन बेग तुम, तोकट राखिय नैन ।[3]

अब बरनौं कपि भाग्य निधु ।[4]

सुत बेग मिलौ अब आय हमै ।[5]

ता समीप बरनै सुखा निधु मति धीर गमीर ।[6]

सुन सठ मंद गमीर ।[7]

यदाकदा स्थानों पर संस्कृत से प्रभावित रूप भी प्रयुक्त दृष्टिगोचर होते हैं -

पैकार पै रघुबीर टारि सरीर सुन्दर लोचनं ।[8]

3.8.2 तिर्यक रूप (तिर्यक कारक) -

मूल रूपों के अतिरिक्त अन्य प्रकार के रूपान्तरों को तिर्यक के रूप में स्वीकार किया गया है । विशेष रूप से इनका प्रयोग परसर्गों के साथ होता है । प्रायः परसर्ग-योजना का आश्रय, कर्त्ता को छोड़कर अन्य कारक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति के लिये किया गया है । परसर्ग-रहित और परसर्ग-सहित प्रयोगों को देखकर तत्कालीन प्रवृत्ति का मूल्यांकन निम्नांकित प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है -

1- परसर्ग प्रयोग की प्रवृत्ति प्रारम्भ हो चुकी थी ।

2- परसर्गों का प्रयोग करके ही कारक सम्बन्ध प्रकाशित किये जायँ,

---

1. रा० वि०बा०का०402/2. रा० वि०अ०का०909/3. रा० वि०अ०का०1068
4. रा० वि० कि०का०1179/5. रा० वि०सु०का०1512/6. रा० वि०लं०का०1909
7. रा० वि०लं०का०1944/8. रा० वि० लं० का० 2660

सुना राम सुन्दर कहेउ जब ही ।[1] (करण)

रथ दीन गिरा सुना बैन कहे ।[2] (करण)

तब मोहि कृपानिधि गोद धरेउ ।[3] (अधिकरण)

सम्बन्ध कारक आलोच्य ग्रन्थ में प्रचुरता से उपलब्ध होते हैं; यथा -

सुन रामकृपा सुधा धाम अवे ।[4] (सम्बन्ध)

दुखकुल करुणा ईश ।[5] (सम्बन्ध)

कोमल कमल समान पद ।[6] (सम्बन्ध)

ले आयसु प्रभु पादुका ।[7] (सम्बन्ध)

तो स्वामि कंठन ताम छूटे पाय पद रथ पावनी ।[8] (सम्बन्ध)

कीन्हें बनवासी सुत सुता रानी जोग विलासी त्याग धाम ।[9] (सम्बन्ध)

सुख धाम सब देखिये ।[10] (सम्बन्ध)

सागर उत्तर तीर टिकेउ कटक रघुवर प्रबल ।[11] (सम्बन्ध)

रघुवर चरित अगाधा ।[12] (सम्बन्ध)

श्याम नील ससि नील सुत वारिद कोमल गात ।[13] (सम्बन्ध)

लोक लीक कुलकान्ह हृदै सदा रघुनाथ उर ।[14] (सम्बन्ध)

<u>बहुवचन</u> -

आरत भंजन लोक कहै ।[15] (कर्ता)

---

1. रा0 वि0सु0का01457/2. रा0 वि0लं0का01887/3. रा0 वि0उ0का02831
4. रा0 वि0बा0का0136/5. रा0 वि0बा0का0399/6. रा0 वि0अयो0का0523
7. रा0 वि0अयो0का0851/8. रा0 वि0अर0का0893/9. रा0 वि0कि0का01168
10. रा0 वि0सु0का01448/11. रा0 वि0लं0का01799/12. रा0 वि0लं0का02144
13. रा0 वि0उ0का02800/14. रा0 वि0उ0का02937/15. रा0 वि0बा0का0380

<u>क्रियाविभक्तियाँ</u> - । 1 । <u>मूल एक वचन</u> -

- उ - आलोच्य ग्रन्थ "रामविनोद" महाकाव्य के अन्तर्गत मात्र एक स्थान पर अकारान्त पुल्लिंग शब्द - अ > - उ में परिवर्तित प्राप्त होता है । यथा -

कर्त्ता । एक वचन । -

- उ - रामु गिरा सुन जानुकी विहँस रही मुसकाय ।[1]

।2 । <u>मूल बहुवचन</u> -

- हिं , - न क्रियाविभक्तियों के योग से रूप-संरचना होती है -

<u>कर्त्ता । बहुवचन।</u> -

- हिं - सत्त सती गति ताप्नुहिं दीन्हो ।[2]

- न - पुनि विप्रन बेद रिया समुझाई ।[3]

तेहि मिलन चौरेउ आग ।[4]

सुन के सब दूतन बात कही ।[5]

उपर्युक्त मूल बहुवचन रूपों के अतिरिक्त शून्य । 0 । क्रियाविभक्ति-प्रत्यय के योग से निर्मित बहुवचन रूप भी परिगणित किए जा सकते हैं; यथा-

- 0 - लखि संत पुन काम सभा ।[6]

दीन प्रवीन अधीन सबै सखि ताप कथा भयकारि तरे।[7]

---

1. रा0वि0अयो0का0463/2. रा0वि0उ0का03173/3. रा0वि0बा0का0318
4. रा0वि0अयो0का0675/5. रा0वि0सु0का01732/6. रा0वि0अयो0का0474
7. रा0वि0बा0का09

- न - बैताल गीतन गावई ।[1]

बहुर अनुग्रह आन कर कपिन बुलायेउ पास ।[2]

करण - । एक वचन । -

-हिं - प्रभु मिले बसिष्टहिं आय ।[3]

नर बैनहिं सुधित विवेक नहीं ।[4]

भान तब रामहिं मिले ।[5]

। बहु वचन । -

-हिं : पुनि भेंट सासुहिं अंक भार ।[6]

पुनि मिले मातहिं आन ।[7]

-न : कुशलाय ते तजि नाथ सुमती राम दृगन दिखावई।[8]

गंग महिमा कहाई का बैनन अपाय है ।[9]

कहे पद बेद पुरानन है ।[10]

तब कोप भारत तनि बनायेउ प्रबल गहि हाथन हयेउ ।[11]

पुनि हने लातन कोट गहि ।[12]

तब लातन हाथन सीस हने ।[13]

पुनि हाथन अंक लगाय लिये ।[14]

---

1. रा० वि० बा०का० 1015/2. रा० वि० लं०का० 2622/3. रा० वि० अयो०का० 798

4. रा० वि० सु०का० 1480/5. रा० वि० लं०का० 2393/6. रा० वि० अयो०का० 587

7. रा० वि० अयो०का० 837/8. रा० वि० बा०का० 259/9. रा० वि० बा०का० 936

10. रा० वि० कि०का० 1248/11. रा० वि० सु०का० 1568/12. रा० वि० लं०का० 2182

13. रा० वि० लं०का० 2455/14. रा० वि० उ०का० 2850

सम्प्रदान – । एक वचन ।

-हिं: दै प्रभु राज विभीषनहिं ।[1]

आयनीत रामहिं राज दीन्हीं ।[2]

। बहु वचन ।

-हिं: कापुर काकहिं भोग ।[3]

-न : गुरु चरनन सिर नाय ।[4]

अपादान – । एक वचन । –

-हिं: छिन पैक तरीरहिं त्याग दयेउ ।[5]

। बहु वचन । –

-न: चान्हटार बुन्दन करीं तो ।[6]

अधिकरण – । एक वचन । –

-हिं: सब पेत तरीरहिं भुम्म परे ।[7]

निमिहिं असुर भट कू उर भारत मारेउ बाना।[8]

मन हेत निकेतहिं आन तिन्हैं ।[9]

-न: क्रोध के दापन भीतहि परे ।[10]

। बहु वचन । –

-हिं: उहि दिन के सीतहिं पीर भनी ।[11]

---

1. रा०वि०सुं०का०1714/2. रा०वि०अयो०का०468/3. रा०वि०उ०का०333।
4. रा०वि०किं०का०2592/5. रा०वि०सुं०का०1560/6. रा०वि०किं०का०246।
7. रा०वि०अर०का०1106/8. रा०वि०किं०का०2138/9. रा०वि०उ०का०3093
10. रा०वि०अयो०का०795/11. रा०वि०किं०का०2428

प्रानहिं झूठ ममता लागई ।[1]

-मः: अति चारु कपोलन कुंडल भारी ।[2]

भला हाथन रंग रचाय दिये ।[3]

केहि हेत निसिचर केश धारे ।[4]

रच दीन्हा पाँवन परे ।[5]

कहि दीन्हा परमन परी ।[6]

<u>फलात्मक शब्दांश</u> -

-औ: अपनी तुला चाप न भाय धरैं ।[7]

<u>सम्बन्ध - (एक वचन)</u> -

-हिं: पल में पठउँ जमलोकहिं पायक ।[8]

पद मो तिहिं रोक रहीं मन को ।[9]

<u>(बहु वचन)</u> -

-हिं: देखा हमें कश्मीर दोऊ धाम तेच समूह महाबल धामहिं ।[10]

तब देव पितापहिं ध्यान धरैं ।[11]

-मः: रजा अनुज मारीन तुला धावे ।[12]

प्रभु जी हम दास न दास भये ।[13]

नर सब सो देखन चाय धरेउ ।[14]

---

1. रा० वि० उ० का० 3287/2. रा० वि० बा० का० 0242/3. रा० वि० बा० का० 0250
4. रा० वि० अयो० का० 0479/5. रा० वि० अयो० का० 0558/6. रा० वि० अयो० का० 0587
7. रा० वि० उ० का० 2719/8. रा० वि० बा० का० 0125/9. रा० वि० अयो० का० 0740
10. रा० वि० बा० का० 0128/11. रा० वि० उ० का० 3321/12. रा० वि० बा० का० 0200
13. रा० वि० बा० का० 0354/14. रा० वि० अर० का० 1030

परसर्ग - योजना -

संज्ञा (अथवा सर्वनाम) निर्दिष्ट शब्दों के साथ अनेक प्रकार के परसर्गों के योग से विभिन्न प्रकार के कारक- सम्बन्धों को सुस्पष्ट करने का प्रयास किया गया है । विभिन्न कारक-संकेतों को स्पष्ट करने की यह विधा- विशिष्ट है । परसर्गों के पूर्व संज्ञाओं के निर्विभक्तिक और सविभक्तिक दोनों प्रकार के शब्दों को प्रयुक्त किया गया है । सविभक्तिक शब्दों के साथ परसर्गों का प्रयोग नहीं के बराबर है । अधिकतर निर्विभक्तिक शब्दों के साथ ही परसर्ग प्रयुक्त हुए हैं ।

<u>कर्ता</u> - ने
<u>कर्म</u> - को, कहँ, कौ
<u>करण</u> - से, सें, सों, सौं, सो , सौं , कौ
<u>सम्प्रदान</u>- कहँ, हित, केहित , हेत , हेतु , कौ
<u>अपादान</u> - सों, सौं, से
<u>सम्बन्ध</u> - क, के, को, की, के , कौ
<u>अधिकरण</u>- मैं, मो, मौ, महँ, माहि, माहिं , माहीं , माँहि , माहिँ
माँह , पर , पै

<u>कर्ता</u> -

ने- आजु अवध रघुपति ने ।[1] (निर्विभक्तिक शब्द के साथ)
विधि का धाम ताहि भाव राम
ने दिये ।[2] (निर्विभक्तिक शब्द के साथ)
सकत नाहिं स्याम करि रिपु ने।[3] (निर्विभक्तिक शब्द के साथ)

---

1. रा0वि0अयो0का0481/2. रा0वि0सु0का01730/3. रा0वि0कि0का01907

4- सर्वनाम - रूप -रचना

4.1 लिंग- वचन - कारक -

आलोच्य ग्रन्थ "रामविनोद" महाकाव्य के अन्तर्गत सर्वनाम-रूपों की विविधता के दर्शन होते हैं । संज्ञा-रूपों के प्रातिपदिक अंशों के निर्धारण करने के समान सर्वनाम-रूपों के प्रातिपदिक अंशों का निर्धारण कर लेना सरल नहीं है । लिंग-वचन की दृष्टि से विभक्ति -प्रत्यय-योजना संज्ञा-रूपों में जितनी स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है उतनी सर्वनाम -रूपों में नहीं । बहुवचन के स्पष्टीकरण के लिए विभक्ति-प्रत्यय-योजना न करके पृथक प्रातिपदिक अंश (सर्वनाम) का प्रयोग है । मूलरूप ही प्रातिपदिक स्वीकार किए जा सकते हैं । मूलरूप ही प्रातिपदिक स्वीकार किए जा सकतेहैं । कर्ता के अतिरिक्त अन्य कारक सम्बन्धों के स्पष्टीकरण के लिए तिर्यक् रूपों में विभक्तियों या परसर्गों अथवा दोनों का योग प्राप्त होता है। संज्ञा-रूपों में प्राप्त होने वाले विभक्ति -प्रत्ययों और परसर्गों के समान ही सर्वनाम-रूपों में कारक-सम्बन्धों को सुस्पष्ट करने वाले विभक्ति-प्रत्यय और परसर्ग उपलब्ध होते हैं । अस्तु संज्ञा-रूपों के तुल्य सर्वनाम रूप भी कहे जा सकते हैं । रूप-रचना तथा कार्य कारिता के विचार से समस्त सर्वनामों को निम्नवत् व्यवस्थित किया जा सकता है -

4.2 पुरुष वाचक सर्वनाम -

4.2.1 उत्तम पुरुष -

निम्नांकित रूप प्रयुक्त हैं ।-

एक वचन	बहु वचन
मूल रूप- मैं , हौं	हम
तिर्यक् - मोहिं , मोहीं , मो	हम , हमें
संबंध - मोर , मेरे	हमरी, हमारी, हमरे, हमारे, हमरो, हमारो, हमारी

बहुर दिखाऊँ तोहि मैं, कंचनपुर कुआ धाम ।[1]

"मैं" के प्रयोग की अपेक्षा "हौं" का प्रयोग आलोच्य ग्रन्थ में मात्र एक स्थान पर उपलब्ध होता है -

हौं - कृत हौं रघुबीर निमित्त प्रबल दशानन मात ।[2]

मूल (बहुवचन) -

"हम का प्रयोग मूल बहुवचन में कम किन्तु अनेक स्थानों पर एक वचन (आदरार्थ) में प्रयुक्त किया गया प्राप्त होता है -

हम (बहुवचन) -

हम जादव लोग सो नीच सदा,
धारिये पग सो मन जो निबही ।[3]
वे राजा त्रिलोक के, हम जाचक अति रंक ।[4]

एक वचन में प्रयोग -

जिनकी बहुभाँति सँवार तहाँ प्रभु की हम दासन दास भये।[5]
हम दास दासन दास सेवक आदि सो स्वामी दये ।[6]
कहा रच दारुण दुःख किये हम आजु अनाथ विहीन भये ।[7]
अति उत्तम भूम्य विचार करेउ । नर का जहाँ हम आय धरेउ।[8]

तिर्यक् रूप -

मोहिं तथा मोहीं का प्रयोग आलोच्य ग्रन्थ में तिर्यक रूपों में प्राप्त होता है । सम्पूर्ण महाकाव्य के अन्तर्गत कुल 128 स्थानों पर "मोहिं" तथा केवल 2 स्थानों पर "मोहीं" प्रयुक्त किया गया है । कर्म कारक सम्बन्ध द्योतन के लिए सर्वाधिक व्यवहृत "मोहिं" हुआ है । एक स्थान पर केवल "मोहिं" का परसर्ग युक्त प्रयोग है । अर्थ की दृष्टि से कारकों का निर्धारण

1. रा० वि०कि०का०1914/2. रा० वि०यु०का०1691/3. रा० वि०उ०का०2965
4. रा० वि०उ०का०2966/5. रा० वि०अ०का०354/6. रा० वि०अ०का०598
7. रा० वि०कि०का०2610/8. रा० वि०उ०का०2744

होता है । यथा-

<u>मोहिं</u> -

ताते दीजै मोहिं, राम लखन सुन्दर दोउ ।[1]

निस बासर तैं बरनै उपमा तुम मोहिं कृपानिधि प्रेम बढ़ै ।[2]

ताते रघुवर मुक्ति फल दीजै मोहिं प्रकास ।[3]

दयेउ सो राज काज मोहिं ताज भूप श्रेष्ठ को ।[4]

मोहिं अहार दयेउ बिधि ने सुन तस्ता गिरा धन फूल अहारी ।[5]

तेहि को फल पूरन मोहिं दिये ।[6]

मोहिं समान न दास और तउ तोहिं समान न सोग कहै ।[7]

आदि मोहिं नारद कही, भई सोइ बिधि रेखा ।[8]

हासिहैं पुरजन लोग मोहिं, करिहैं धर्म बिनास ।[9]

बिधि मोहिं जन्म सँवार अवनी कुवाद छिन नाहीं दियेउ ।[10]

धन्य धन्य कृपा मेन, दीपक दीन्हों ग्यान मोहिं ।[11]

<u>मोहीं</u> - तस्त पद तीन अति क्लत मोहीं ।[12]

क्रोध पहु तत्त रघुनाथ मोहीं ।[13]

परसर्ग सहित प्रयोग -

<u>मोहिं सो</u> -

मोहिं सो दास कही उर मैं पुनि सीय दई तुम को करि दासी ।[14]

---

1. रा० मि० बा० का० 105/2. रा० मि० अयो० का० 518/3. रा० मि० अर० का० 899
4. रा० मि० कि० का० 1211/5. रा० मि० सु० का० 1407/6. रा० मि० सु० का० 1683
7. रा० मि० लं० का० 2136/8. रा० मि० लं० का० 2170/9. रा० मि० उ० का० 2962
10. रा० मि० उ० का० 3151/11. रा० मि० उ० का० 3503/12. रा० मि० कि० का० 1222
13. रा० मि० लं० का० 2535/14. रा० मि० बा० का० 220

<u>एक वचन तिर्यक रूप "मो" -</u>

"मो" का प्रयोग परसर्ग रहित तथा परसर्ग सहित प्राप्त होता है -

<u>मो -</u> निसि वासर मो दृग अंजन हैं ।[1]

<u>मो पर -</u> तोहि मान निधान किधेउ उर मो पर सिद्ध प्रताप तो आप गईं।[2]

<u>मो को -</u> कृपा धाम मो को कृपा पेम कीजै ।[3]

पवनसुत मोको अभै दान दीन्हो ।[4]

दै भगति दान निधान मोको बहुर ते बोलन लगे ।[5]

<u>मो कहँ-</u> देखा विरंच विधाता, तब अतिथा मो कहँ दई ।[6]

<u>मो तो -</u> कृपा करै रघु भूप, सो विचार मो तो कहउ ।[7]

उर कृपा पाय रिसाय मो तो अधम नाता कर गही ।[8]

तुमसों रघी न प्रीति, सो कारन मो तो कहेउ ।[9]

बरने मो तो सर्व गुन, धामै अर्थ सँवार ।[10]

<u>मो सो -</u> करी चातुरी बुद्धि ते काक मोसो ।[11]

विकृत रूप ।"हम्" का प्रयोग परसर्ग सहित तथा विक एक वचन में प्राप्त होता है; यथा-

<u>एक वचन -</u>

<u>हमको -</u> नाथ अकाय की साथ बड़ो हमको मुनि कौसिक दोषित पीन्हो।[12]

हमको वनराज नरेस दयेउ ।[13]

अब दान देउ निधान हमको,भगति पूरन जो सुनी ।[14]

---

1. रा० वि० पु० का० 1611/2. रा० वि० बा० का० 149/3. रा० वि० अ० का० 998

4. रा० वि० लं० का० 2157/5. रा० वि० उ० का० 3296/6. रा० वि० पु० का० 1435

7. रा० वि० कि० का० 1384/8. रा० वि० लं० का० 2272/9. रा० वि० उ० का० 3197

10. रा० वि० उ० का० 3286/11. रा० वि० उ० का० 3289/12. रा० वि० बा० का० 106

13. रा० वि० अ० का० 816/14. रा० वि० अ० का० 893

पुनि जोर दोउ कर बोल उठेउ हमको रघुनाथ सनाथ करे ।[1]
हमको फिन बांटा मिलेगा लियेउ ।[2]
तब तो छठ आय मिली हमको ।[3]

<u>हमको</u> - आरत भंजन दान करी हम को नित दास निरंतर कीन्हों ।[4]
दयउ भूप ढेंक राज हमको देव मुनि सुख पायई ।[5]

<u>हमको</u> - कृपा धर्म कृपाय कहीं तुमको हमको करि प्रीति विवेक लिये ।[6]
तरोंगे जब नाथ हमको अधम अपार काल ।[7]

<u>बहुवचन</u> -

<u>हम ते</u> - तुम तारे हम ते अधम, दे गुन कीरत भोग ।[8]
तिर्यक् का "हमें" तथा हमें एक वचन तथा बहुवचन में प्रयुक्त हुआ है ।

ये सर्वनाम परसर्ग रहित प्राप्त होते हैं -

<u>एकवचन</u> -

हमैं - नावका चढ़ो पुनि पार भये ।
कर बोधा हमैं ग्रह को पठये ।[9]
आजु हमैं अपनो करि के हरके अपुंज कृपाकर कीनों ।[10]
आजु हमैं सुख सिंधु भई सो दई रघु बेद अतीत धनी ।[11]
तब भांति हमैं सुख धाम दियेउ ।[12]

<u>हमें</u> - हमें दयेउ प्रदान, ढेंक राज विहाय बर ।[13]
देखा तथा सुख बोल उठे रस काम हमें का धाम कोउ ।[14]

---

1. रा० वि० वि०का०1227/2. रा० वि०कि०का०2284/3. रा० वि०उ०का०3180
4. रा० वि०बा०का०033/5. रा० वि०अयो०का०0563/6. रा० वि०उ०का०3404
7. रा० वि०उ०का०3508/8. रा० वि०उ०का०2916/9. रा० वि०अयो०का०0762
10. रा० वि०अर०का०0913/11. रा० वि०सु०का०1528/12. रा० वि०उ०का०2818
13. रा० वि०अयो०का०0549/14. रा० वि० वि०का०1310

केहि हेत हमैं जनमेउ जग मै जननी सहित जात बिलात धरी।[1]
गहि पान हमैं तुअ दास करेऊ ।[2]

<u>बहुवचन -</u>

<u>हमै -</u> निजु भाषित हमै बरदान करी ।[3]
हमै लगाय न येक गुन अवगुन बड़े जाहि ।[4]

<u>हमैं -</u> प्रभु आयु तनाथ हमैं करिके अवधोपम के गन कोट हरे ।[5]
आयु तनाथ हमैं करिये भृगुनाथ कुमार धार क्रोध हरो ।[6]

उत्तम पुरूष । मूल रूप । "हम" सर्वनाम का बलात्मक रूप प्राप्त होता है । इसकी संरचना "हूं" प्रत्यय के योग से हुई है -

<u>हम हूं -</u> हम हूं अब संग सरीर तजैं ।[7]

संबंध- कारक में प्रयुक्त मुख्य रूप "मोर" । एक वचन । तथा "हमरे" । बहुवचन । है । आलोच्य ग्रन्थ "रामविनोद" महाकाव्य में लिंग, वचन तथा विभिन्न विभक्ति प्रत्ययों के योग से अनेक रूप व्यवहृत किये गये हैं । एक वचन में "मोर" "मेरे" क्रमशः एक और तीन स्थानों पर प्रयुक्त किये गये हैं ।बहुवचन में हमरी, हमारी, हमरे, हमारे, हमरो, हमारो तथा हमारौ रूप प्रयुक्त हुये हैं । यथा -

<u>एक वचन-</u>

मोर - रिझि हुते अब मोर, देखा बिधु तापूं सुमन ।[8]

---

1. रा० वि०उ०का०2724/2. रा० वि०उ०का०2831/3. रा० वि०कि०का०2665
4. रा० वि०उ०का०2966/5. रा० वि०अयो०का०454/6. रा० वि०बा०का०380
7. रा० वि०उ०का०3140/8. रा० वि०सु०का०907

<u>मेरे</u> - सदा तेरा मेरे किये भोग भारी ।[1]
बड़े नीत धारी बली धाम मेरे ।[2]
कहाँ है सखा रघुनाथ मेरे ।[3]

संस्कृत सर्वनाम "मम" का आलोच्य महाकाव्य में कुल 280 बार प्रयोग किया गया है । परसर्ग सहित कुल 1 बार प्रयुक्त किया गया है ; यथा-

<u>मम</u> - विनय वचन मम मान राम कारित वरदान कर ।[4]
हीन प्रतिज्ञा वचन मम, दुस्तर श्राप दुराय ।[5]
ममहित निदान सबै तुमको ।[6]
येक रंचै उर ध्यान मनोहर ते मम मूरत जो उर भावै ।[7]
बहुर कही रघुनाथ, मम भ्राता सुंदर निपुन ।[8]
देखाउँ भूषन चैन, प्रान नाम मम जानुकी ।[9]
तो प्रेम सहित बरनी गिरा सुधा मम प्रान की ।[10]
सुख गयेउ मम सूल, उपये तुम्हे प्रबल सुत ।[11]
पुनि लंक जीत सुजान। भयेउ सुफल मम वरदान ।[12]
पैहउ तुम विश्राम, मानो गरुड़ विवेक मम ।[13]

परसर्ग सहित प्रयोग -

<u>मम सो</u> - यह कही तुम सो तात मम सो सत्यता उर आनिये ।[14]

---

1. रा० वि० लं० का० 2024/2. रा० वि० लं० का० 2069/3. रा० वि० उ० का० 2821
4. रा० वि० बा० का० 01/5. रा० वि० बा० का० 404/6. रा० वि० अयो० का० 490
7. रा० वि० अयो० का० 855/8. रा० वि० अर० का० 990/9. रा० वि० कि० का० 1196
10. रा० वि० सु० का० 1465/11. रा० वि० लं० का० 1835/12. रा० वि० लं० का० 2625
13. रा० वि० उ० का० 3302/14. रा० वि० उ० का० 3430

<u>बहुवचन</u> -

<u>हमरी</u> - सम्पूर्ण "रामविनोद" महाकाव्य में केवल एक बार प्रयुक्त है -

सुनिये अब नाथ कथा हमरी तुम्हरी अनुमता येहि भाँति भी।[1]

<u>हमारी</u>- आलोच्य महाकाव्य में केवल एक बार प्रयोग किया गया है -

कहेउ भूप सो तात विनती हमारी ।[2]

<u>हमरे</u> - आलोच्य ग्रन्थ में कुल 14 बार प्रयुक्त है -

अपनी कृपावान निदान लखौ हमरे अपराध न नैक निहारो।[3]

राम सनेह सदा तुम्हरे हमरे तन प्राण निदान अहै ।[4]

तुम तौ कपि दृष्टि परेउ हमरे ।[5]

हमरे उर में अति प्रीति बढ़ी रघुवीर विलोचन धीर निहारो।[6]

<u>हमारे</u> - आलोच्य महाकाव्य में मात्र एक बार उपलब्ध है -

है मम सोदर भ्रात लियेउ प्राण धन्य अहै सुत जोग हमारे।[7]

<u>हमरो</u> - "रामविनोद" महाकाव्य में मात्र एक बार -

जिनको हमरो तिनको न बनै ।[8]

<u>हमारो</u> - मात्र एक बार प्रयुक्त कियागया है -

कही रघुवीर सुनो हनु धीर सुना नहिं लायक होत हमारो।[9]

<u>हमारी</u> - केवल 2 बार उपलब्ध होता है -

कुछ राम सहित लखौ उर में यहु ध्यान अंकाहित नाथ हमारी ।[10]

तुम्हरे बल तेज अतीत सदा हमारी हित मंगल पूरि रहेउ ।[11]

---

1. रा0वि0उ0का0326/2. रा0वि0अयो0का0615/3. रा0वि0बा0का05

4. रा0वि0अयो0का0518/5. रा0वि0सु0का01735/6. रा0वि0उ0का0344

7. रा0वि0बा0का045/8. रा0वि0कि0का01936/9. रा0वि0बा0का0402

10. रा0वि0बा0का0209/11. रा0वि0बा0का0396

4.2.2. <u>मध्यम पुरुष</u> - निम्नांकित रूप प्रयुक्त हैं -

	<u>एक वचन</u>	<u>बहु वचन</u>
मूल रूप -	तै , तैं	तुम
तिर्यक् रूप-	तोहि, तोहिं, तोही, तोहीं, तोह, तोहँ, तुहि, तो	तुम्है, तुम्हे, तुम्हैं
संबंध-	तव, तुव, तुम, तुअ, तेरी, तेरे	तुम्हरे, तुम्हारे, तुम्हरी, तुम्हारी, तुम्हरो, तुम्हरी, रावरी

मूल रूप एक वचन मध्यम पुरुष सर्वनामों का प्रयोग क्रिया के कर्ता की भाँति किया गया है।

<u>मूल रूप - (एक वचन) -</u>

इन रूपों में तै, तैं के प्रयोग आदरार्थ रूप में या तिरस्कार बोधक रूप में प्रयुक्त किये गये उपलब्ध होते हैं; यथा-

<u>तै</u> - मुनि नारद कुं विशारद तै बनाकर मोहिं पवित्र किये ।[1]
महीप धर्म धाम तै सदा सनेह राम तै ।[2]
छल के बल लौं सब बालक तै मति पालके आजु अनीति करी ।[3]

---

1. रा0चि0उ0प0पृ0433/2. रा0चि0उ0पृ0पृ0688/3. रा0चि0चि0पृ01247

बहुरि समादि प्रबोधा, करी सखा विश्राम तुम ।[1]

तुम रची सेतु बनाय ।[2]

तुम बिनु सुधा रस लोचन हिय प्रभु पावन आवन बैन कहे ।[3]

तिर्यक । एक वचन । -

सर्वनाम तौ का प्रयोग कर्ता कारक के अतिरिक्त सभी कारक में आवश्यकता से प्राप्त होता है । "तौ" सर्वत्र सम्बंध के रूप में प्रयुक्त किया गया है, यथा-

तोहि - रस भोगहिं पाय नरे स तुम्हहु मद पान अकांक्षित तोहि भयेउ।[4]

करिहौं मैं निजु धाम, तोहि सिरोमन भाग मनी।[5]

मन तौ सखा तोहि संकरन मे मन मे अति सेव गुमान धरो ।[6]

निहारेउ पुनि तोहि, सन्मुख आसन दिव्य है ।[7]

तोहिं - अति सुख उपजे तोहिं, मानो वचन विवेक राय ।[8]

मैं कीन्हो अनेह, बान तोहिं निजु प्रान सम।[9]

देहीं बान अहार, तोहिं दसानन प्रान हत ।[10]

कछु बैन अनेक उपाय औ विन तोहिं दारिद्र निवार भयेउ ।[11]

आजु तोहिं भच्छन करौं, मिटै सर्व अपराध ।[12]

तोहिं सुर साधु सिव सुक योगी ।[13]

सखा तोहिं सुवारि मुख बैन कहे ।[14]

---

1. रा० वि०यु०का० 1392/2. रा० वि०सुं०का० 1768/3. रा० वि०उ०का० 2732
4. रा० वि० कि०का० 1300/5. रा० वि०यु०का० 1474/6. रा० वि०सुं०का० 2314
7. रा० वि०उ०का० 3193/8. रा० वि०बा०का० 105/9. रा० वि०अयो०का० 519
10. रा० वि०अर०का० 1082/11. रा० वि० कि०का० 1300/12. रा० वि०यु०का० 1431
13. रा० वि०सुं०का० 1851/14. रा० वि०उ०का० 3177/

तोही - जरै मैन दूनी कठोर दुष्ट तोही ।[1]

तोहीं- आजु गहि हनौं रन हाँक तोहीं ।[2]

तोह - केहि हेत पठयेउ तोह ।[3]

तोहँ - दिय तोहँ दुय बर भूप ।[4]

तुहि - बिधि करी आजु अनाथ । तुहि बिपत तुन दसमाथ।[5]

तो - मम पुरन पुन्य तो धर्म औ कठौर तो उपमा छबि काज करे।[6]

तब तो उदार चारु तो बिचार आन्यौ ।[7]

परते तरते पद पावन तो हरको तरते गति लोहत भाई ।[8]

पै केतु कृपाकार आनंन तो मम प्रानन पेम तो दान करी ।[9]

तिर्यक् रूप-

तिर्यक् रूप बहुवचन मध्यम पुरुष सर्वनामों का प्रयोग कर्ता कारक को छोड़कर अन्य कारकों में प्राप्त होता है । तिर्यक् रूप "तुम" परसर्ग रहित प्रयुक्त बहुवचन रूप निम्नांकित हैं -

तुम्हैं - बहुभाँति तुम्हे उपदेश दिये ।[10]

तुम्हे - तुम देखा तुम्हे कुशा कोट भारेउ ।[11]

नाहिं दोष तो लखन हरि तुम्हे ।[12]

तुम्हैं - केहि काम तुम्हैं बनराज दयेउ तो कहौ करुनानिधि सारंग पानी।[13]

---

1. रा० वि०सु०का०1476/2. रा० वि० लं०का०2535/3. रा० वि०लं०का०2229

4. रा० वि०अयो०का०0495/5. रा० वि०लं०का०2382/6. रा० वि०अयो०का०0434

7. रा० वि०अयो०का०0653/8. रा० वि०लं०का०1986/9. रा० वि०उ०का०3337

10. रा० वि०लं०का०2607/11. रा० वि०अर०का०0876/12. रा० वि०सु०का०1502

13. रा० वि०अयो०का०0550

तिर्यक् का "तुम" परसर्ग -युक्त- प्रयुक्त हुए हैं -

<u>तुम ते</u> - कुछ गयेउ मम मूल, उपजे तुम ते प्रबल सूल ।[1]

<u>तुम सों</u> - भगति राह तुम सों कहेउ, जो बरनी विधि ग्यान ।[2]

यह कही तुम सों तात मम सों सत्यता उर जानिये ।[3]

<u>तुम सौं</u> - आदि कथा अपनी तुम सौं कर जोरि विधि गुन सोधन कहीं ।[4]

<u>तुम को</u> - मोहिं सों दास कहावौ उर मैं पुनि सीय दई तुमको करि दासी ।[5]

विहंसि मुनि आनन देख प्रभु तुमको चतुरानन जैसा कहैं ।[6]

आसु हनौं तुमको पल मे कर ले बर चाप प्रताप करौं ।[7]

तुम को पुनि दान विशेष दिये ।[8]

<u>सम्बन्धात्मक रूप</u> - तोहि[8 ।क]

मध्यम पुरुष सर्वनाम सम्बन्ध वाची विशेषणों में एक वचन के अन्तर्गत प्रयुक्त: तेरी, तेरे क्रमश: आलोच्य ग्रन्थ में कुल 2 बार एवं 3 बार प्रयुक्त किये गये हैं । बहुवचन में तुम्हरे, तुम्हारे, तुम्हरी, तुम्हारी, तुम्हरो तथा तुम्हारो आदि रूप प्रयुक्त पाये जाते हैं । लिंग, वचन तथा कारक -भेद प्रयोग के अनुसार इनमें समाहित हैं ।

एक वचन में तव, तुव तथा तुव सम्पूर्ण महाकाव्य में क्रमश: 1 एवं 2 तथा 1 बार प्रयुक्त पाये गये हैं जो संस्कृत के प्रभाव से हैं । किन्तु "तुव" सर्वाधिक रूप से अनेक स्थलों पर पाया जाता है । इसे वैकल्पिक प्रयोग माना जा सकता है -

---

1. रा० चि० बा० का० 1835/2. रा० चि० उ० का० 2914/3. रा० चि० उ० का० 3430

4. रा० चि० बा० का० 0344/5. रा० चि० बा० का० 0220/6. रा० चि० अयो० का० 0635

7. रा० चि० बा० का० 2550/8. रा० चि० उ० का० 2810/8।क। रा० चि० बा० का० 0149

मध्यम पुरुष सम्बन्ध वाची आदरार्थक रूप "रावरी", आप के अर्थ में सम्पूर्ण आलोच्य ग्रन्थ में मात्र 1 बार प्रयुक्त है; जैसे -

रावरी- अन्तरन कीरति रावरी पुर तीन मे परमान है ।[1]

4.3. संकेतवाचक सर्वनाम

4.3.1. दूरवर्ती -

इस प्रकार के रूपों का प्रयोग अन्य पुरुष के द्योतन के लिये किया गया है । प्रस्तुतीकरण हेतु व्यवहित आधार का निम्नवत है -

	एक वचन	बहुवचन
मूल रूप -	सो,	से, तिन, तिन्ह
तिर्यक -	ता हि, तेहि, तेही, तेहीं, ताहु, ये, उह, उहु, वोही, तोप, ता	तिन्हे, तिन्हें, तिन्है, तिन्हैं

मूल रूप । एकवचन । -

"सो" रूप कर्ता कारक में प्रयुक्त किये गये हैं ।"सो" का प्रयोग पुरुष संकेत वाचक दूरवर्ती और सह-सम्बन्ध वाचक में प्राप्त होता है ।"सो" का प्रयोग प्रचुरता से प्राप्त होता है; उदा० -

सो- प्रथम अनेक प्रकार करे सो धारि कर सो पद भूपति रानी ।[2]
निजु कारन केस कही मुख सो सो करै रघु सेवक प्रेम हिये ।[3]

---

1. रा० भि०उ०छं०2956/2. रा० भि०बा०छं०0320/3. रा० भि०अयो०छं०0433

तब त्याग कुठार मतिमंद तबै तिन देखत कंचन कांप तवी ।[1]

तिन आय समीप असीस कही ।[2]

सम्पूर्ण आलोच्य ग्रन्थ में मात्र 1 बार "तिन्ह" प्रयुक्त प्राप्त होता है ; जैसे -

<u>तिन्ह</u> - तिन्ह दीन्हो बरदान तेहि, पूरन सदा सुहाग ।[3]

<u>तिर्यक् (एकवचन) -</u>

(1) परसर्ग रहित (सविभक्तिक) : निम्न रूप प्रयुक्त प्राप्त हैं -

<u>ताहि</u> - ताहि पढ़े रघुनायक धाय चले बन को मन मोद बढ़ायक ।[4]

ताहि करौं जुवराज अबै छिन जो जगदीस तिहूँपुर भावैं ।[5]

देखा ताहि भरे नैन, जानेउ देव नरेस सुत ।[6]

मन तुम सम ताहि गहि भुज लाऊँ ।[7]

ताहि सनेह भरे तुम देह सो भो अब नेह न नेक करै ।[8]

कर अच्छत भच्छ अभच्छ सबै गहि ताहि चली संके अपनी ।[9]

ताहि मैं मन पन कीन्हो धरौं धनी कुराय तो ।[10]

<u>तेहि</u> - पर्याप्त मात्रा में प्रयुक्त किया गया है -

कुआ संपत की धनिता चिंता तेहि देखि कुबेरहिं डारि दियेउ ।[11]

तेहि मारग मे बानबृन्द बिलोक सो आनन प्रानन भाय भरे ।[12]

---

1. रा० वि०कि०छं०1833 / 2. रा० वि०उ०छं०2727 / 3. रा० वि०कि०छं०2714

4. रा० वि०बा०छं०96 / 5. रा० वि०अयो०छं०441 / 6. रा० वि०अर०छं०956

7. रा० वि० वि०छं०1222 / 8. रा० वि०सु०छं०1472 / 9. रा० वि०कि०छं०1825

10. रा० वि०उ०छं०2774 / 11. रा० वि०बा०छं०155 / 12. रा० वि०अयो०छं०600

तौ सुन मिटैंत बिलोकि तेहि जात भये रघुबीर ।[1]

बहुर तीन भार हाथ, कियेउ ताडन सम तोषन तेहि।[2]

तेहि अवसर दशशीश, आयेउ ताहित समाज तहँ ।[3]

तेहि काल देखा बेहाल सुत सुकुमार उर धारिय करेउ ।[4]

तेहि तजि आये पास।[5]

<u>तेही</u> - अल्प उपलब्ध होता है -

करौ लोचना सिंह बनवास तेही ।[6]

<u>तेहीं</u>- स्वल्प उपलब्ध होता है -

देउँ पुर राय सुभा ताय तेहीं ।[7]

<u>तासु</u>- तासु निकोट किरीट रच, आयेउ आतुर काम ।[8]

तासु अनुज सर घाय तै, कियेउ निदान सुभा ।[9]

सुन तासु रोदन राम ।[10]

स्याम पर कै उर संकि धायक भाई महातन विकल होय तासु रानी।[11]

<u>पै</u> - पुनि पावन पै पद वारिय कै चतुरानन जो उर ध्यान धरै ।[12]

तस्त गिरा मममान निरंतर पै कवहीन कहाँ मन पायेउ ।[13]

रन माँहि महाबल दानव पै पल भेकला निमिट प्रान हये ।[14]

<u>उह</u> - आलोच्य ग्रन्थ में कुल 3 बार प्रयुक्त प्राप्त होता है; यथा-

उह राम की सुता स्याम सुभा पेहि अँग अनेम अनेंत सिये ।[15]

---

1. रा० वि० अ०का० 1149/2. रा० वि० कि०का० 1176/3. रा० वि० सु०का० 470

4. रा० वि० लं०का० 2301/5. रा० वि० उ०का० 2918/6. रा० वि० अ०का० 952

7. रा० वि० कि०का० 1222/8. रा० वि० अयो०का० 953/9. रा० वि० अ०का० 1028

10. रा० वि० कि०का० 1258/11. रा० वि० लं०का० 2590/12. रा० वि० बा०का० 251

13. रा० वि० सु०का० 1666/14. रा० वि० उ०का० 2964/15. रा० वि० बा०का० 365

तातो सहित सनेह, चली मोहिं निदिर तीर मै ।[1]
तातो तर्यों सरीर, सिन्धु नीर धारा प्रबल ।[2]
तातो तनी बिसाखा उर, करी सकल पनि नैन ।[3]

ताकी- मात्र 1 बार उपलब्ध होता है -
ताकी महिमा वेद कहि, बरन न सकै बिचार ।[4]

ताके - ताके काल प्रभाव की, ताकी सुनी निदान ।[5]
चली नीर धारा बहेउ, सोधा ता के ।[6]

ता को- ता को छेउ न कीजिये, बरनत कुछ बिबेक ।[7]
करी नास ता को सदन काल पाये ।[8]

ता कहँ- कर सो पद गहि कोप तब, ता कहँ होउ कुमार ।[9]

ता हित- येक अब देउ धीर ता हित होउ न ता हि मैं ।[10]
ता हित कलाधार, करउ पुनीत पवित्र नर ।[11]

ता माहिं- बाहु सुबाहु की बाँह करी पुनि जारि दयेउ मिन सीतलता माहिं।[12]

तो को- सवाद तात तो को दिये ध्यान धीरा ।[13]

तेहि सो- देहि देखत की जन लीक सदा तेहि सो सत्ता हठ कौन करे ।[14]

तेहि मै - भवसागर भारत दारुन है तेहि मै पद पूरन पोत भयेउ ।[15]

तेहि के - सब अवनि चीत जोग भयेउ तेहि के बल सो पदवी पद पाई ।[16]

तेहि को - तेहि को अब राम सो बाम कहै ।[17]

---

1. रा० वि० कि०का० 1368/2. रा० वि०सु०का० 1452/3. रा० वि०लं०का० 2568
4. रा० वि०उ०का० 3374/5. रा० वि० कि०का० 1220/6. रा० वि०लं०का० 2205
7. रा० वि०अयो०का० 555/8. रा० वि०लं०का० 2025/9. रा० वि०लं०का० 1884
10. रा० वि० कि०का० 1242/11. रा० वि०उ०का० 3479/12. रा० वि०बा०का० 128
13. रा० वि०लं०का० 1899/14. रा० वि० आ०का० 381/15. रा० वि०उ०का० 2912
16. रा० वि०बा०का० 406/17. रा० वि०लं०का० 2403

तेहि छिन- तेहि छिन काक सरीर रघु, कली अघनि हुआ प्रेह ।[1]
तेहि हेत- दुख नायक आदि सहायक है तेहि हेत हिंदै जनि संक करो ।[2]
ताहिसों- ताहि सों कोसलपानि मनोहर राम उठायबे को बल पायेउ ।[3]
ताही के- ताही के लंगूर सों, बांधेउ ताहि प्रचार ।[4]

तिर्यक् एक वचन का विभिन्न परसर्गों से प्रयुक्त होकर विभिन्न कारक सम्बन्ध सुस्पष्ट करते हैं ।

तिर्यक् (बहुवचन) -

(1) परसर्ग रहित (लकिभाविक) -

तिन्है - चंद तिन्है सुमनारि सबौर कर सौ गहि पान सों सौन खिलावैं ।[5]
अनेक पुरान विवेक तिन्है रसना रचि ग्यानन सों समुझायो ।[6]

तिन्हैं- रन दौंक तिन्हैं गुन नाम कहे ।[7]
पुनि राम तिन्हैं बहु बोधन कहेउ ।[8]

तिन्है - सुभदान तिन्है बर सों बरिये ।[9]
तिन्है देखा सनमान नहिं मैं कीन्हौं ।[10]

तिन्हैं- पुरलोक को रंज साज सबै रघुनाथ तिन्हैं उर बोधन कैं ।[11]
सम जायकजान तिन्हैं करिहैं ।[12]

(2) परसर्ग सहित (तिर्यक् बहुवचन) -
इस रूप के अन्तर्गत "तिन" के साथ विविध परसर्गों का प्रयोग करके अनेक प्रकार के कारक-सम्बन्ध स्पष्ट किए गए हैं। उदा० -

---

1. रा० वि० उ० का० 3358/ 2. रा० वि० सु० का० 1582/ 3. रा० वि० बा० का० 173
4. रा० वि० लं० का० 2266/ 5. रा० वि० बा० का० 78/ 6. रा० वि० अयो० का० 742
7. रा० वि० उ० का० 3089/ 8. रा० वि० उ० का० 3235/ 9. रा० वि० लं० का० 2673
10. रा० वि० उ० का० 3333/ 11. रा० वि० अयो० का० 593/ 12. रा० वि० लं० का० 1948

एक वचन	बहु वचन
तिर्यक- यहि, यही, याहि, येहि	ये

मूल । एक वचन । -

"यह," "यहु", "इह" पर्याप्त प्रयुक्त हुए हैं -

यह - यह पेज तैयार किये करिये ।[1]

पठिहै हम तो यह वेद कथा यह बात निरोधार तोष्ट धारी ।[2]

काक तन प्रगट यह भाँति भानी ।[3]

यहु- प्रीत अउ भाव की रीत यही तो कहै यहु तत्व मतो प्रत रागी।[4]

बम कबी सुजान सुभाव कहेउ बरषा यहु पूरन लोक रहैं ।[5]

यहु दिव्य पूरन पुन्न अवतार राम सो मोहिं दीजिये ।[6]

पुनि घोर कला रचनीत तबी यहु विक्रम लोकन जाहु किये ।[7]

पुनि बोलि उठे रघुनाथ प्रभू यहु दिव्य गिरा सुजा तो सुखरासी[8]

कही पुनि राम यहु दिव्य बानी ।[9]

येहु - येहु प्रबल कबी अजान पूरन पाप सो केहि विधि टरै ।[10]

महि तेंट कंचन आदि प्रभू येहु कारन बुद्धि विवेक करेउ ।[11]

येहु दारुन कालभाल सुनो केहि भाँति अघ भ्रम ताप हरै ।[12]

येहु रंग तरंग विनोद कला सुरनायक पाय नहीं सपने ।[13]

येहु तरत सुजा महि माहिं तबी ।[14]

---

1. रा0 वि0नि0का02673/2. रा0 वि0उ0का02923/3. रा0 वि0उ0का03372

4. रा0 वि0बा0का0360/5. रा0 वि0अयो0का0635/6. रा0 वि0 कि0का01254

7. रा0 वि0सु0का01588/8. रा0 वि0नि0का01781/9. रा0 वि0उ0का02758

10. रा0 वि0अयो0का0744/11. रा0 वि0अर0का01030/12. रा0 वि0 कि0का01219

13. रा0 वि0नि0का01853/14. रा0 वि0उ0का02743

इह- रघुनायक मोहिं कृपा करके इह प्रौढ कृपान निदान हरी ।[1]

कही बैन गुरदेव इह सिद्धवानी ।[2]

करुना करिके मुनि बैन कहौ इह दिव्य सुधारस अनुमानी ।[3]

तन त्याग विराग सुहाग लहौ तोक-ही इह बासर धन्य धरौ ।[4]

दारुन बारिधि नीर इह को तरि सकै अगाधा ।[5]

जातो पाई देह इह भंजिन पाप विकार ।[6]

इहु- इहु सुन्दर सीय जो मंदिर मे सोइ सिद्ध किधौ गुन सोध दये ।[7]

येह- तरुनी दुजा पाय फिरो बन मे येह दिव्य कलागुन कवन गनौ ।[8]

मूल । बहुवचन । -

ये- ये आदि अनादि अनंत अयै विशिष्ट है बर हेत फिरे बन मे ।[9]

कायो काल मति हीन, ये सुधरै पानि कहा ।[10]

नाहिं किरीट रघुबीर ये कृपा लछन बदन दल ।[11]

इन- इन किंउ अपनो नास ।[12]

तिर्यक् । एक वचन । -

संश्लिष्ट एवं विश्लिष्ट दोनों प्रकार के रूप आलोच्य ग्रन्थ में प्राप्त होते हैं -

। । । परसर्ग रहित -

याहि- याहि संकट पाय प्रहारन मे केहि कारन धरौ मम प्रान रहे ।[13]

यही - करिये करुना रघुनायक को बरदान यही मम पाय हिये ।[14]

---

1. रा० चि० बा० का० 377/2. रा० चि० अयो० का० 800/3. रा० चि० अर० का० 870
4. रा० चि० कि० का० 1250/5. रा० चि० सु० का० 1638/6. रा० चि० उ० का० 3313
7. रा० चि० बा० का० 347/8. रा० चि० उ० का० 3183/9. रा० चि० अर० का० 903
10. रा० चि० सु० का० 1749/11. रा० चि० लं० का० 1985/12. रा० चि० सु० का० 1597
13. रा० चि० अयो० का० 719/14. रा० चि० बा० का० 188

में प्रयुक्त प्राप्त हुए हैं -

(1) प्राणि वाचक (2) अप्राणिवाचक ।

इसके अतिरिक्त विशेषण की भाँति प्रयुक्त इसका एक तृतीय रूप भी पाया जाता है -

एक वचन व बहुवचन

मूल- (1) प्राणिवाचक-को,

(2) अप्राणिवाचक-का,

(3) विशेषण रूप-कौन,कवन

तिर्यक-(1) प्राणिवाचक-काहि,केहि किन

(2) अप्राणिवाचक- कहा

मूल (एक वचन) -

कर्ता कारक सम्बन्ध स्पष्ट करने में "को" का प्रयोग प्राप्त होता है -

(1) प्राणिवाचक को-

को ताहि जाने, बेद माने, कुछ आने सिद्ध है ।[1]

तब तनुजा रूप-कुम्भ यहू, को आने उर धीर ।[2]

आज इनौं तोहि समर मैं, को करिहैं तन मान ।[3]

(2) अप्राणिवाचक - का-

अब का पर चित्त कठोर भयेउ ।[4]

का कपि भाल इन्ने हाल तें अब काल कहा अपने मन कीन्हीं ।[5]

---

1. रा० वि०कु०का० 1584/2. रा० वि०लं०का० 1920/3. रा० वि०लं०का० 2460

4. रा० वि०लं०का० 2424/5. रा० वि०लं०का० 2459

। 3 । विशेषण का -

कौन- कारन कौन नरेस कही केहि हेत तोनांगेहिं पाँय पखारे ।[1]

बिपत राम दीन्ही हरे कौन पीरा ।[2]

कवन- कवन भूप सुर नागगन, किंनर सुध्ध सरीर ।[3]

कवन काज आये भवन, ले कांप पंकज देह ।[4]

कवन दोष बाढ़ेउ प्रबल, तीन्ही काक सरीर ।[5]

तिर्यक् । एकवचन । -

। 1 । प्राणिवाचक- परसर्ग रहित प्रयोग -

काहि - रन काहि जीतेउ, किहि रीतेउ, अवर को दारुन गनी ।[6]

समगैंद गहेउकर ती कर ले तब तेप अर्ताक्षित काहि दिये ।[7]

केहि - कहौ कथा रघुबीर, केहि बन कियेउ निवास तिन ।[8]

काल के ब्याल सम प्रबल कायाद है चोट केहि गहे बन्धूक धारी ।[9]

परसर्ग सहित - कारक सम्बन्धों को स्पष्ट करने केलिये परसर्गों का प्रयोग प्राप्त होता है ; यथा -

केहिके - ये सुलनाथ कहो केहि के हरि प्रभु दोउ किसी सारंगधानी ।[10]

केहिको- केहि को रघुनायक पी ति लियेउ ।[11]

अति दारुन क्रोध कृसान्न मे केहि को उर ताप न ताप करै ।[12]

। 2 । अप्राणिवाचक - । परसर्ग रहित । -

मूल तथा तिर्यक दोनों प्रकार के सर्वनामों का, कहा का प्रयोग "क्या " के अर्थ में किया गया है -

---

1. रा० वि०बा०का०32/2. रा० वि०सु०का०1676/3. रा० वि०अर०का०1024
4. रा० वि०सु०का०1577/5. रा० वि०उ०का०3163/6. रा० वि०सु०का०1584
7. रा० वि०लं०का० 1921/8. रा० वि०अयो०का०679/9. रा० वि०लं०का०2027
10. रा० वि०बा०का०166/11. रा० वि०लं०का०1928/12. रा० वि०उ०का०3252

कहा- जाहि न भोग की सिद्धि सो सिन को सुहा चाहकहा बरनारी।[1]

कहा भागुनरेस धानी कहा रचना की सिधि।[2]

देउँ कहा बरदान मैं कपि कुछ जोग न जासु।[3]

परसर्ग सहित -

केहि हित- केहि हित प्रान निदान, लीन्हो काक सरीर तुम।[4]

केहि हेत- रचेउ जोग केहि हेत, सुन्दर सुकुमार सुजान प्रभु।[5]

केहि हेत त्याग निकेत सिसु रच जोग बन भारग कढ़े।[6]

तिर्यक (बहुवचन) - प्राणिवाचक -

रूप निम्न हैं -

किन - मम प्रान निदान सो भान, कछु बैन लखा किन आजु हरे।[7]

किन दीन्हो बलिदान सुख, बोल वचन दुका द्रोह।[8]

कछु बैन गिरा किन ताहि हनेउ।[9]

किन तोहि हनेउ रन सागर मे गुन आगर सो बर कुछ कहौ।[10]

4.5 सम्बन्धवाचक तथा सह सम्बन्ध वाचक

4.5.1 सम्बन्ध वाचक -

सम्बन्ध वाचक सर्वनाम के प्रयुक्त रूप इस प्रकार हैं -

	एक वचन	बहुवचन
मूलरूप -	जो	जो, ये, जिन,

---

1. रा० वि०कां०वा०1907/2. रा० वि०कां०वा०2257/3. रा० वि०सु०वा०2736
4. रा० वि०उ०वा०3306/5. रा० वि०बा०वा०988/6. रा० वि० वि०वा०1166
7. रा० वि०अर०वा०1108/8. रा० वि०सु०वा०1577/9. रा० वि०कां०वा०2105
10. रा० वि०कां०वा०2374

एक वचन	बहुवचन
तिर्यक् - जेहि, जाहि, जा, जासु, जाहीं, जा-, जेहि -।	जिन्है , जिन्है

मूल । एकवचन । -

जो- आजु मनोरथ पूरन कै तब देउँ हिये हठ जो मति ठानी ।[1]

अब देउ हमैं बरदान दोउ शुभ मान प्रमान जो आदि करे ।[2]

अब दान देउ निदान हम को भागति पूरन जो सुनी ।[3]

जो पलटी नहिं मति मै तो छूटेउ मम काल ।[4]

साधुन को उपदेश, जो नहीं मानि भाग्य भार ।[5]

दरसी परसी हुग आनन जो ।[6]

जो कही रसना बैन ।[7]

राम विनोद सुनि नर जो रचि प्रीति निरंतर प्रेम भरे ।[8]

दै राज तिलक बिराज लोचन ताप मोचन जो सुनी।[9]

मूल ।बहुवचन। - जे, जिन प्रचुरता से प्राप्त होते हैं, यथा-

जो- पदकंज पराग रचे अवनी तिय के उर लोचन सदा जो बसी ।[10]

जे- सिंह मर्गि भुजा पशु जे उर मास विरोधा तबि तजि डारे ।[11]
त्रिलोक लोक ईश जे रचे समस्त योग से ।[12]

सब योग क्रिया कर सीरज जे ।[13]

सट बाय कीन्हे धामी। जे नीरा रच कुल कर्म ।[14]

---

1. रा० वि०बा०का०166/2. रा० वि०अयो० का०506/3. रा० वि०अर०का०893
4. रा० वि० कि०का०1208/5. रा० वि०सु०का०1687/6. रा० वि०लं०का०1930
7. रा० वि०उ०का०2877/8. रा० वि०बा०का०9/9. रा० वि०अयो०का०444
10. रा० वि०बा०का०69/11. रा० वि०बा०का०122/12. रा० वि०अयो०का०658
13. रा० वि०अर०का०1122/14. रा० वि० कि०का०1369

जाहि रचे हुम नारि नवीन तब पाहन देह सतीगति पाई।[1]

परसे चरन सरोज तिन जाहि कियेउ निज दास ।[2]

प्रभु करै करुना जाहि ।[3]

जा- आलोच्य ग्रन्थ में मात्र अकार प्रयुक्त किया गया है । "जा उर" का युग्म प्रत्येक स्थान पर पाया गया, यह एक विचित्र संयोग है; यथा -

जा उर बुद्धि प्रताप बड़ो धारि नित सरासन से अधिकारी ।[4]

कर गहि पट को अवनि माहिँ, जा उर बढ़ेउ विकार ।[5]

मित्र द्रोह जा उर बसै, तो नाहिँ भावत मोहिँ ।[6]

जासु- सम्बन्ध कारक को स्पष्ट करने के लिए प्रयोग किया गया है -

भुवन अउ अकास बास लोक मे प्रकास जासु ।[7]

अजित जहाँ सुलोचना सुन तुव लोचन जासु ।[8]

जोग कला पति जासु रचै ।[9]

जाहीं- सखी पास की कुछ बेकुछ जाहीं ।[10]

। 2 । परसर्ग सहित प्रयोग -

जाकी- तिहुँ लोक जा की सरन ।[11]

जाके- सदा प्रान के प्रान रघुनाथ जा के ।[12]

जाके उर पद भान, पवन तनै हुन प्रेम मम ।[13]

जाको - बांकैउ जाको पथमृत, प्रकट चीत संग्राम ।[14]

सोई संत सुजान, जा को चाहीं राम मुम ।[15]

---

1. रा० वि०कां०का०1946/2. रा० वि०कां०का०2620/3. रा० वि०उ०का०3386

4. रा० वि०बा०का०184/5. रा० वि०कां०का०1960/6. रा० वि०उ०का०3335

7. रा० वि०अयो०का०653/8. रा० वि०कां०का०2364/9. रा० वि०उ०का०3201

10. रा० वि०कां०का०1911/11. रा० वि० कि०का०1305/12. रा० वि०अयो०का०709

13. रा० वि०सु०का०1634/14. रा० वि०कां०का०2290/15. रा० वि०उ०का०2925

तिर्यक् । बहुवचन । -

इस प्रकार के रूप स्वल्प मात्रा में प्रयुक्त प्राप्त होते हैं; जैसे-

। 1 ।	परसर्ग रहित -

जिन्हें-	जिन्हें न पावत ध्यान, शिव विरंचि नारद निपुन ।[1]

जिन्हें-	परतीत जिन्हें तोड़ प्रीति करी अब प्रीति के रीति न टेक रही।[2]

। 2 ।	परसर्ग सहित -

जिनकी-	जिनकी कला करनी कर तो महि मंडल अउ ब्रह्मंड भये ।[3]

जिनकी करनी लिखि न सिद्ध नहीं ।[4]

जिनके-	प्रचुर मात्रा में प्रयुक्त किया गया है; यथा-

नर की रचना कवि का करै जिनके गुन वेद न पार लरै ।[5]

जिनके पद कौ चरनोदक लै भवसागर तौ नर देव तरै ।[6]

जिनके गुन वेद पुरान कहैं जन के हित पावन रूप धरे ।[7]

जिनके गुन गावत ध्यावत ही अघ त्याग अरी पद प्रान लहे।[8]

भीत अभीत लगे तिनकौं जिन के तन काल कराल दिये ।[9]

जिन के उर मै कृपा कृपा भाली ।[10]

जिनके -	तिनको दसा आनन काम कहा जिन के रचना रच लोक हरे।[11]

जिनकौ -	कृपा भावत राम सदा जिन कौ ।[12]

जिन को-	पर्याप्त प्रयुक्त प्राप्त हैं; यथा-

जिनको शिव ब्रह्म अनंत की करि ध्यान समाधि नहीं गति पायौ।[13]

जिनको आनंद काल, है उपदेश विषाद उर ।[14]

---

1. र०वि०मं०का०2689/2. र०वि०उ०का०3124/3. र०वि०सु०का०158।
4. र०वि०मं०का०2104/5. र०वि०अ०का०249/6. र०वि०अयो०का०590
7. र०वि०कि०का०1238/8. र०वि०सु०का०1615/9. र०वि०मं०का०1987
10. र०वि०उ०का०2942/11. र०वि०मं०का०1990/12. र०वि०अयो०का०763
13. र०वि०अ०का०78/14. र०वि०सु०का०173।

प्रात हनी कपीर दोउ जिनको गहि काल कराल लिये ।[1]

जिनको परसिद्ध महीप कहैं तिनकी उर रीत न पार नहीं।[2]

जिनको- आनठ बेग बसिष्ट नाम जिन तो कहि के उर संतय छीपे ।[3]

4.5.2. सह सम्बन्ध वाचक

एक वचन	बहुवचन
मूल रूप- तो	ते, तिन
तिर्यक्- तासु, ताहि, तेहि, तो, तो, ता-, तेहि -।	

मूल । एकवचन । -

तो- जो मुनि होम की साज कही उर तो रपि याम तत्क्षिन ल्यायऊ ।[4]

संताप दाप प्रताप जो कर सिता गुन तो हरे ।[5]

जो करी आपत दास । तो रची सहित हुलास ।[6]

भाषित जो अबाँड आदि तो प्रसाद दीजिये ।[7]

कंचन कोट जेठ जर तो बर तो सिवनाथ जो तोहि दये।[8]

तो भाषे सिवनाथ, जो जन सुमिरे राम गुन ।[9]

मूल । बहुवचन । -

ते- दान दे दान हैं दानी हुत ते सब याचक पे हुआ ताप घरे ।[10]

---

1. रा०वि०नि०का०2302/2. रा०वि०उ०का०2965/3. रा०वि०उ०का०3458

4. रा०वि०बा०का०035/5. रा०वि०अयो०का०833/6. रा०वि०कि०का०1267

7. रा०वि०सु०का०1644/8. रा०वि०नि०का०2063/9. रा०वि०उ०का०3327

10. रा०वि०उ०का०2797

काहि- नाम 2 बार प्रयुक्त प्राप्त होता है -

काम दहै तन काहि नहीं ममता मद प्रानन प्रात करैं ।[1]

रन काहि जीतेउ, बिपरीतेउ अपर को दारुन गनी ।[2]

। 2 । परसर्ग सहित -

काहूकी- मम बान निदान हुतासन मे रन आय न काहू की टेक रही।[3]

अनिश्चय वाचक सर्वनाम के अन्तर्गत एक का "कुछ" तथा "कछु" का भी प्राप्त है; यथा-

कुछ- कुछ आशु अपारा अगाधा कही केहि हेत कही प्रभु के कर तो।[4]

कछु- कछु आशु अयोग कही ममता।[5]

4.6.3 मूल - सब, येक

तिर्यक - सबै, येकन

मूल- कारकयुक्त प्रयोग -

सब- संग बरात लिये अपने सब आय भयेउ तेहि आश्रम बासी।[6]

ते किये लछन विभूषा सब रघुबीर महिमा गाय के ।[7]

प्रह भनो सब साथ सुधार धारो ।[8]

येक- येक नही छबि आनन की अरु येक रचै पद पुन्न परागहिं ।[9]

तिर्यक- कारक युक्त प्रयोग -

सबै- इन्द्रपुरी शिव लोक सबै रचना रच प्रेम सौ हर्षि बढ़ाये।[10]

दै सिद्ध समाज अउ राज सबै घर कुछ विबिकनौ घरिहौं ।[11]

---

1. रा० वि० उ० का० 3252/2. रा० वि० सु० का० 1504/3. रा० वि० लं० का० 2311

4. रा० वि० सु० का० 1506/5. रा० वि० अर० का० 1103/6. रा० वि० बा० का० 263

7. रा० वि० लं० का० 2461/8. रा० वि० उ० का० 2781/9. रा० वि० बा० का० 124

10. रा० वि० बा० का० 419/11. रा० वि० अयो० का० 504

अपनौ- अपनौ का देखा अजान भिया तो कहा तपसी बरजोर करै।[1]
अनुशासन दे मुनि बोल उठे अपनौ कर मोहिं निरंतर दीन्हो।[2]

अपनौ- मुनि जान आतम दास अपनौ पानि बांहि यांछे लेउ ।[3]
आज महूरत पुन्य धारी नृप के कन्या अपनौ जन दीन्हो ।[4]

अपनौं- कर भाषन भाष अभाष तबै गांहि ताहि बली पग के अपनौं।[5]

आपनौ- यहु वर हम को दीजिये, जान आपनौदास ।[6]

बहुवचन -

अपने-अपने- अपने अपने गृह जात भये तजे नरिका करि राम प्रनामहि ।[7]
महाकवि चन्द ने आलोच्य ग्रन्थ "रामविनोद" में निजवाचक सर्वनाम के अन्तर्गत "निजु" का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में किया है; उदाहरणार्थ -

निजु- । एक वचन । -
विरधा अवस्था जानि निजु, अयेउ हृदै कौस ।[8]
मुनि भाषा गिरा अति पावन सो मुनि आतुर होय निजु धाम गये ।[9]
मै लछमन निजु संग जनक सुता आतुर भाये ।[10]
कर जोर कथा निजु सीस कहे ।[11]
छल सो निजु अंग छपाय लेउ ।[12]

---

1. रा० वि०सु०का०1665/2. रा० वि०उ०का०3442/3. रा० वि०बा०का०277
4. रा० वि०अर०का०1035/5. रा० वि०कि०का०1825/6. रा० वि०कि०का०2636
7. रा० वि०बा०का०72/8. रा० वि०बा०का०28/9. रा० वि०अयो०का०462
10. रा० वि०अर०का०1010/11. रा० वि०कि०का०1180/12. रा० वि०सु०का०1427

तोसों- ताहि सनेह धारे सुख देह तोसों प्रह नेहन नेक करे।[1]

येकिन- अतिकाय आद है अपर के जिन उर बढ़ेउ विषाद।[2]

सब तिन- सब त्याग कृपा मतिमंद सबै तिन देखत कंचन काँच सदी।[3]

तो निज- जिन आयस तो निज धाम गई।[4]

तिन सो केहि- तिन सो केहि भाँतिन जित्त मिले।[5]

तो मैं - जो माँगो बरदान, तो मैं देउँ विवेक रच।[6]

ताहि ते - प्रणाम आये जैन सुंदर ताहि ते वांछित भाये।[7]

अपर कोउ - जाने मर्म न अपर कोउ, लीला राम तरंग।[8]

अपने अपने- अपने अपने गृह जात भये सबै नारिका करि राम प्रनामहि।[9]

निज निज - निज निज निवास सबै।[10]

संयुक्त सर्वनामों का निर्माण, सबै, कोउ अनिश्चयवाचक सर्वनामों व संबंधवाचक सर्वनामों के समान रूपों के योग से हुआ है। किन्तु दोहरे सर्वनामों में दोनों रूप सर्वनाम ही है।

4.9 सार्वनामिक विशेषण -

उक्त सर्वनामों में, परिगणित रूपों में कुछ रूप सार्वनामिक विशेषण की भाँति प्रयुक्त हुए हैं। उदाहरणार्थ -

4.9.1 पुरुष वाचक सर्वनाम से बने रूप -

तेहि- तेहि मारग मैं नर नारि सबै छवि हेरि विलोचन चाव धरैं।[11]

---

1. रा० पि० कि०का० 1472/2. रा० पि० अ०का० 2056/3. रा० पि० अ०का० 1833
4. रा० पि० उ०का० 2558/ 5. रा० पि० उ०का० 2961/6. रा० पि० उ०का० 2878
7. रा० पि० उ०का० 3108/8. रा० पि० उ०का० 2944/9. रा० पि० बा०का० 072
10. रा० पि० बा०का० 228/11. रा० पि० बा०का० 160

किन- किन प्रान दिया तुम प्रान हरेउ ।[1]

मन मे किन घातक प्रात किपेउ ।[2]

4.9.3 निश्चय वाचक सर्वनाम

निकटवर्ती-

यह- पयन जस परस सो सरस काया रची छंद यह विरह पद सो पावै ।[3]

यह पैम संवार हिये करिये ।[4]

यहु- दैक कहै यहु काम कला बिलना रच तोरा तुहारित कि।[5]

बिढिर यहु कारय कीन,करउ राज सुत तोष सज ।[6]

अब कीजै यहु काम, हरो विषम व्यापना प्रबल ।[7]

गिरवा यहु राम विनोद अहे ।[8]

यहु मंत्र विवेक हिदै धारिये।[9]

यहु तीक्ष्ण पूरन ताप हरी ।[10]

यहु सब सदा उर वास करै ।[11]

येहु- येहु टंक कठोर महा तिन सौं हैहि भाँति तुमा निधि हौंधारैं।[12]

येहु भूप अनूप कि ब्रह्मकला बिका पद पाय न फेर टरै ।[13]

येहु तीक्ष्ण ताप की हरिहैं ।[14]

देखा येहु कौन कपि टरिर धायै ।[15]

---

1. र०वि०लं०का०2369/2. र०वि०उ०का०3021/3. र०वि०वि०का०1284

4. र०वि०लं०का०2673/5. र०वि०बा०का०070/6. र०वि०अयो०का०708

7. र०वि०अर०का०909/8. र०वि०वि०का०1198/9. र०वि०सु०का०1591

10. र०वि०लं०का०1793/11. र०वि०उ०का०2882/12. र०वि०बा०का०186

13. र०वि०अर०का०949/14. र०वि०सु०का०1611/15. र०वि०लं०का०2554

।5। विदेशी -

इस कोटि के विशेषण अत्यल्प हैं -

दायम ताप[1], बखार हजार[2],

अन्त्यध्वनि के आधार पर अन्त्य ध्वनि की दृष्टि से संज्ञा शब्दों की भाँति विशेषण शब्द इस प्रकार हैं -

।।।3- अकारान्त विशेषणों के रूप सर्वाधिक मात्रा में प्रयुक्त हुए हैं-

सुरत स्याम[3], ममता प्रबल[4], पीयर गात[5], विपुल रसाल[6], सेत सिला[7], धर्म पुरन[8], विकट जोगी।[9]

कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो अकारान्त तथा आकारान्त दोनों ही रूपों में प्रयुक्त हुए हैं; यथा-

बचन बिसाल[10], बचन बिसाला[11], रसाल आनन[12], बदन रसाला[13], बिरिंचि रेख[14], बिरिंचि रेखा[15], धीर सरीर[16], प्रान धीरा[17], बिमल भेख[18], कथा बिमला[19]

अकारान्त रहने से एक मात्रा घटती है तथा आकारान्त होने पर एक मात्रा बढ़ती है। इन द्विविधि प्रयोगों में मात्रा पूर्ति का आग्रह परिलक्षित है। कुछ प्रयोग केवलतः छंदानुरोध से ही आकारान्त हैं, अन्यथा ये अकारान्त ही हैं -

धर्म बिसाला[20], पवन दयाला[21]

---

1. रा० वि० बा०का० 416/2. रा० वि०उ०का० 2859/3. रा० वि०बा०का० 345
4. रा० वि०[illegible]/5. रा० वि० कि०का० 1175/6. रा० वि०उ०का० 282
7. रा० वि०लं०का० 1845/8. रा० वि०उ०का० 3007/9. रा० वि०अयो०का० 607
10. रा० वि०लं०का० 1800/11. रा० वि०अर०का० 1060/12. रा० वि०लं०का० 2660
13. रा० वि०अयो०का० 654/14. रा० वि०अयो०का० 611/15. रा० वि०लं०का० 2152
16. रा० वि०लं०का० 2660/17. रा० वि०अयो०का० 614/18. रा० वि०लं०का० 2111
19. रा० वि०लं०का० 1913/20. रा० वि०अयो०का० 654/21. रा० वि०अर०का० 1060

5.2 <u>अर्थपरक वर्गीकरण</u> -

"रामविनोद" महाकाव्य में प्रयुक्त विशेषण-ओं को अर्थ की दृष्टि से निम्नवत् व्यवस्थित किया जा सकता है-

5.2.1 - गुणवाचक
5.2.2 - परिमाण वाचक
5.2.3 - संख्या बोधक

5.2.1 <u>गुणवाचक</u> -

इस श्रेणी के विशेषणों के अन्तर्गत रंग सूचक, अवस्था वाचक, अवगुण-सूचक, गुणसूचक तथा आकार सूचक गुण भेद किये जा सकते हैं, जैसे -
श्याम शरीर[1], श्याम गात[2], श्याम मेघ[3], सुरत श्याम[4] तन श्याम[5], घन श्याम[6], श्याम नील छवि[7], नील काया[8], कंज नील[9], पीत झगा[10], पीत बिरान[11], पीत पट[12], लोचन लाल[13], सेत अंग[14]

5.2.2 <u>परिमाण बोधक</u> -

इस श्रेणी के विशेषण-का दो वर्गों में रखे जा सकते हैं-
1- सार्वनामिक 2 - अन्य ।

---

1. रा०वि० बा०का०91/2. रा०वि०सु०का०1404/3. रा०वि०अर०का०1000
4. रा०वि०बा०का०212/5. रा०वि०अयो०का०570/6. रा०वि०उ०का०3046
7. रा०वि०उ०का०2800/8. रा०वि०कि०का०2171/9. रा०वि०कि०का०1279
10. रा०वि०बा०का०250/11. रा०वि०बा०का०165/12. रा०वि०बा०का०288
13. रा०वि०कि०का०1298/14. रा०वि०उ०का०3045

1- सार्वनामिक- सार्वनामिक विशेषणों को अध्याय 4.9 (सर्वनाम) के अन्तर्गत विवेचित किया गया है -

2-अन्य- इस कोटि के विशेषण इस प्रकार हैं -

महिमा अति[1], बहुतेरे[2], बहु तोर[3], बहु प्रीति[4], बारि बहु[5], लघु प्रेम[6], पूरन बिरह[7], पूरन मंगल[8], पूरन प्रेम[9], पूरन दान[10], भाग बड़ो[11], अनुराग सब[12], सब काज[13].

5.2.3 संख्याबोधक -

5.2.3.1 पूर्णांक बोधक -

एक अंश[14], एक कुमार[15], एक नारी[16], एक रिपु[17], पल एक[18], छिन एक[19], एकपुर[20], मुखएक[21], पल एकहि[22], बार द्वै[23], कोटि दुय[24], दुय पद[25], दुय सुता[26], तिगुन[27], त्रिभुवन[28], त्रिदोष[29], त्रिशूल[30].

---

1. रा० वि० बा० का० 131/2. रा० वि० लं० का० 2011/3. रा० वि० लं० का० 2022
4. रा० वि० लं० का० 2043/5. रा० वि० उ० का० 2756/6. रा० वि० बा० का० 87
7. रा० वि० कि० का० 1290/8. रा० वि० बा० का० 323/9. रा० वि० लं० का० 2418
10. रा० वि० उ० का० 3111/11. रा० वि० बा० का० 87/12. रा० वि० उ० का० 2746
13. रा० वि० अर० का० 1146/14. रा० वि० बा० का० 39/15. रा० वि० बा० का० 230
16. रा० वि० अयो० का० 545/17. रा० वि० लं० का० 2452/18. रा० वि० उ० का० 2724
19. रा० वि० उ० का० 2744/20. रा० वि० उ० का० 2957/21. रा० वि० उ० का० 2956
22. रा० वि० अयो० का० 771/23. रा० वि० बा० का० 36/24. रा० वि० बा० का० 192
25. रा० वि० अयो० का० 495/26. रा० वि० बा० का० 339/27. रा० वि० बा० का० 89
28. रा० वि० अर० का० 940/29. रा० वि० अयो० का० 683/30. रा० वि० लं० का० 2315

5 = पंच, पाँच

6 = छाट

7 = सप्त, सात

8 = अष्ट, आठ

9 = नव

10 = दस

11 = दस येक,[1] येकादस[2]

12 = द्वादस[3]

14 = चतुर्दस[4], चउदह[5], चौदह[6]

18 = अठारह[7],

20 = बीस[8],

21 = येकइस[9],

25 = पचीस[10],

26 = छबिस[11],

27 = सात और बीस[12],

30 = तीस[13],

49 = उनचास[14]

52 = बावन[15]

---

1. रा० वि० अर० क० 981 / 2. रा० वि० कि० क० 1237 / 3. रा० वि० कि० क० 1237
4. रा० वि० अपो० क० 541 / 5. रा० वि० अपो० क० 615 / 6. रा० वि० अपो० क० 831
7. रा० वि० उ० क० 3512 / 8. रा० वि० गों० क० 1807 / 9. रा० वि० गों० क० 1776
10. रा० वि० भा० क० 394 / 11. रा० वि० गों० क० 1777 / 12. रा० वि० उ० क० 3370
13. रा० वि० गों० क० 2204 / 14. रा० वि० उ० क० 2952 / 15. रा० वि० भा० क० 320

100 = सत[1], सै[2],

1000 = हजार[3], सहस[4],

<u>तिथिवाचक</u> -

गणनात्मक (पूर्णांक) विशेषण - इस प्रकार के विशेषण रूपों का प्रयोग अति स्वल्प मिलता है- तिथि अष्टमी[5]

5.2.3.2 <u>अपूर्णांक बोधक</u> - जौत सवाई[5(क)]

5.2.3.3 <u>क्रमात्मक</u> -

प्रथम दिन[6], पहिली रच[7], दुतिया पद[8], दूसरो द्वार[9], दूसरे कर[10], तिसरी रच[11], चउथी गुन[12], पंचमी सोधा[13], अष्टमी दस्त[14], सप्तमी साती दीप[15], दसा दूसरी[15(क)]

5.2.3.4 <u>गुणात्मक</u> -

इस कोटि के विशेषण रूपों का प्रयोग अत्यल्प हुआ है, उदाहरणार्थ -
दुगुन सरीर[16],

5.2.3.5 <u>समूहात्मक</u> -

इस कोटि के विशेषण पर्याप्त मात्रा में प्रयुक्त हुए हैं। इस

---

1. रा०वि०पु०का०1407/2. रा०वि०उ०का०3512/3. रा०वि०लं०का०2356
4. रा०वि०अ०का०1020/5. रा०वि०बा०का०0426/5(क) रा०वि०बा०का०0265
6. रा०वि०लं०का०1776/7. रा०वि०बा०का०0328/8. रा०वि०बा०का०0328
9. रा०वि०लं०का०2003/10. रा०वि०लं०का०2208/11. रा०वि०बा०का०0328
12. रा०वि०बा०का०0328/13. रा०वि०बा०का०0329/14. रा०वि०बा०का०0329
15. रा०वि०बा०का०0330/15(क) रा०वि०लं०का०2469/16. रा०वि०पु०का०1409

कोटि के विशेषणों की अन्तःरचना – उ – ऊ, –हु – हू, – हुँ – हूँ, – ओ – औ, – ई के योग से हुई है; यथा –

। 1 । – उ – ऊ –
दोउ लोचन[1], दोउ बीर[2], पाग दोउ[3], आठउ अंग[4], चारिउ दिस[5], दोऊ दृग[6], दोऊ काल[7]

। 2 । –हु – हू –
तीन्हु लोकी[8], सातहु दीप[9]

। 3 । – हुँ – हूँ –
तिहुँ लोक[10], तीन्हुँ लोक[11], गुन तीन्हुँ[12], चहुँ दिसि[13], आनन चारहुँ[14], तिहुँ पुर[15], चहुँ दिस[16],

। 4 । –ओ– औ –
पै को अंग[17], नैन दूनो[18], दूनो कर[19], दूनो रस[20], चारो बेनी[21], पाँचो भूत[22], सातो दीप[23], दूनो उर[24], आठो अंग[25],

। 5 । –इ – ई –
दुइ खंड[26], पुन्न दोई[27],

---

1. रा० वि० बा० का० 42/2. रा० वि० बा० का० 169/3. रा० वि० अयो० का० 776
4. रा० वि० कि० का० 1289/5. रा० वि० सु० का० 1447/6. रा० वि० बा० का० 115
7. रा० वि० बा० का० 128/8. रा० वि० बा० का० 45/9. रा० वि० कि० का० 1326
10. रा० वि० उ० का० 2952/11. रा० वि० बा० का० 137/12. रा० वि० बा० का० 138
13. रा० वि० बा० का० 308/14. रा० वि० बा० का० 306/15. रा० वि० लं० का० 1933
16. रा० वि० उ० का० 2958/17. रा० वि० लं० का० 2455/18. रा० वि० सु० का० 1476
19. रा० वि० लं० का० 2398/20. रा० वि० उ० का० 2872/21. रा० वि० कि० का० 1162
22. रा० वि० बा० का० 329/23. रा० वि० बा० का० 330/24. रा० वि० उ० का० 2601
25. रा० वि० बा० का० 304/26. रा० वि० बा० का० 385/27. रा० वि० अयो० का० 614

5.3. क्रिया मूलक (कृदन्त)

इस प्रकार के विशेषण धातु में - त, - क, -न, -नि, - नी, प्रत्ययों के योग से निर्मित हैं; उदाहरणार्थ -

(1) - त -

आवत राम[1], बाजत बीन[2], राजत सिया[3], देत असीस[4], गावत बेद[5], कहत बानी[6], चाहत राज[7], पढ़ावत कीर[8], बरनत संकर[9], तरत अश्म[10], मुनि कहत[11].

(2) - क -

पालक लोक[12], दास घातक[13], दुजनिंदक[14]

(3) - न - नि - नी -

अघ मोचन[15], डोलन प्रभु[16], संकट भंजन[17], मुख बरनि[18], भीर हरनी[19]

---

1. रा० वि० बा० का० 111/2. रा० वि० बा० का० 412/3. रा० वि० अयो० का० 431
4. रा० वि० अयो० का० 446/5. रा० वि० अर० का० 965/6. रा० वि० अर० का० 1003
7. रा० वि० कि० का० 1233/8. रा० वि० सु० का० 1422/9. रा० वि० लं० का० 1765
10. रा० वि० लं० का० 1766/11. रा० वि० उ० का० 2811/12. रा० वि० अर० का० 916
13. रा० वि० अर० का० 916/14. रा० वि० उ० का० 3315/15. रा० वि० बा० का० 19
16. रा० वि० बा० का० 47/17. रा० वि० बा० का० 52/18. रा० वि० कि० का० 1338
19. रा० वि० अर० का० 908

6. अव्यय

आलोच्य ग्रन्थ "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में प्रयुक्त समस्त अव्यय शब्दावली को अर्थ एवं कार्यकारिता की विचार-दृष्टि से निम्नवत् वर्गीकृत किया जा सकता है -

1- क्रिया विशेषण
2- समुच्चय बोधक
3- विस्मयादि बोधक
4- परसर्गीय रूप
5- बलात्मक शब्दांश । निपात ।

"रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में उक्त सभी प्रकार के अव्ययों के प्रयोग पर्याप्त संख्या में प्राप्त होते हैं ।

6.1 क्रिया विशेषण -

अर्थ के विचार से इसके चार अवर्ग प्रस्तुत किये गए हैं; यथा-

1- स्थान वाचक
2- काल वाचक
3- परिमाण वाचक
4- रीति वाचक

6.1.1 स्थान वाचक क्रिया विशेषण -

इसको 2 वर्गों में विभाजित किया गया है -

1- स्थिति वाचक
2- दिशा वाचक

जहँ जहँ- जहँ जहँ लीन्हीं जन्म तुम ।[1]

तहाँ जहाँ-कहि बानी आये तहाँ जहँ कबलिष्या धीर ।[2]

6.1.1.2 दिशावाचक क्रिया विशेषण

प्रमुख रूप यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं -

दूर[3], दक्षिन[4], उत्तर[5]

6.1.2 कालवाचक

कालवाचक क्रिया विशेषणों को तीन उपवर्गों में विभक्त किया गया है -

1- समय वाचक

2- अवधिवाचक

3- पौनःपुन्य वाचक

आलोच्य ग्रन्थ की भाषा में मात्रा की दृष्टि से प्रथम वर्ग के सर्वाधिक प्रयोग तथा तृतीय वर्ग के स्वल्पतम प्रयोग हैं, उदाहरणार्थ -

6.1.2.1 समय वाचक

बहुर[6], बहुरि[7], बहुरो[8], तुरैत[9], तुरत[10], तुरंतहि[11] आज[12], आजु[13], अबो[14], अब[15]

---

1. रा० वि० उ० का० 3466/2. रा० वि० अयो० का० 547/3. रा० वि० अर० का० 993
4. रा० वि० बा० का० 370/5. रा० वि० लं० का० 1799/6. रा० वि० अयो० का० 460
7. रा० वि० बा० का० 65/8. रा० वि० सु० का० 1410/9. रा० वि० लं० का० 1888
10. रा० वि० लं० का० 2354/11. रा० वि० अर० का० 1129/12. रा० वि० बा० का० 100
13. रा० वि० अयो० का० 554/14. रा० वि० कि० का० 1253/15. रा० वि० सु० का० 1512

अबै[1], अबहूँ[2], अब ही[3], तब[4], तबै[5], तबही[6], तबही[7], जब[8], जबै[9], जबही[10], पुन[11], पुनि[12], प्रथम[13], आदिहिं[14] जबहीं[15], पिछले[16], पीछे[17]

समय वाचक क्रिया विशेषण तथा स्थिति वाचक क्रिया विशेषण के अन्तर्गत प्रयुक्त "पाछे" अर्थ के विचार से भिन्न है। भेद स्पष्टीकरण के निमित्त उदाहरण निम्नवत् हैं -

<u>समयवाचक-</u>

तेहि पाछे प्रगटेउ प्रबल, भृगुपति काल समान।[18]

<u>स्थितिवाचक-</u>

मुनि जाग आतम दास अपनी पानि गहि पाछे लयेउ।[19]

6.1.2.2 <u>अवधि वाचक क्रिया विशेषण</u>

"रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में इस कोटि के रूपों की संख्या समय वाचक क्रिया विशेषण रूपों की संख्या से कुछ कम है। प्रमुख प्रयुक्त रूप निम्नांकित हैं।

सदा[20], निरंतर[21]

---

1. रा०वि०अर०का०877/2. रा०वि०यु०का०1745/3. रा०वि०अयो०का०751
4. रा०वि०बा०का०23/5. रा०वि०अयो०का०447/6. रा०वि०अर०का०1046
7. रा०वि०अयो०का०715/8. रा०वि०उ०का०2990/9. रा०वि०उ०का०2812
10. रा०वि०अर०का०908/11. रा०वि०अयो०का०624/12. रा०वि०लं०का०1964
13. रा०वि०उ०का०2825/14. रा०वि०लं०का०2681/15. रा०वि०बा०का०112
16. रा०वि०उ०का०3018/17. रा०वि०अयो०का०507/18. रा०वि०बा०का०372
19. रा०वि०बा०का०277/20. रा०वि०बा०का०97/21. रा०वि०अयो०का०464

तेहि समय रावनद्रोह । अति बढ़ी बिरात सनेह ।[1]

येक सिला मृगराज ध्याने करि ध्यान गुनी गुन सौं अति प्रार्थो।[2]
सुन्दर मेरु सिला अति सोहन ।[3]
मृगराज सम अति प्रबल निशचर ।[4]

अति तरसे कपि भालु उर, सुनत बचन भगवंत।[5]

तहँ अति बढ़ी सनेह, बढ़ी प्रिया ते भावन निसु ।[6]

अधिक- बोधक बचन सुन घोर, अधिक पीर बाढ़ी हिये ।[7]

बहु - यहुँ बीर आनंद फेर । बहु बाज बीना भेर ।[8]
करि मजन नाना भाँग । बहु बिधि भावित अंग ।[9]
पुनि कूट तिनको चोर कीन्हो भात बहु ताको दये ।[10]

बहुतो- बहुते गहि पाँय मनाय तिन्हे ।[11]
नंगुर सुर मोट बहुतो मुष्टिका पेकन हने ।[12]

बहुतो - बहुते कपि बाँध डारे पुर दुवार परी तो पुकार प्रिया अकुलानी।[13]

निपट - दुष्ट ते निपट बिपरीत कीन्ही ।[14]

6.1.3.2. न्यूनता बोधक -

कुछ- दै कुछ ताहि सुखी बरनारि तो भोजन भाव प्रतीतहिं कीन्हो।[15]
ताहि सी कुछ दोष नहीं कृपा भी सदा सुर भासत पे ।[16]

बहु - बहु आयु अधीन बढ़ी ममता ।[17]

---

1. रा०वि०लं०का०2059/2. रा०वि०अर०का०873/3. रा०वि०कि०का०1279
4. रा०वि०सु०का०1420/5. रा०वि०उ०का०2745/6. रा०वि०उ०का०2767
7. रा०वि०अयो०का०714/8. रा०वि०सु०का०1597/9. रा०वि०लं०का०1803
10. रा०वि० उ०का०3108/11. रा०वि०लं०का०2048/12. रा०वि०सु०का०1568
13. रा०वि०लं०का०2039/14. रा०वि०लं०का०2534/15. रा०वि०बा०का०41
16. रा०वि०कि०का०1248/17. रा०वि०अर०का०1103

जबु - जिनको जग जाय सदेह न कछु रघुनाथ विरोध न बोधा जो।।क।।[1]
जैसे - जैसे देह न धारे का सो गुन पाप अरोध न काहु कहाये।।ख।।

6.1.3.5 तुलना वाचक

रामचन्द्र सों अधिक तिन, लीन्हे हिंदि लगाय।[2]
पहुँचे मन सों अधिक तहँ, जहाँ दास जगदीस।[3]

6.1.4 रीतिवाचक क्रिया विशेषण -

इन शब्दों को तीन उपश्रेणियों में व्यवस्थित किया जा सकता है -

1- प्रकार वाचक
2- कारण वाचक
3- निषेध वाचक

6.1.4.1 प्रकार वाचक

आलोच्य महाकाव्य "रामविनोद" की भाषा में संख्या के विचार से प्रकार वर्ग के सर्वाधिक प्रयोग हैं; यथा -
जेम[4], जेमि[5], यथा[6], जैसे[7], तैसे[8], तैसइ[9], जैसु[10], ऐसे[11], औसे[12], कैसे[13], ऐसु[14],

---
।क।
1. रा० वि०अयो०का०497/1।ख। रा० वि०बा०का०173/2. रा० वि०अयो०का०720
3. रा० वि०उ०का०3222/4. रा० वि०सु०का०1589/5. रा० वि०अयो०का०777
6. रा० वि०अयो०का०803/7. रा० वि०अर०का०1376/8. रा० वि०अयो०का०747
9. रा० वि०बा०का०361/10. रा० वि०बा०का०070/11. रा० वि०अयो०का०747
12. रा० वि०बा०का०422/13. रा० वि०उ०का०2956/14. रा० वि०अयो०का०548

6.1.4.2 <u>कारण वाचक</u>

का[1], कहा[2], केहि[3], किमि[4], कित[5]

6.1.4.3 <u>निषेध वाचक</u>

न- पल जो दृग की पलकैं न लगैं रघुनायक की छवि पाय प्रभाती।[6]
नीर प्रवाह बहेउ दृग वारिद शोभा धरे मुख राम न बोले।[7]
उर लोक विनाश न नेक धरै।[8]
शोभा ताके सदन की, बरन न सकै पुरान।[9]
बिन ताकू पद ध्यान, पावै मुक्ति न आय जग।[10]

ना- तन बज्र धारत धारन धार ताहि लखै बिहरेउ ना हियेउ।[11]

नहि- नहि लाइये मुख ओर।[12]

नाहिं - नाहिं होय लायक कृपा मम।[13]
गुन की उपमा नाहिं पात कहीं।[14]
पति विछोह नाहिं जीजिये।[15]
जो होय आतम भाव तुम्हरे कहो तो नाहिं टरऊं।[16]

नहीं - प्रति उत्तरदान नहीं करियउ लखि तो कुमारि दुखी मुख पावैं।[17]
सुरभाया बस भामिनी, धारत नहीं सुहाग।[18]
विपत प्रीत त्यागै नहीं, लक्षन है परधान।[19]
सुख तन सदा अशोक, काल कबौं आते नहीं।[20]

---

1. रा० वि०लं०का०215/2. रा० वि०अर०का०993/3. रा० वि०अयो०का०479
4. रा० वि०बा०का०423/5. रा० वि०बा०का०179/6. रा० वि०बा०का०107
7. रा० वि०अयो०का०481/8. रा० वि० कि०का०1205/9. रा० वि०सु०का०1445
10. रा० वि०उ०का०2913/11. रा० वि०उ०का०3151/12. रा० वि०अयो०का०531
13. रा० वि०अर०का०962/14. रा० वि० कि०का०1186/15. रा० वि०लं०का०2565
16. रा० वि०उ०का०2945/17. रा० वि०बा०का०366/18. रा० वि०अयो०का०520
19. रा० वि० कि०का०1295/20. रा० वि०सु०का०1526

मरै नहीं दसमाथ, बोले देव विभीषनाहिं ।[1]

नाहिं- अनुराग विहंग मराल करैं पल नाहिं टरै बर ते भल सौं ।[2]

उर सुबाद नाहिं समात।[3]

रघुनाथ विशेष कहेउ उर मैं तिहुं लोक फिरे फिर नाहिं बची ।[4]

नाही- सत्त यहु गिरा कछु झूठ नाही ।[5]

नाहीं- अचल होय चित्त ते मरैं नाहीं ।[6]

रची भेक नाहीं छुहै मोह माया।[7]

जनि- त्याग वियोग अयोग सबै छुम लै हिये जनि लै कहावौं।[8]

तातों तवौ विशाखा उर, करौ सजल जनि नैन।[9]

जन - जन लै कुजाय कुजाय करौ।[10]

रीतिवाचक क्रिया विशेषण के अन्तर्गत वर्णित अव्यय पदों के अतिरिक्त कुछ ऐसे प्रयोग भी इस श्रेणी में परिगणित किये जा सकते हैं जिन में "विध", "विधि" तथा "भाँति" के योग से विशिष्ट सार्वनामिक विशेषण येहि, केहि, वेहि तथा यहि- जुड़कर क्रिया विशेषण के समान रचना बनाती है; यथा -

विधि- येहि विधि[11], केहि विधि[12], वेहि विधि[13],

विध- येहि विध[14],

---

1. रा०वि०सं०छं०2586/2. रा०वि०उ०छं०3225/3. रा०वि०बा०छं०300
4. रा०वि०सं०छं०2179/5. रा०वि०उ०छं०3273/6. रा०वि०सं०छं०2494
7. रा०वि०अयो०छं०746/8. रा०वि०बा०छं०171/9. रा०वि०सं०छं०2568
10. रा०वि०सं०छं०2423/11. रा०वि०अर०छं०1110/12. रा०वि०सु०छं०1714
13. रा०वि०उ०छं०3371/14. रा०वि०अयो०छं०451

भाँति - यहि भाँति[1], केहि भाँति[2], येहि भाँति[3],

6.2 समुच्चय बोधक अव्यय

इस प्रकार के शब्दों के 2 उपवर्ग किए जा सकते हैं -

1- समानाधिकरण
2- व्यधिकरण ।

6.2.1 समानाधिकरण

विवेचन सुविधार्थ आलोच्य ग्रन्थ में प्राप्त शब्दों के विभेद किए जा सकते हैं ; उदाहरणार्थ -

1- संयोजक
2- वियोजक
3- प्रतिरोधक
4- परिणाम सूचक ।

6.2.1.1 संयोजक -

इस कोटि के अन्तर्गत व्यवहृत शब्द निम्नांकित हैं -

अरु - देव दनुज अरु नाग नर, रघु महीप नित अंग ।[4]
सिय की अरु दासी कर पुत्र दोई ।[5]
बहुर दिये रघुनाथ कों, धुनि किरीट अरु चाप ।[6]

---

1. रा०वि०उ०का०2945/2. रा०वि०कि०का०1821/3. रा०वि०अयो०का०778
4. रा०वि०बा०का०307/5. रा०वि०अयो०का०614/6. रा०वि०अयो०का०925

6.2.1.3 प्रतिकोटात -

इस कोटि के का अत्यल्प हैं -

पै - तिहु थान न थान की धुम पै ।[1]

6.2.1.4 परिणाम सूचक -

इस वर्ग में "तो" का प्राप्त है -

तुम मोहिं दियउ जुवराजपुरी तो पुरी तुरनायक छोभा करै ।[2]
विपरीत अगाध विलोक हिये तो कही कर जोर भिया हुआ बानी ।[3]

6.2.2 व्याधिकरण -

इस प्रकार के का, एक मुख्य वाक्य का संबंध एक या एक से अधिक वाक्यों से जोड़ते हैं । इन्हें तीन उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है: जैसे -

1- उद्देश्य सूचक
2- संकेत वाचक
3- स्वरूप वाचक

<u>6.2.2.1 उद्देश्य सूचक</u> -

जौ- कुछ विवेक हिये धर जौ सुना राजा सोई उर धारेंग पानी।[4]
बहु प्रेम राखि नैना जौ कहे कुमा हूं बैन ।[5]

<u>6.2.2.2 संकेत वाचक</u> -

जौ [6], जौ ... तो[7] , जौ ....तो [8], जौ ....तो[9],

---

1. रा० वि०उ०का०3100/2. रा० वि०अयो०का०461/3. रा० वि०लं०का०1861
4. रा० वि०अयो०का०437/5. रा० वि०बा०का०218/6. रा० वि०अयो०का०463
7. रा० वि० कि०का०1267/8. रा० वि० कि०का०1208/9. रा० वि०लं०का०2407

7. क्रिया-रूप-रचना

7.0 आलोच्य भाषा में प्राप्त होने वाले क्रिया-रूप, काल, वाच्य, वचन, पुरुष, लिंग, अर्थ आदि की द्योतक रचनात्मक प्रवृत्तियों से प्रभावित हैं। प्रत्येक क्रिया रूप की रचना इन समस्त व्याकरणिक प्रवृत्तियों से प्रभावित न होकर प्रायः उनमें से अधिकांश प्रवृत्तियों से प्रभावित है। कुछ क्रिया रूप संस्कृत से प्रभावित हैं; यथा -
हरे[1], धरे[2], ध्याय[3], राखे[4], निरखि[5], लखे[6], बदै[7], सुने[8]

आलोच्य ग्रन्थ "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में प्राप्त क्रिया रूपों का विश्लेषण करते समय अनेकानेक धातुएँ उपलब्ध होती हैं, जिनका विवरण निम्नवत है -

7.1 धातुएँ एवं उनका वर्गीकरण -

रचना की दृष्टि से, आलोच्य महाकाव्य में, अनेक प्रकार की धातुएँ प्राप्त होती हैं, जिन्हें निम्न तालिका से सुस्पष्ट किया जा सकता है -

धातुएँ
- मूल
  - सामान्य
  - स्वीकृत
- यौगिक
  - प्रेरणार्थक
  - नाम धातुएँ

---

1. रा० वि० बा० का० 20/ 2. रा० वि० अयो० का० 654/ 3. रा० वि० अ० का० 1084
4. रा० वि० सु० का० 1441/ 5. रा० वि० कि० का० 246 / 6. रा० वि० उ० का० 2728
7. रा० वि० उ० का० 2880/ 8. रा० वि० बा० का० 19

7.1.1 मूल धातुएँ

प्रत्ययों के योग से जिनमें अन्य धातुओं (णिजन्त, प्रेरणार्थक आदि) की रचना होती है ऐसी आधारभूत धातुएँ, मूल धातुएँ कही गई हैं। यह दो प्रकार की है। यथा-

(1) सामान्य -

इस वर्ग की धातुएँ "कर्तरि प्रयोग" प्रकट करती हैं; यथा-

लड[1], लिखा[2], कह[3], कर[4], गह[5], पा[6], ला[7], मार[8], देखा[9], गिर[10], जल[11], रच[12], काट[13], गा[14]

(2) द्विरूपी मूल -

इस वर्ग की धातुएँ "कर्मणि-प्रयोग" को प्रकट करती हैं; यथा -

नाच नच (नचाय)[15], नाच नच (नचाय)[16], जाग जग (जगाय)[17], मान मन (मनाय)[18], सीखा सिखा (सिखाय)[19], पी-पि (पिआय)[20], ले लि (लिआय)[21].

---

1. रा० वि०बा०का०026/2. रा० वि०बा०का०0205/3. रा० वि०बा०का०364
4. रा० वि०अयो०का०0450/5. रा० वि०अयो०का०0576/6. रा० वि०अर०का०0901
7. रा० वि०अर०का०1008/8. रा० वि० कि०का०1383/9. रा० वि०सु०का०1440
10. रा० वि०सु०का०1568/11. रा० वि०लं०का०1946/12. रा० वि०लं०का०1992
13. रा० वि०लं०का०2189/14. रा० वि०उ०का०2784/15. रा० वि०बा०का०0303
16. रा० वि०अयो०का०0734/17. रा० वि०उ०का०2796/18. रा० वि०उ०का०2852
19. रा० वि०लं०का०1971/20. रा० वि०लं०का०2108/21. रा० वि०लं०का०1893

भेट मिट । मिटाय ।[1], कूट कुट । कुटाय ।[2],
बोल बुल । बुलाय ।[3],

इनका निर्माण सामान्य धातुओं से होता है - यदि सामान्य धातुओं में आद्याक्षरिक स्वर दीर्घ होता है तो ह्रस्व हो जाता है ।

ह्रस्वीकृत धातुओं से ही प्रेरणार्थक धातुएं निर्मित होती हैं । जिन पर विचार यौगिक धातुओं के अन्तर्गत किया जायेगा ।

7.1.2 <u>यौगिक धातुएं</u> -

ह्रस्वीकृत धातुओं में प्रत्ययों के योग से यौगिक धातुओं का निर्माण होता है । इसके अतिरिक्त नाम शब्दों में प्रत्ययों के योग से बनने वाली धातुएं भी यौगिक ही हैं । अस्तु यौगिक धातुओं के दो वर्ग बन सकते हैं -

1- प्रेरणार्थक
2- नाम धातुएं

(1) <u>प्रेरणार्थक</u> -

आलोच्य महाकाव्य की भाषा में प्रेरणार्थक प्रत्यय - आ एवं - वा हैं । जब अकर्मक धातुओं में - आ का योग होता है तो धातु सकर्मक मात्र हो जाती है, अस्तु ऐसी धातुओं में प्रेरणार्थक रूप - वा के योग से बनते हैं; यथा-
हँस + आँ = हँसा । सकर्मक ।
हँस + वा । प्रेरणार्थक ।

---

1. रा०वि०मं०का० 2155/ 2. रा०वि०मा०का० 0230/ 3. रा०वि०मा०का० 0325

सकर्मक धातुओं में - आ तथा - वा दोनों प्रत्यय प्रेरणार्थ का बोध कराते हैं ; यथा -

कर + आ = करा । प्रथम प्रेरणार्थक । तथा

कर + वा - करवा । द्वितीय प्रेरणार्थक ।

ह्रस्वीकृत	प्रथम प्रेरणार्थ	द्वितीय प्रेरणार्थ	क्रिया-रूप
बन + आ	बना	-	बनावई[1]
सुन + आ	सुना	-	सुनावई[2]
उपज + आ	उपजा	-	उपजावयी[3]
दिखा + आ	दिखा	-	दिखावई[4]
सिख + आ	सिखा	-	सिखावई[5]
बढ़ + आ	बढ़ा	-	बढ़ावई[6]
हँस + आ	हँसा	-	हँसावई[7]
नच + आ	नचा	-	नचावई[8]
पढ़ + आ	पढ़ा	-	पढ़ावई[9]
बज + आ	बजा	-	बजावई[10]
बिसर + आ	बिसरा	-	बिसरावई[11]
मिट + आ	मिटा	-	मिटावई[12]
रच + आ	रचा	-	रचावई[13]

1. रा० वि० बा० का० 0422/2. रा० वि० बा० का० 0422/3. रा० वि० बा० का० 0259
4. रा० वि० बा० का० 0259/5. रा० वि० बा० का० 0257/6. रा० वि० बा० का० 0257
7. रा० वि० बा० का० 0270/8. रा० वि० अ० का० 01008/9. रा० वि० लं० का० 02433
10. रा० वि० लं० का० 02598/11. रा० वि० उ० का० 02722/12. रा० वि० लं० का० 01796
13. रा० वि० अ० का० 01008

बच + आ	बचा	-	बचावई[1]
बता + आ	बता	-	बतावई[2]
कर + वा	-	करवा	करवावई[3]
कर + वा	-	करवा	करवाय[4]

जिन सामान्य धातुओं में आधारिक संयुक्त स्वर आता है उनमें यथावत् स्थिति रहकर ही प्रेरणार्थक संलग्न होते हैं; यथा -

पढ + आ	पढा	पढाये[5]
समुझ + आ	समुझा	समुझाये[6]
जर + आ	जरा	जराएउ[7]

। २ । <u>नाम धातुएँ</u> -

नाम शब्दों । संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि । में शून्य । 0 ।, - आ आदि प्रत्ययों के योग से नाम धातुओं की रचना हुई है । कुछ नाम धातुएँ निम्नवत हैं -

<u>संज्ञा</u> - शब्द से संरचित नाम धातुएँ -

नाम शब्द	प्रत्यय	नाम धातुएँ	प्रयुक्त रूप
अपकार	शून्य ।0।	अपकार	अपकारी[8]
उपज	"	उपज	उपजी[9]

---

1. रा० वि०अं०का०2804/2. रा० वि०अं०का०2804/3. रा० वि०उ०का०3296
4. रा० वि०उ०का०2786/5. रा० वि०बा०का०0115/6. रा० वि०अयो०का०0742
7. रा० वि०उ०का०2348/8. रा० वि०बा०का०015/9. रा० वि०बा०का०023

<u>विशेषण</u> - शब्दों से निर्मित नाम धातुएं -

नाम शब्द	प्रत्यय	नाम धातुएं	प्रयुक्त रूप
प्रगट	शून्य (0)	प्रगट	प्रगटे[1]
सोहावन	"	सोहावन	सोहावनी[2]
अकुल(आकुल)	- आ	अकुला	अकुलाय[3]
अधिक	- आ	अधिका	अधिकाई[4]
सरस	शून्य	सरस	सरसे[5]
मीठ(मीठा)	"	मीठ	मीठे[6]

<u>क्रिया विशेषण</u> - शब्दों से बनी नाम धातुएं अत्यल्प हैं -

नाम शब्द	प्रत्यय	नाम धातुएं	प्रयुक्त रूप
अनुसार	शून्य(0)	अनुसार	अनुसारी[7]
			अनुसारी[8]
फिर	"	फिर	फिरे[9]
			फिरउ[10]

<u>सर्वनाम</u> - शब्दों से निर्मित नाम धातुएं किंचित हैं -

नाम शब्द	प्रत्यय	नाम धातुएं	प्रयुक्त रूप
अपन	-आ	अपना	अपनायउ[11]
			अपनाय[12]

---

1. रा० वि०बा०का०15/2. रा० वि०उ०का०3015/3. रा० वि०बा०का०126
4. रा० वि०बा०का०102/5. रा० वि० अयो०का०628/6. रा० वि०उ०का०2918
7. रा० वि०बा०का०209/8. रा० वि०बा०का०133/9. रा० वि०किं०का०2576
10. रा० वि०उ०का०3270/11. रा० वि०किं०का०203/12. रा० वि०बा०का०417

इसके अतिरिक्त अनुकरण वाची संज्ञाओं से निर्मित नाम धातुएं भी आलोच्य ग्रन्थ की भाषा में प्राप्त हैं, यथा -

करक	-0	करक	करकेउ[1]
धिक्कार	-0	धिक्कार	धिक्कारेउ[2]

7.2 <u>समापिका प्रकार</u>

क्रिया स्थान पर प्राप्त होने वाले क्रिया-रूप समापिका प्रकार के हैं, अन्यत्र मिलने वाले रूप असमापिका के हैं । समापिका प्रकार के क्रिया-रूप दो कोटि के हैं -

(1) <u>तिङन्ती</u> -

जिनकी रूप-रचना कर्त्ता के पुरुष एवं वचन के अनुसार होती है ।

(2) <u>कृदन्ती</u> -

जिनकी रूप-रचना कर्त्ता या कर्म के लिंग के अनुसार होती है ।

असमापिका प्रकार के अन्तर्गत क्रियार्थक संज्ञा तथा पूर्वकालिक कृदन्त आते हैं ।

7.2.1 <u>तिङन्ती - रूप</u>

यह चार अर्थों में प्राप्त होते हैं -

(1) वर्तमान (निश्चयार्थ)

(2) संभावनार्थ (आज्ञार्थ)

---

1. रा० कि०का०गा० 190/2. रा० कि०सु०का० 400

(3) भविष्य (निश्चयार्थ) (आज्ञार्थ)

(4) भूत (निश्चयार्थ)

7.2.1.1 वर्तमान निश्चयार्थ

आलोच्य ग्रन्थ "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में प्राप्त रूपों की रचना निम्नांकित प्रत्ययों के योग से हुई है-

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उ0 पु0	- अउँ ,-औं - औ	-
म0 पु0	- असि	-
अ0 पु0	-अइ,-ऐ-अय,-ई,-आहिं -हिं,-आवै-वै,	-ईं,- यँ - आवैं

उत्तम पुरुष : एक वचन -

-अउँ - निज नयन देखेउँ नैन । ते प्रगट बोलउँ बैन ।[1]

अब पूछउँ कृपायतना।[2]

-औं - यन विवेक बिलोकि कहौं उर पूरन ब्रह्म अनंत निहारौं।[3]

---

1. रा0वि0पु0का01490/2. रा0वि0उ0का03306/3. रा0वि0बा0का0402

करौं कंद आहार बिहार टारी ।[1]

दंडक मैं अब बास करौं जहँ त्रिभुवनै रचना रजधानी ।[2]

तेहि कारन ग्राम न बास करौं ।[3]

अब मैं परतीत न रीत टारौं ।[4]

बिरथा जान नाहीं हरौं प्रान तेरे ।[5]

मैं सरीर रघ दुकाद को भोग करौं तोह पाप ।[6]

-औ - बन्दौं सारद ईश, सबै सिद्ध दायक प्रभू ।[7]

प्रबल दुःख देखा तो विपरीत देखौं।[8]

कपि पंकज गात समान सुनौ सखा रघ कौटिन पाप करौ।[9]

मध्यम पुरुष : एक वचन -

-असि- ताहि न जानसि मंदमति ।[10]

कहाँ जासि दसकंठ सठ ।[11]

अन्य पुरुष : एक वचन -

-अइ - कुल अड़भ्राता सहित सुन्दर देखा प्रतिमा प्रभू जानी ।[12]

बचन न लेखइ सरीर, ते किमि रचइ बिकार रत ।[13]

कहीं कहीं संधि हो जाने के कारण "इ" अपने पूर्ववर्ती "अ" के साथ संयुक्त होकर "ऐ" हो गई है । "ऐ" उच्चारण सुविधार्थ "अय" के मिश्रित रूप में प्राप्त होता है -

---

1. रा० वि० अयो० का० 746/2. रा० वि० अर० का० 870/3. रा० वि० कि० का० 1272
4. रा० वि० सु० का० 1682/5. रा० वि० लं० का० 2069/6. रा० वि० उ० का० 2996
7. रा० वि० बा० का० 2/8. रा० वि० अयो० का० 801/9. रा० वि० कि० का० 1175
10. रा० वि० लं० का० 1935/11. रा० वि० अर० का० 1086/12. रा० वि० बा० का० 59
13. रा० वि० अयो० का० 823

उत्तम पुरुषः एक वचन

-उं - देउं हृदय निज खोटा ।[1]

देउं पुर राज सुता साज तेहीं ।[2]

-अउं - सेवउं प्रीत समेता ।[3]

दृग सो अब देखउं प्रान पिया ।[4]

-औं - करौं सहित उर पाव ।[5]

धौं समेत निशाचर को रघुबीर प्रचार प्रचंड संघारौं ।[6]

लघु लखा दारुन मातसन दुह देय बहु वर मैं वरौं ।[7]

आजु करौं कदान तुम्हें ।[8]

-औ - करौ मोहिं अभिराम, जानी आजु अतीव निशु ।[9]

आज करौ मम प्रेम प्रभू कर देव सुमा अपराध हरौ ।[10]

करौ निशाचर राम, नरतन सरुण्य गुन ।[11]

मध्यम पुरुष -

मध्यम पुरुष के अन्तर्गत प्रयुक्त क्रिया रूप दो प्रकार के प्राप्त होते हैं -

1- सामान्य और

2- आदरार्थक

---

1. रा० वि०बा०का०395/2. रा० वि० कि०का०1222/3. रा० वि०लं०का०779
4. रा० वि०लं०का०2634/5. रा० वि०अयो०का०455/6. रा० वि०अर०का०1124
7. रा० वि० कि०का०1216/8. रा० वि०लं०का०2275/9. रा० वि०बा०का०40
10. रा० वि०अयो०का०605/11. रा० वि०अर०का०909/

अन्य पुरुष : एक वचन -

-इहै - करिहै क्रोध नीत उर ,हतिहै सकल सुजान ।[1]

हरिहै रिपु प्रान त्रिलोक धनी ।[2]

-औगे - जब राम के पाँयन माँहि रचौगे ।[3]

बहुवचन -

-इहीं - जो सुनिहीं यह राम जस, लीला बाल विनोद ।

चंद मुक्ति फल चार तेहि, देहीं प्रभु करि मोद ।।[4]

। दे + इहीं = देहीं ।

आजु देख त्रिलोक लोचन सबै संकट त्यागिहीं ।[5]

रघुबर रावन समर जस, जे सुनिहीं रुचि हेत ।[6]

चतुरानन पूरन दिव्य करनी विमल रागन गाइहीं ।[7]

भविष्य आज्ञार्थ -

सामान्य आज्ञार्थ से इस काल का प्रयोग किंचित भिन्न है और इसलिए रूप-रचनात्मक विभक्ति- प्रत्यय भी भिन्न हैं जिन्हें निम्नांकित रूप से प्रदर्शित किया जा सकता है -

	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	- ऊँ, -औ,	-
म० पु०	- एउ	-अउ-औ, -एउ, -इये-इयो

---

1. रा० वि०सु०का०1451/2. रा० वि०सु०का०1522/3. रा० वि०कि०का०1821
4. रा० वि०बा०का०425/5. रा० वि०अयो०का०785/6. रा० वि०लं०का०2599
7. रा० वि०उ०का०3509

उत्तम पुरूष : एक वचन -

-उं - करौं चतुर्दस जोग रचौं पुनि प्रेम बियोगन सौं ग्रह आऊं ।[1]

राम कौ भाव उछाह रचौं तौ चलौं निजु मंदिर मैं सुख पाऊं।[2]

-औ - जो पलटौ नाहिं मात मैं ।[3]

मध्यम पुरूष : एक वचन -

-एउ- तौ छूटेउ मम काल ।[4]

मध्यम पुरूष : बहु वचन -

-अउ - चलउ तौ मंदिर मान रच ।[5]

तुम करउ मैना प्रेम ।[6]

-औ - करौ नहीं चित भंग जब लग सिद्ध न होय बर ।[7]

निजु भावित हमैं बरदान करौ ।[8]

कारन कौन नरेस कहौ ।[9]

-एउ - कहेउ भूप सो तात बिनती हमारी ।[10]

-इये - समस्त सिद्धि बुद्धि को प्रताप पुंज जानिये ।[11]

-इये - प्रचंड सेन भाल सीस ताहि दपर जाइये ।[12]

---

1. रा० वि०अयो०का०551/2. रा० वि०अयो०का०553/3. रा० वि० कि०का०1208
4. रा० वि० कि०का०1208/5. रा० वि०अयो०का०496/6. रा० वि०अयो०का०624
7. रा० वि०अयो०का०496/8. रा० वि०लं०का०2665/9. रा० वि०बा०का०32
10. रा० वि०अयो०का०615/11. रा० वि०बा०का०168/12. रा० वि०सु०का०1670

मध्यम पुरुष : बहु वचन -

-एउ - जब तुम हवेउ प्रचार रन निसु नायक प्रभु धीर ।[1]

केहि काज तुम गृह बास छाडेउ ।[2]

अन्य पुरुष : एक वचन -

-एउ - येक अंत उर हर्ष राखि, देखेउ कब तिनहिं धीर ।[3]

मुनि कश्यप आदिहिं जोग किंहेउ ।[4]

देखत उठ धायेउ आतुर आयेउ हिदै लगायेउ प्रेम भरे ।[5]

भायेउ प्रभा तत्काल, धरेउ हर्ष टंकक बिपन ।[6]

कहि दुष्ट गिरा निसु धाम [illegible] ।[7]

जहाँ हवेउ घननाद रिपु, लछमन कुछ निदान ।[8]

-यउ - हुय के प्रभु रावन जन्म लयउ ।[9]

येक समय मुनि कश्यप ने तप साधन अखंडित जोग किंहेउ ।[10]

अत्यधिक भाषित करेउ पायउ असुर सरीर ।[11]

बहु वचन -

-एउ - भैक देखेउ न धारेउ कर तो प्रभु चाप अरोपन न काहु चढ़ायेउ ।[12]

अनेक दान प्रदान दै सन्मान विप्रन को किंहेउ ।[13]

चार कुमार नाम सुनेउ सबही ।[14]

यहुँ चोर तो रोदन तोर भरेउ प्रभु ध्यान हरेउ जिन मान किंहेउ ।[15]

---

1. रा० वि० अर० का० 1105/2. रा० वि० कि० का० 1201/3. रा० वि० बा० का० 039
4. रा० वि० बा० का० 046/5. रा० वि० अयो० का० 646/6. रा० वि० अर० का० 1050
7. रा० वि० सु० का० 1433/8. रा० वि० लं० का० 2699/9. रा० वि० बा० का० 020
10. रा० वि० बा० का० 023/11. रा० वि० अर० का० 0292/12. रा० वि० बा० का० 173
13. रा० वि० अयो० का० 0848/14. रा० वि० अर० का० 1030/15. रा० वि० सु० का० 1604

तुर तक तमि निज भाग लियेउ ।[1]

-पउ - भयउ तो सबद अपार, माहि माहि भूपत भवन ।[2]

तिन कियउ तिलक मुरार ।[3]

7.2.2 कृदन्ती रूप -

कृदन्तीय रूपों की सहायता से आलोच्य महाकाव्य की भाषा में वर्तमान निश्चयार्थ, भूत निश्चयार्थ तथा भूत संभावनार्थ की अभिव्यक्ति हुई है । वर्तमान कालिक कृदन्ती रूपों के साथ कहीं कहीं वर्तमानकालिक सहायक क्रिया रूपों के प्रयोग से वर्तमान निश्चयार्थ का और भूतकालिक क्रिया-रूपों से भूत निश्चयार्थ का बोध कराया गया है । वर्तमानकालिक कृदन्ती रूपों से भूत संभावनार्थ की भी अभिव्यक्ति हुई है । प्रमुख विभक्ति प्रत्यय- अत - त - इत और - आ हैं ।

7.2.2.1 अपूर्ण -

इस प्रकार के कृदन्ती रूपों की रचना निम्नांकित है -

	एक वचन	बहु वचन
पु०	- अत, - त	- अत - त
स्त्री०	- इत, - अत -ति	

इन विभक्ति-प्रत्ययों के योग से संरचित कृदन्ती रूपों के द्वारा वर्तमान निश्चयार्थ -

---

1. रा० मि०उ०का०3203/2. रा० मि०अयो०का०574/3. रा० मि०बा०का०299

वर्तमान निश्चयार्थ - एक वचन । पु० ।-

-अत - कटि बांधे तुनीर संवारत तीर ।[1]

लोचन छवि हेरत दृष्टि न फेरत पै पै टेरत पाप हरे ।[2]

सुर हूँ लोचन बिना राजा हरत गुन छवि काम के ।[3]

गुन गावत ध्यावत नाम प्रभू ।[4]

पग धारत करत हुलास ।[5]

जेहि तन हेरत क्रोधा भार प्रबल धीर जुबराज ।[6]

-त - पुनि पुनि देत असीसा ।[7]

।स्त्री। - पद परसित हुलसित हिये, पल पल करत सनेह ।[8]
-अत-

-अत- कमला नीर दोउ हगन सों बहत आतुरी सांस ।[9]

-अत - उर लावत रानी, प्रेम समानी, कहि मुख बानी हाय धरे ।[10]

-अत- सुनत सुखा कथौत, बोली ततछन जानुकी ।[11]

-अत- मुख कहत बानी दीन ।[12]

-त- सो गहि दूसर पात । उर मैल दीसत सांस ।[13]

बहु वचन - । पु० । -

-अत- आवत पंछ मही पुर लोग सदा सिसु संग बिराजत कैसे ।[14]

कर होम मनावत विप्र सबै मुख राग सुभग रच वेद भने ।[15]

---

1. रा० वि० बा० का० 142/2. रा० वि० अयो० का० 646/3. रा० वि० अर० का० 1058
4. रा० वि० कि० का० 1354/5. रा० वि० सु० का० 1620/6. रा० वि० लं० का० 1886
7. रा० वि० अयो० का० 446/8. रा० वि० बा० का० 150/9. रा० वि० अयो० का० 482
10. रा० वि० अयो० का० 548/11. रा० वि० लं० का० 2633/12. रा० वि० अर० का० 1003
13. रा० वि० अर० का० 1004/14. रा० वि० बा० का० 70/15. रा० वि० अयो० का० 466

रजत भेक तम अँगनिहु पद पद बहुत उपाटा ।[1]
गिरि खोह नदी बन बीथिन पे । तहँ सोधत रामप्रिया कपि सों
बरषा संकर तेरा सुआ ।[3]
राचत अवनि अकास ।[4]
-त - नाहिं होत प्रान बिनास ।[5]

कहीं कहीं वर्तमानकालिक सहायक क्रियाओं के योग से वर्तमान क्रियार्थों की अभिव्यक्ति हुई है -

तब बालक मोहिं पढ़ावत है ।[6]
आवत हैं रघुनाथ प्रभु ।[7]
जात जहाँ सुर गेह ।[8]

भूत कृदन्तार्थ -

एक वचन

पु० - आ

-आ - कबहूँ मोहिं सुजान, जान्यो रघुबर दास निजु ।[9]
भूतकालिक सहायक क्रियाओं के योग से भूत क्रियार्थों की भी अभिव्यक्ति होती है; यथा-

सुन्यो भयेउ अवनीस तहँ आयेउ मैं गुरु संग ।[10]
राम बचन सुनि मातु सों जात भई पति गेह ।[11]
मैं अनुशासन बचन सुनि, करत भये बिश्राम ।[12]

---

1. रा० वि० अ० का० 1012/2. रा० वि० कि० का० 1329/3. रा० वि० कि० का० 1765
4. रा० वि० उ० का० 2721/5. रा० वि० कि० का० 1258/6. रा० वि० अ० का० 1044
7. रा० वि० सु० का० 1664/8. रा० वि० कि० का० 1251/9. रा० वि० सु० का० 1463
10. रा० वि० बा० का० 47/11. रा० वि० बा० का० 150/12. रा० वि० अ० का० 906

सुनत उठेउ अति क्रोधा हनेउ ताहि निज चरन मुर ।[1]

उपर्युक्त अपूर्ण कृदन्तों का प्रयोग क्रियाविशेषणवत भी उपलब्ध होता है; उदाहरणार्थ-

सुन, पावन पाँव पवित्र सदा नर गावत ध्यावत पाप तजै।[2]
दृग स्त्रवत धारा नीर ।[3]
सुनत सभा सुर भैं, बोले राम विलाप भार ।[4]
येक पढ़ावत कीरकिया हरि भावित पढेउ निकट ते सुख देनी।[5]
उपजे हि दिन लाज सुख, बरनत
सुनत श्रवन रघुवर कथा, भ्रमता दई मिटाय ।[7]

7.2.2.2 पूर्ण -

इस प्रकार के कृदन्तों की रचना लिंग, वचन से प्रभावित है । लिंग, वचन के अनुसार क्रियाविशेषण-प्रत्यय इस प्रकार हैं -

	एक वचन	बहु वचन
पु0 -	-अ, -इन्हो -इन्ही	-ए, -ऐ, -इन्है, -ई-ईं, -इन्हीं, -इन्हौं, -ऐं
स्त्री0-	-इ, -ई, इन्ही	-ईं, -ई, -इन्ही,

1. रा0 मि0 बा0 का0 1678/2. रा0 मि0 बा0 का0 541/3. रा0 मि0 अयो0 का0 673
4. रा0 मि0 कि0 का0 1196/5. रा0 मि0 सु0 का0 1422/6. रा0 मि0 लं0 का0 1956
7. रा0 मि0 उ0 का0 3244

पु० एक वचन -

-उ- कवन हेत सिंगारतव भामिन भूषन हार ।[1]

तुम मुझ पावन कृ वर ।[2]

तुम लछमन कुरु ध्यान, त्यागि मोह ममता प्रबल ।[3]

तेहि कारन तुम मीत ।[4]

देखा अब रस रीत तहाँ गुन-प्रीति किन्ह तुम्ह की अधिकाई ।[5]

तुम सठ मूढ़ गवाँर, ग्यान हीन पसु कृ है ।[6]

बहुर बचार हमार नहा सौ तुम्हा परिवार ।[7]

-इन्हो - मैं कीन्हो अनेह ।[8]

रिझि बिलोक तुम बदन छबि कीन्हो हिदै सनेह ।[9]

एक बार रवि निकट कहँ कीन्हो मन बिश्राम ।[10]

अति दुख कीन्हो मारग लीन्हो भुज तब दीन्हो कुठार ।[11]

जहाँ बालि के पुत्र अस्नान लीन्हो ।[12]

प्रीति देखि रघुबीर उर कीन्हो बोध बिशेष ।[13]

-इन्हो- रघुनायक को मुख आसन दीन्हो ।[14]

तेहि अवसर मैनी सुमत कीन्हो प्रबल बिलाप ।[15]

तुम क्रोध कीन्हो बोध दीन्हो बेगनाम बताइये ।[16]

कीन्हो हेतु प्रमान ।[17]

ताहि मै मन पन कीन्हो ।[18]

---

1. रा०वि०अयो०का०499/2. रा०वि०अयो०का०516/3. रा०वि०अर०का०983
4. रा०वि०कि०का०1170/5. रा०वि०सु०का०1442/6. रा०वि०लं०का०1944
7. रा०वि०उ०का०2859/8. रा०वि०अयो०का०519/9. रा०वि०अर०का०912
10. रा०वि०कि०का०1363/11. रा०वि०सु०का०1418/12. रा०वि०लं०का०2003
13. रा०वि०उ०का०2823/14. रा०वि०बा०का०314/15. रा०वि०अयो०का०612
16. रा०वि०अर०का०1006/17. रा०वि०लं०का०1777/18. रा०वि०उ०का०2774

उपर्युक्त पूर्ण कृदन्ती रूपों का प्रयोग विशेषणवत भी हुआ है; यथा -

सो करे कुश पात कुलात भरे ।[1]
केवट बैन अमी रस से सुनि के हुलसे उर पाप भरे ।[2]
सो करे मन मीचन प्रेम भरे ।[3]
गजगीध अजामिल नारि सुनी येक बार कहे भव पारसरे ।[4]
सेत सिला बिमला अति सुन्दर देखा कृपानिधि पांय धरे ।[5]

7.2.3 सहायक क्रिया -

आलोच्य ग्रन्थ "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में सहायक क्रियायें तिङन्त एवं कृदन्त क्रिया-रूपों के साथ प्रयुक्त होकर कुछ कालों को स्पष्ट करने में सहायक होती हैं । आलोच्य ग्रन्थ में प्रयुक्त समस्त सहायक क्रियाओं को इस प्रकार व्यवस्थित कर सकते हैं; यथा -

(1) वर्तमान काल -

इस काल के सहायक क्रिया-रूपों में प्राप्त धातु "अह्" अथवा "ह्" है । जिसमें पुरुष "वचन के तिङ्-प्रत्यय संलग्न होकर अनेक रूप बनाते हैं । इसके अन्तर्गत प्राप्त क्रियाएं निम्नवत् हैं -

एक वचन - (उ० पु०)

हउं - हउं मैं रघुपति नार ।[6] (ह + -उं)

---

1. रा०वि०बा०का०211/2. रा०वि०अयो०का०771/3. रा०वि०अर०का०948
4. रा०वि०कि०का०1238/5. रा०वि०सु०का०1656/6. रा०वि०कि०का०1195

हौं- धन धन्य हौं मम गात ।[1] । ह् + औं ।

अहौं- गात अहौं सुर प्रेह।[2] । अह् + औं ।

। अन्य पु0 । -

है - कहु सुनी है रघुनाथ ।[3] । ह् + ऐ ।

नर भोग विलोका है ब्रह्म अंश ।[4] । ह् + ऐ ।

सुनी भूप है प्रेह मम नेह ध्यानी।[5] । ह् + ऐ ।

रघुवीर तो आरत भंजन है ।[6] । ह् + ऐ ।

तेठ नाता है मम दास ।[7] । ह् + ऐ ।

बाग उजारि मेघज कपि जो तोह आपा है उर ज्योति धारे।[8]

तत्त तत्त बहु दास है राम भगति

अवतार ।[9] । ह् + ऐ ।

अहै - धन धन्य अहै मिथलेसुर को दिन आजु महूरत सिद्ध धारी।[10]

दल मे काकी सो येक अहै।[11] । अह्+ऐ ।

बहु वचन - । म0 पु0 ।

हौ - गुन मयी सबै गति चान्हत हौ ।

मह काम मनी मन तान्हत हौ।[12] । ह्+औ ।

---

1. रा0 वि0अयो0का0793/2. रा0 वि0 कि0का01251/3. रा0 वि0बा0का0215
4. रा0 वि0अयो0का0430/5. रा0 वि0अयो0का0800/6. रा0 वि0सु0का01611
7. रा0 वि0सु0का01708/8. रा0 वि0लं0का01885/9. रा0 वि0उ0का03367
10. रा0 वि0बा0का0161/11. रा0 वि0लं0का01937/12. रा0 वि0बा0का0137

सुर किन्नर ताप निवारन हौ । । ह+औ ।
मम संकट विपत विदारन हौ ।[1] । ह+औ ।
अब लखा दारुन समर तुम मंडत हौ निधु नैन ।[2] । ह+औ ।

हउ- हउ वचन के तुम दास ।[3] । ह+उ ।

। अन्य पु० । -

हैं - दुःख दोष अदोष सदा हम हैं ।[4] । ह+ऐं ।
दसरथ के बालक हैं ।[5] । ह+ऐं ।
हम दीन सदा सरनागत हैं ।[6] । ह+ऐं ।
रघुनंदन दुष्ट निकंदन हैं ।[7] । ह+ऐं ।

। 2 । भूतकाल -

इस काल के सहायक क्रिया-रूपों में प्राप्त धातु "भ" है । इसके अतिरिक्त "ह" तथा "रह" धातुएँ भी हैं । इन सब में लिंग-वचन के अनुसार विभक्ति-प्रत्यय लगाकर रूप-रचना होती है । प्राप्त रूपों को निम्नवत व्यवस्थित कर सकते हैं -

एक वचन - । पु० । -

भयउ - महि पूरन संकट भार भयउ ।[8]
भयउ सो सबद अपार ।[9]

---

1. रा० वि० कि०का० 1172/2. रा० वि० लं०का० 2515/3. रा० वि० कि०का० 1337
4. रा० वि० बा०का० 397/5. रा० वि० कि०का० 1168/6. रा० वि० सु०का० 1724
7. रा० वि० लं०का० 1974/8. रा० वि० बा०का० 20/9. रा० वि० अयो०का० 574

भई- मै लाल सो गोद निहाल भई ।[1]

जग मैं मम जीवन सुचित भई ।[2]

कौसिल्या व्याकुल भई ।[3]

उर भई पूरन प्रीत ।[4]

कर लागत सीस असीस भई ।[5]

जो भई सुर करतूत ।[6]

परसत भई अशोक, यह बिधान बोली बचन ।[7]

सो हरेउ छन दारुन पीर भई ।[8]

रही - सो सुनि माय न प्रेम समाय अघाय रही सुख और निहारी।[9]

चंद सुधारस भावित अवांछित सो उर पाय अघाय रही ।[10]

तन मे अघ की नहिं रेखा रही ।[11]

बिनती उपजाय अघाय रही ।[12]

बिपरीत की रीत न पैच रही ।[13]

रघुनायक बिष्णु सहायक हैं तिनकी करुना मम पैच रही ।[14]

अघभंजन दूर सो शोक रही ।[15]

<u>बहु बचन - । पु० । -</u>

भये - राम बिलोक अशोक भये बिनती उर भावन चाय धरैं ।[16]

बहुर समाय बोलाय तहँ करत भये बिश्राम ।[17]

सुखी भये नवखंड ब्रह्म आदि सुर बच्छ मुनि ।[18]

---

1. रा० वि० बा० का० 55/2. रा० वि० बा० का० 138/3. रा० वि० अयो० का० 552
4. रा० वि० कि० का० 1190/5. रा० वि० सु० का० 1432/6. रा० वि० लं० का० 2222
7. रा० वि० लं० का० 2132/8. रा० वि० उ० का० 3324/9. रा० वि० बा० का० 73
10. रा० वि० अयो० का० 830/11. रा० वि० अर० का० 1135/12. रा० वि० कि० का० 1346
13. रा० वि० सु० का० 1672/14. रा० वि० लं० का० 1966/15. रा० वि० उ० का० 2808
16. रा० वि० बा० का० 332/17. रा० वि० अयो० का० 781/18. रा० वि० अर० का० 1020

तन कोटिन ताप प्रनाश भये ।[1]

भये मोहमत पवन सुत।[2] । आदरार्थ रूप में प्रयुक्त ।

भये कीस सिर मौर ।[3]

हम दीन अनाथ सनाथ भये ।[4]

देखा तहाँ कपिवृन्द सबै तत्काल भये अतिशोचन ... भारे।[5]

भो - सुर पच्छ फनिंद निशाचर ते बल त्यागि निरंतर भो सब भारे।[6]

सासुज भो अनुकूल ।[7] । आदरार्थ रूप में ।

बालि ने अहि ईस, भो अज प्रभु चरन गहि ।[8]

रहे- सुत छप्पन विकल बोधा कहँ दुग कोटिन पाय बिलोकि रहे ।[9]

कपा पंथ बिहँग बिलोक रहे ।[10]

तुम भोगहिं पाय अघाय रहे ।[11]

येकहि बार प्रहार सबै रण भूमि अटीर न धीर रहे ।[12]

रहे बिलोचन हेर छवि ।[13]

दृग रहे दोउ प्रभु धार ।[14]

हुते - क्रोध के ताप हुते उर मे लखि सो मुनि मुद्रिति सोध निकारे।[15]

बाल्मीक सब सदन सिधु गये हुते बनवास।[16]। आदरार्थ रूप में प्रयुक्त ।

। स्त्री0 । -

भई - उर पुलक प्रेम उछाह मंगल धाम ते आवत भई ।[17]

पुनि बिदाई जादीस कहँ, चला भई निज धाम ।[18]

---

1. रा0वि0कि0का01364/2. रा0वि0सु0का01573/3. रा0वि0लं0का01932
4. रा0वि0लं0का02356/5. रा0वि0उ0का02929/6. रा0वि0बा0का0172
7. रा0वि0अर0का01138/8. रा0वि0लं0का01784/9. रा0वि0बा0का0293
10. रा0वि0अयो0का0628/11. रा0वि0कि0का01310/12. रा0वि0सु0का01544
13. रा0वि0लं0का02628/14. रा0वि0उ0का02874/15. रा0वि0बा0का0111
16. रा0वि0उ0का03141/17. रा0वि0बा0का0269/18. रा0वि0बा0का0271

7.3 असमापिका प्रकार

7.3.1 पूर्वकालिक कृदन्त

इस प्रकार के रूपों में धातुओं के साथ-इ-ई प्रत्यय का योग मिलता है। कुछ रूपों में आगेवान की दृष्टि से-अ प्राप्त होता है। इन प्रत्ययों के योग से निर्मित रूपों के साथ परसर्ग के -कइ भी प्रयुक्त हुए हैं -

-इ- सर मैं सरो अति धारिज वृन्द प्रभाकर आनन देखि हसै।[1]
जब हाती होय चरन गहि वसिष्ठ राम मिलैत।[2]
कुछ आयस मानि चलो वन मैं।[3]
प्रीति देखि रघुनाथ कर गहि लायेउ हिय उर।[4]
पैक मात महँ सिद्ध करि मैं आयेउ मम पास।[5]
गहि पैक पैकन डारे।[6]
प्रबल देखि कपि असुर भट धौ सिला गहि हाथ।[7]
बहुर लछन रघ प्रेम मिलै सकुचान पान गहि।[8]

-ई- चलेउ अंग सरभंग सुरसरि नाई।[9]
उठेउ दसकंठ उर तीक खाई।[10]

-य- चला नीच मिलाय की मन पे।[11]
सीस नाय कैसी चौंड।[12]
बहुर चौ कुन्त पाय।[13]

---

1. रा०मि०बा०का०143/2. रा०मि०अयो०का०491/3. रा०मि०अर०का०989
4. रा०मि०कि०का०1176/5. रा०मि०सु०का०1481/6. रा०मि०लं०का०2015
7. रा०मि०लं०का०2016/8. रा०मि०उ०का०2762/9. रा०मि०अर०का०901
10. रा०मि०लं०का०1951/11. रा०मि०बा०का०384/12. रा०मि०अयो०का०446
13. रा०मि०अर०का०879

सुखा पाय अघाय रहे मन को ।[1]

बढ़ेउ सुमेर समान तन लगेउ सीस नभ जाय ।[2]

आयसु पाय तुरंत चले ।[3]

श्रम पाय कपीस अधीर गिरे ।[4]

तहँ नारद आय विलोक रहे ।[5]

परे चरन दोउ आय ।[6]

-3- पढ़ रहा दिव्य विमान गुरु आये राम निकेत ।[7]

सिहँसि गहेउ कौशिक पान सौंपि जानकी ।[8]

मोहि लखा आतम ज्ञान ।[9]

देखा सिय बोली वचन धन्य धन्य सुखा सार ।[10]

सो सुन बोले राम ।[11]

सुखा देखा निछावर बोल उठेउ ।[12]

तिलक साज सुन राम बोले बानी प्रेम रस ।[13]

बचे लंका मीतान सुर देखा हारे ।[14]

-4- भूषण रतन अरु वित्त ले धा सि वंदन पाद अनाथ पुकारे।[15]

बन्दमुख पुंज ले चली सो प्रेम आतुरी ।[16]

ले पूज चली विशेष ।[17]

दपरी पद पद प्रीत करि ले रघुनायक संग ।[18]

---

1. रा०चि०कि०का०1233/2. रा०चि०सु०का०1396/3. रा०चि०लं०का०1893
4. रा०चि०लं०का०2307/5. रा०चि०उ०का०2904/6. रा०चि०उ०का०3150
7. रा०चि०अयो०का०453/8. रा०चि०अर०का०883/9. रा०चि०कि०का०1189
10. रा०चि०सु०का०1412/11. रा०चि०सु०का०1693/12. रा०चि०लं०का०1882
13. रा०चि०उ०का०2785/14. रा०चि०उ०का०3154/15. रा०चि०बा०का०234
16. रा०चि०अयो०का०603/17. रा०चि०अयो०का०596/18. रा०चि०अर०का०1048

ले वेग चलेउ तेहि मारग को जहँ सीता बसी अति भीत भरेउ।[1]

चढ़ि ताहित दल राम कोप जब को धाय ले ।[2]

ले माल कोटिन संग ।[3]

मिलउ जानुकी संग ले ।[4]

बाल्मीक आश्रम, तहाँ चली अब मोहिं ले ।[5]

दै भाषित अशोकित पाप दही ।[6]

रची विराट भूम सेष दै ।[7]

ठोक ठेक भूप हाँक दै धिक्कारेउ कर तोर ।[8]

दै अग्नि साखी मीत ।[9]

तेहि अवसर रघुबीर सुवर्णदान लक्षणि दै ।[10]

दै धीरज सुभ धीर ।[11]

दै असीस ब्राह्मन को ।[12]

ल + ै = ले तथा द + ै = दै रूप बने हैं ।

ये रूप आलोच्य ग्रन्थ में सर्वाधिक प्राप्त होते हैं ।

परसर्ग के योग से बने रूप -

के - रघु राम भूषन को सुभ सुख अंग अंगन ताप के ।[13]

सुनि के विलाप तात को प्रवीन बुद्धि चातुरी ।[14]

कुश बोल सुनि निरिख के सुन के गुन के गुनवंत सरासन लीन्हो।[15]

---

1. रा० चि० कि०का० 1184/2. रा० चि० यु०का० 1653/3. रा० चि० लं०का० 2556
4. रा० चि० लं०का० 1820/5. रा० चि० उ०का० 3000/6. रा० चि० उ०का० 2910
7. रा० चि० लं०का० 2051/8. रा० चि० यु०का० 1400/9. रा० चि० कि०का० 1190
10. रा० चि० अर०का० 904/11. रा० चि० अयो०का० 598/12. रा० चि० बा०का० 207
13. रा० चि० बा०का० 288/14. रा० चि० अयो०का० 603/15. रा० चि० अर०का० 881

बिहँसे रघुनाथ गिरा सुन कै ।[1]

कै छोरब मारब नहीं ।[2]

मन्त्राप्रात कै यह पैज लई ।[3]

प्रनाम प्रेम प्रीति कै कोउ तुरंत पाय सों ।[4]

7.3.2 क्रियार्थक संज्ञा कृदन्त

इस प्रकार की रूप-रचना में - अन प्रत्यय का योग प्राप्त होता है, यथा -

-अन- पैठ गौ बन सोधन सोध अगोड़ जहाँ मृग सिंह हरी ।[5]

रावन कौ प्रहारन को तोलई तुम देह बिकार ग्यानी ।[6]

दसकंठर कौ बिनासन को अब चाहत है उपचार कियउ ।[7]

चली करन प्रतिबोधा ।[8]

प्रभु पावन आवन बैन कहे ।[9]

ताहि सँघारन कारन को रघुबीरहिं छोर तौ माँगन आये ।[10]

तेहि खोजन को तुम जोग कोउ ।[11]

रूपमंडल देखन भाय कहेउ ।[12]

मोरन अपने कौ निज ।[13]

ब- ताहि सौ कुछ दोष नाहीं कृपा भी तदागुर भाखात है ।[14]

(तिर्यक् रूप)

---

1. रा० चि० कि०का० 1271/2. रा० चि०सु०का० 1474/3. रा० चि०लं०का० 2269

4. रा० चि०उ०का० 2738/5. रा० चि०बा०का० 94/6. रा० चि०अयो०का० 437

7. रा० चि०अर०का० 885/8. रा० चि०लं०का० 1814/9. रा० चि०उ०का० 2732

10. रा० चि०बा०का० 104/11. रा० चि०अयो०का० 788/12. रा० चि०अर०का० 987

13. रा० चि०लं०का० 1923/14. रा० चि० कि०का० 1248

अबे-	राम उठायबे को बल पायेउ ।[1]	। तिर्यक रूप ।
अबो-	मिलबो हमरो तिनको न बनै ।[2]	

7.4 संयुक्त क्रियाएं -

आलोच्य ग्रन्थ "रामविनोद" महाकाव्य की भाषा में संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग मिलता है । कालवाची कृदन्तों, क्रियार्थक संज्ञाओं, मूल धातुओं और नाम शब्दों के साथ अनेकार्थक मुख्य क्रियायें सहायक रूपों में प्रयुक्त करके विशिष्ट अर्थों की सिद्धि की गई है । गठन की दृष्टि से बनाए गए वर्ग निम्नवत हैं -

1- वर्तमान कालिक कृदन्त	+	सहायक क्रिया
2- भूत कालिक कृदन्त	+	सहायक क्रिया
3- मूल धातु	+	सहायक क्रिया
4- पूर्वकालिक कृदन्त	+	सहायक क्रिया
5- क्रियार्थक संज्ञा	+	सहायक क्रिया
6- नाम शब्द	+	सहायक क्रिया

।1।- वर्तमान कालिक कृदन्त + सहायक क्रिया = ।मुख्य क्रियाओं के विशिष्ट क्रियारूप।

देत	+ भौ	= देत भौ[3]
देखत	+ गो	= देखत गो[4]
सुनत	+ बैठे	= सुनत बैठे[5]

---

1. रा०वि०बा०का०173/2. रा०वि०कि०का०1936/3. रा०वि०बा०का०112
4. रा०वि०अयो०का०448/5. रा०वि०उ०का०3446

वर्तमानकालिक कृदन्त	+	सहायक क्रिया	=	(मुख्य क्रियाओं के विशिष्ट क्रिया रूप)
सुनत	+	चौ	=	चौ सुनत[1]
सुनत	+	चौरेउ	=	चौरेउ सुनत[2]
बरनत	+	उपजे	=	उपजे बरनत[3]
देखात	+	दहै	=	देखात दहै[4]
आवत	+	भागे	=	आवत भागे[5]
देखात	+	तजे	=	देखात तजे[6]
सुनत	+	फली	=	सुनत फली[7]
देखात	+	ठाई	=	देखात ठाई[8]
जानत	+	करै	=	जानत करै[9]
देखात	+	टरे	=	देखात टरे[10]

(2)—भूतकालिक कृदन्त	+	सहायक क्रिया	=	(मुख्य क्रियाओं के विशिष्ट क्रिया रूप)
गये	+	हुते	=	गये हुते[11]
पढ़ी	+	दिखराई	=	पढ़ी दिखराई[12]

---

1. रा० वि० कि०का० 1299/2. रा० वि० सु०का० 1580/3. रा० वि० लं०का० 1956
4. रा० वि० उ०का० 2860/5. रा० वि० उ०का० 3258/6. रा० वि० लं०का० 2174
7. रा० वि० सु०का० 1661/8. रा० वि० अयो०का० 547/9. रा० वि० बा०का० 142
10. रा० वि० अयो०का० 749/11. रा० वि० उ०का० 3141/12. रा० वि० बा०का० 257

13- मूल धातु + सहायक क्रिया = मुख्य क्रियाओं के विकल्परूप।

मूल धातु	+	सहायक क्रिया	=	मुख्य क्रियाओं के विकल्परूप
मान	+	लये	=	मान लये[1]
तप	+	देउ	=	तप देउ[2]
कर	+	सके	=	कर सके[3]
छीन	+	लयेउ	=	छीन लयेउ[4]
बोल	+	उठी	=	बोल उठी[5]
तोड़ा	+	लियेउ	=	तोड़ा लियेउ[6]
बीत	+	गये	=	बीत गये[7]
माँग	+	लिये	=	माँग लिये[8]
बोल	+	उठे	=	बोल उठे[9]
निहार	+	दयेउ	=	निहार दयेउ[10]
घेर	+	लियेउ	=	घेर लियेउ[11]
कूद	+	गयेउ	=	कूद गयेउ[12]
छूटा	+	गयेउ	=	छूटा गयेउ[13]

14- पूर्वकालिक कृदन्त के योग से बने संयुक्त क्रिया का संख्या की दृष्टि से सर्वाधिक है -

पूर्वकालिक कृदन्त	+	अन्य क्रियाएँ	=	संयुक्त क्रिया
गहि	+	लाये	=	गहि लाये[14]

---

1. रा० वि० बा० का० 347/2. रा० वि० अयो० का० 510/3. रा० वि० अर० का० 953
4. रा० वि० कि० का० 1181/5. रा० वि० सु० का० 1407/6. रा० वि० लं० का० 1764
7. रा० वि० उ० का० 2815/8. रा० वि० अयो० का० 540/9. रा० वि० अर० का० 1156
10. रा० वि० कि० का० 1214/11. रा० वि० सु० का० 1567/12. रा० वि० लं० का० 1835
13. रा० वि० उ० का० 2988/14. रा० वि० बा० का० 393

5। क्रियार्थक संज्ञा	+ सहायक क्रिया	= संयुक्त क्रियाओं के विभिन्न रूप।
देखन	+ धाई	= देखन धाई[1]
करन	+ लागे	= करन लागे[2]
बोरन	+ उपचे	= बोरन उपचे[3]
छुवन	+ पावई	= छुवन पावई[4]
बिलोकन	+ धावत	= बिलोकन धावत[5]
बिलोकन	+ आयो	= बिलोकन आयो[6]
करन	+ चली	= करन चली[7]
लेन	+ चौउ	= चौउ लेन[8]

6। नाम शब्द	+ अन्य क्रिया रूप	
सिर	+ नायेउ	= सिर नायेउ[9]
ईस	+ चढ़ै	= ईस चढ़ै[10]
बिहँग	+ कहै	= बिहँग कहै[11]
बारिद	+ तरै	= बारिदं तरै[12]
दससीस	+ बोलेउ	= दससीस बोलेउ[13]
कंठ	+ परे	= कंठ परे[14]
मुनिस	+ लहे	= मुनिसं लहे[15]

---

1. रा0 वि0 बा0 का0 412/2. रा0 वि0 सु0 का0 1595/3. रा0 वि0 लं0 का0 1923
4. रा0 वि0 उ0 का0 3296/5. रा0 वि0 बा0 का0 96/6. रा0 वि0 बा0 का0 235
7. रा0 वि0 लं0 का0 1814/8. रा0 वि0 उ0 का0 3350/9. रा0 वि0 बा0 का0 173
10. रा0 वि0 अयो0 का0 635/11. रा0 वि0 अर0 का0 933/12. रा0 वि0 कि0 का0 1352
13. रा0 वि0 सु0 का0 1549/14. रा0 वि0 लं0 का0 2136/15. रा0 वि0 उ0 का0 3032

8. वाक्य- रचना

आलोच्य महाकाव्य "रामविनोद" की भाषा में वाक्य संरचना का अध्ययन छन्दबद्ध होनेके कारण कुछ जटिल है । काव्य के अन्तर्गत प्रयोग-स्वच्छन्दता रहती है । अस्तु प्रयोग वैभिन्न्य उपलब्ध होता है । छन्द-लय के निर्वाह से पदक्रम, पदान्वय आदि अस्त-व्यस्त हो जाता है । छन्दानुरोध से कहीं परसर्ग का प्रयोग कहीं लोप होता है । अर्थ करते समय पाठक को परसर्ग-योजना स्वयं करनी पड़ती है । कर्त्ता, कर्म एवं क्रिया आदि में कहीं किसी एक का लोप प्राप्त होता है । कहीं-कहीं समुच्चय बोधक अव्ययों का लोप मिलता है । उद्देश्य-विधेय के प्रयोग में प्रायः भिन्नता का क्रम परिवर्तित प्राप्त होता है । वाक्य में हर शब्द की वास्तविक स्थिति समझना अति दुरूह है ।

8.1 वाक्य कोटियाँ -

संरचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं -

1- सामान्य वाक्य
2- संयुक्त वाक्य
3- यौगिक वाक्य

8.1.1 सामान्य वाक्य -

सामान्यतः सामान्य वाक्यों में एक उद्देश्य तथा एक विधेय रचनात्मक संघटक होते हैं । इन्हें महत्तम समीपी संघटक कहा जाता है । उद्देश्य तथा विधेय की स्थितियों को स्पष्ट करने के लिए निम्नांकित उदाहरण

निम्न प्रकार हैं -

(1) <u>कर्तरि प्रयोग</u> -

रचे राम लीला बिपुल।[1]

कौसिल्या व्याकुल भई।[2]

सुरपति रचेउ बिमान।[3]

देखेउ राम सुजान।[4]

मैं डोलौं दारुन बिपिन।[5]

कहँ पठेउ कपिराय।[6]

गयेउ बालिकुमार।[7]

बोले राम निदान।[8]

तहाँ लिखेउ मैं बात।[9]

तारा लखेउ बिमान।[10]

बोलेउ पवनकुमार।[11]

बोली आतुर जानकी।[12]

(2) <u>कर्मणि प्रयोग</u> -

दूलह करी बनाय।[13]

पुनि लखेउ रघुबीर।[14]

भजन किये तर तुम मन।[15]

---

1. रा० बि० बा० का० 89/ 2. रा० बि० अयो० का० 552/ 3. रा० बि० अयो० का० 47।
4. रा० बि० अर० का० 874/ 5. रा० बि० कि० का० 1170/ 6. रा० बि० सु० का० 1438
7. रा० बि० लं० का० 1944/ 8. रा० बि० उ० का० 2888/ 9. रा० बि० उ० का० 321।
10. रा० बि० कि० का० 1260/ 11. रा० बि० सु० का० 1635/ 12. रा० बि० उ० का० 2982
13. रा० बि० बा० का० 337/ 14. रा० बि० अयो० का० 568/ 15. रा० बि० अर० का० 1014

तट जाय कीन्है डागें ।[1]

निज को पुर माँहि प्रवेश कियेउ।[2]

तत्काल आतुर चढ़ी डोली ।[3]

सीस नाहि राजा पुनि पाँय लागे।[4]

अनुराग सों भीद उदास करी।[5]

सुना नरी सुत वचन सों नरी अंग मे आग।[6]

तुलसी जल दिव्य सँवार तहाँ ।[7]

छल केवल सों गहि सौंप लयेउ ।[8]

(3) <u>भावे प्रयोग</u> -

उपमा कहि हैं न पार लहि ।[9]

नेति नेति ब्रह्म से न वेद पार पावहि ।[10]

गिरजा रघुवर चरित को पावत वेद न पार ।[11]

रामकथा सब सों बरनी करनी कर पार न बुद्धि लहि ।[12]

जिनको सिध ब्रह्म अनन्त की करि ध्यान समाधि नहीं
गति पायी ।[13]

गुन की उपमा कहि वेद कथा जस सागर से नाहिं पार तरे ।[14]

उपर्युक्त वाक्यों में "कर्तरि-प्रयोग" के अन्तर्गत यथार्थ कर्ता के दर्शन होते हैं तब "कर्मणि-प्रयोग" के

---

1. रा०चि०बि०का०1369/2. रा०चि०बु०का०1426/3. रा०चि०वि०का०2393
4. रा०चि०उ०का०2889/5. रा०चि०भा०का०094/6. रा०चि०अयो०का०0520
7. रा०चि०अर०का०0944/8. रा०चि०बु०का०1416/9. रा०चि०अयो०का०0458
10. रा०चि०अर०का०0898/11. रा०चि०वि०का०2309/12. रा०चि०उ०का०3504
13. रा०चि०भा०का०070/14. रा०चि०वि०का०2555

अन्तर्गत व्याकरणिक कर्त्ता है । तृतीय वर्ग "भाववाच्य-प्रयोग" के अन्तर्गत भी व्याकरणिक कर्त्ता ही है ।"भाववाच्य-प्रयोग" का तृतीय वर्ग इस लिए बनाया गया है क्योंकि उद्धृत वाक्यों में असामर्थ्य का बोध होता है । असामर्थ्य भाव प्राबल्य ही इन्हें तृतीय वर्ग-प्रदान करता है ।

<u>सामान्य स्वतन्त्र वाक्य संगठन -</u>

(1) <u>उद्देश्य</u> + <u>विधेय (अकर्मक क्रिया युक्त)</u>

राम प्रवीन	+ बोले[1]
राम	+ बोले[2]
बालिकुमार	+ बोलेउ[3]
असुर कुमार	+ बोलेउ[4]
मुनिधीर	+ बिहँसे[5]
रघुनाथ	+ बिहँसे[6]
गुरु	+ बिहँसेउ[7]
बालिकुमार	+ गर्जेउ[8]

उपर्युक्त उद्देश्य एवं विधेय संघटकों का समीपी संघटकों के योग से युक्त संगठन बन जाता है; यथा -

सँकित भट भागे ।[9]

भट | सँकित — भागे
(1) — (2)

---

1. रा० चि० अयो० का० 536/2. रा० चि० कि० का० 2231/3. रा० चि० कि० का० 1377
4. रा० चि० लं० का० 1831/5. रा० चि० अर० का० 915/6. रा० चि० कि० का० 1271
7. रा० चि० सु० का० 1669/8. रा० चि० लं० का० 1944/9. रा० चि० बा० का० 375

अब कछु राम निकेत ।[1] राम निकेत अब कछु

1 2

आये लछमन राम ढिग।[2] लछमन राम ढिग आये

1 2 1

§ 2 § उद्देश्य + कर्म + विशेषःसकर्मक क्रिया युक्त।

गृह गृह जारेउ पवन सुत ।[3] पवनसुत गृह गृह जारेउ

1 2

इन तीन संघटकों का समीपी संघटकों के योग से मुख्य संघटन बन जाता है -

अवनीस रामहिं राज दीन्हीं।[4] अवनीस रामहिं राजदीन्हीं

1 2

सुआ कहत बानी दीना।[5] सुआ दीन बानी कहत

1 2

---

1. रा० वि० अयो० का० 693/2. रा० वि० अरण्य का० 968/3. रा० वि० सुन्दर का० 1605
4. रा० वि० अयो० का० 468/5. रा० वि० उ० का० 1003

आलोच्य महाकाव्य की भाषा में अनेकानेक समीपी संघटकों के योग से अत्यन्त दीर्घ वाक्य का गठन भी संभव हुआ है; यथा -

नर नारी छबि देखत, कहीं रहत त्यागत भाई ।
रघुबर कर ओबा, त्रिभुवन पावन सोहत उर ।।[1]

8.1.2. संयुक्त वाक्य -

संयुक्त वाक्य में एक से अधिक प्रधान उपवाक्य भी हो सकते हैं । संयुक्त वाक्यों में समाना धिकरण उपवाक्यों का संयोग निम्नलिखित समुच्चयबोधक अव्यय शब्दों से होता है; यथा -

8.1.2.1 संयोजक -

पुलक अंगहीं दृग नीर भरि दिये छाड़ि सब सोक ।[2]
। और का लोप ।
आयेउ गुरु आगे संकित भट भागे।[3] । और का लोप ।
दयउ भूप टेकत राज हमको देव मुनि गुरु पायई ।[4]
। और का लोप ।

---

1. रा0 वि0अयो0का0629/2. रा0 वि0बा0का0193/3. रा0 वि0बा0का0375
4. रा0 वि0अयो0का0563

8.1.2.4 <u>परिणाम बोधक</u> -

असुर कोष भारी सो खारी बजावै ।[1]
तोहि भेरत मेरत लियेउ सो दियेउ पुर काज सभी कृपा पाये।[2]
येक ध्यानन सो पद भान नहीं मनसा प्रत आतम सो न टरै ।[3]

8.1.3 <u>यौगिक वाक्य</u> -

इसमें मुख्य उपवाक्य एक ही रहता है, पर आश्रित उपवाक्य एक या एक से अधिक आ सकते हैं । यौगिक वाक्यों को तीन भागों में विभक्त किया गया है -

(1) संज्ञा उपवाक्य
(2) विशेषण उपवाक्य
(3) क्रिया विशेषण उपवाक्य

8.1.3.1 <u>संज्ञा उपवाक्य</u> -

मुख्य उपवाक्य की किसी संज्ञा या संज्ञा वाक्यांश के बदले जो उपवाक्य आता है उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं । काव्य में प्रायः "कि" का लोप पाया जाता है -

सुन बानी बोली बिहँसि, मुझ मन रहइ बिकार ।[4]
बिनती बहुभाँतिन राम करे । तुम्हरी करुनामय ताप हरे।[5]
कर जोर कँवार निलु कीस कहै । येहि आश्रम मे मुनि दास रहै।[6]

---

1. रा० वि०सुं०का०2018/2. रा० वि०अयो०का०0742/3. रा० वि०बा०का०0132
4. रा० वि०अयो०का०0512/5. रा० वि०अर०का०0875/6. रा० वि०कि०का०1180

सुआ कहेउ भारी भीत ।[1]

कहु केन गिरा किन ताहि हनेउ ।[2]

दे असीस बोले बचन, करे प्रजा सुख लेय ।[3]

तब बचन बोलेउ देव । सुन ब्रह्म आदि अमेय ।[4]

<u>जो</u> -

रामविनोद सुने नर जो रचि प्रीति निरंतर प्रेम भरे ।[5]

तिलक साज जो मुनि कहे सो कीजै सुभा पाय ।[6]

जो करी आयसु दास । सो रची सहित हुलास ।[7]

मीन सुभाव न धाव महेश सो सत बार जो छोय छरे ।[8]

जो माँगी बरदान, सो मैं देउँ विवेक रच ।[9]

8.1.3.2 विशेषण उपवाक्य-

विशेषण उपवाक्य मुख्य वाक्य की किसी संज्ञा की विशेषता प्रकट करता है । इसलिए वाक्य में संज्ञा के स्थान पर अथवा संज्ञा के साथ विशेषण उपवाक्य लगाया जाता है; यथा -

(1) <u>उद्देश्य के साथ</u> -

शिशु वेष विहार की मन पे सुन सो जुग नहिं निकस परे ।[10]

दृग वारिज पे सुखा तारिज ते तिन सो मन मीर न भेख हरे।[11]

पे विपुल सुख विधान । से किये मन परधान ।[12]

---

1. रा० वि० सु० का० 1492 / 2. रा० वि० लं० का० 2105 / 3. रा० वि० उ० का० 2794
4. रा० वि० उ० का० 3284 / 5. रा० वि० बा० का० 09 / 6. रा० वि० अयो० का० 445
7. रा० वि० कि० का० 1267 / 8. रा० वि० लं० का० 1957 / 9. रा० वि० उ० का० 2878
10. रा० वि० अयो० का० 513 / 11. रा० वि० सु० का० 1519 / 12. रा० वि० लं० का० 2223

जो भाई सुर करतूत । तौ कहेउ रतना दूत ।[1]
जौ सिव आय सहाय करै । तिस तौ पर सायक हाथ धरै ।[2]
जौ बरनेउ मम नाथ, तौ सनाथ लोचन भयौ ।[3]
जग मे सोई जीवन मुक्ति सुनी ।[4]

(6) विशेषण उपवाक्य में किसी किसी स्थान पर सम्बन्ध वाचक क्रिया विशेषण का प्रयोग भी मिलता है; यथा-
जहाँ सुर करैं प्रसून तहाँ जहँ राम धरा रच देह धारी ।[5]
आये रघुपति बहुर तहँ, जहाँ सुतीछन प्रेम ।[6]

8.1.3.3 <u>क्रिया विशेषण उपवाक्य</u> -

क्रिया विशेषण उपवाक्य पाँच प्रकार के होते हैं -

(1) काल वाचक
(2) स्थान वाचक
(3) रीति वाचक
(4) परिमाण वाचक
(5) कार्य-कारण वाचक

(1) <u>काल वाचक क्रिया-विशेषण उपवाक्य</u> -

तब अंधकन्द अन्ध करै जब राम सिया सुधा धाम नहि ।[7]

---

1. रा०वि०नं०का०2222/2. रा०वि०नं०का०2350/3. रा०वि०उ०का०3182
4. रा०वि०पु०का०1405/5. रा०वि०भा०का०52/6. रा०वि०अ०का०912
7. रा०वि०कि०का०1382

जागेउ मानो काल रन ते उर दीरघ तास ।[1]
अति सुन्दर आसन हाटक केलिन मे मन मानउ सुर बसी।[2]
जन चंद लसी नखमंडल बसी जनी ब्रह्म अनंत हाथ गही ।[3]

चंचल पवन समान तुरंग सो अंगन अंग विराजत जैसे ।
कैउ रूप मंडित तेज अलंकित है रवि के रथ वाहन जैसे।।[4]
आवत पंथ लखौं पुर लोग लखात सिधु तरंग विराजत जैसे।
कैउ रजनीस लसी रूप मे छवि मे उपमा उपजै छवि जैसे ।।[5]
करी जोग की रीत रघुनाथ जैसे ।
कहाँ राज की साज मैं नाथ जैसे ।[6]

(4) <u>परिमाण वाचक क्रिया-विशेषण उपवाक्य</u> -

"परिमाण वाचक क्रिया- विशेषण उपवाक्य से अधिकता, तुल्यता-न्यूनता अनुपात आदि का बोध होता है ।[7] यथा-

अंकुश भेन जथा सर भेन महाबुद्ध भेन तथा रस भीने ।[8]
चंद जथा सिंधु बुद्धि सो नरेन्द्र प्रभु धनपाल ।[9]
आतुर केउ प्रचार कपि जथा बाण रघुराय ।[10]
मुक्त कंच लसंकित सीस जथा ससि सी उपमा ग्रह ग्रात परी।[11]

(5) <u>कार्यकारण वाचक क्रिया- विशेषण उपवाक्य</u> -

कार्यकारण वाचक क्रिया- विशेषण से निम्नांकित अर्थों का द्योतन होता है;

---

1. रा०चि०लं०का०2425/2. रा०चि०उ०का०3051/3. रा०चि०बा०का०147
4. रा०चि०बा०का०95/5. रा०चि०बा०का०710/6. रा०चि०अयो०का०747
7. [illegible] हिंदी व्याकरण पृ०450 पं० कामता प्रसाद गुरु
8. रा०चि०अयो०का०627/9. रा०चि०कि०का०1291/10. रा०चि० सु०का०1396
11. रा०चि०सु०का०1467

यथा-

तौ तव गिरवर बातनिधु, रछिया करौ सरीर ।।[1]
जौ प्रन सत्त बिसेष उर, तौ पति हरौ बिकार ।[2]
राम बिरोधा जौ चित्त चहै । तौ तन नर्क निकेत दहै।[3]
बीते चौदह कर्प्रभु जो नाहिं औहौ ग्रेह ।
तौ मैं करौं अनन्तपुर, त्याग राम बिनु देह ।।[4]
जौ पलटौ नाहिं मात मै, तौ कुबेउ ममकाल ।[5]

। घ । <u>विरोध</u> -

जाद्दिन तजा भाग रघु, तुम कीन्ही बिपरीत ।
ताद्दिन रघुवर कुपित बर, दीन्हो है उर प्रीत ।।[6]
लोक लाज नाहिंनी किये, जाद्दिन मैं कहीत ।
उर कौन अब लौं लौ, स्त्री तुहार रुचीत।।[7] । ताद्दिन का लोप।
हम जीवन दान दियेउ तुमको अरु जाद्दिन
कौटिन भाँति किये ।[8] ।ताद्दिन का लोप ।

वाक्यगत पदों में जिस सुनिश्चित व्यवस्था की आवश्यकता होती है उसका विवेचन निम्नांकितों के अन्तर्गत किया जा सकता है -

1- पद क्रम
2- पदान्वय
3- पदाधिकार

1, रा०चि०कि०का०1164/2, रा०चि०कि०का०2407/3, रा०चि०अयो०का०726
4, रा०चि०अयो०का०831/5, रा०चि०कि०का०1208/6, रा०चि०कि०का०2608
7, रा०चि०उ०का०2968/8, रा०चि०सु०का०1430

8.2 पद क्रम

अभीष्ट अर्थ का द्योतन कराने के लिए वाक्यगत पदों में एक निश्चितक्रम का होना अत्यावश्यक है। निश्चित क्रम के बिना अर्थानर्थ होने का भय रहता है। काव्यकार की दृष्टि से भाषा में पद-क्रम आदि का व्याकरणिक बन्धन अति महत्वपूर्ण नहीं होता है। पद-क्रम भंग करने की स्वतन्त्रता, छन्द-लय आदि के निर्वाह करने के लिए रहती है। किन्तु यह पद-क्रम भंग, अभीष्ट अर्थ को समाप्त करके नहीं किया जा सकता। आलोच्य महाकाव्य "रामविनोद" की भाषा में, महाकवि चन्द दास ने व्याकरण की दृष्टि से पद-क्रम का निर्वाह करके, चारु काव्य-कौशल प्रदर्शित किया है। इस पद-क्रम को निम्नांकित रूपक से सुस्पष्ट किया जा सकता है; यथा -

(1) कर्ता

(2) कर्म

(3) समापिका क्रिया

(4) असमापिका क्रिया

(5) अव्यय

(क) बलात्मक निपात

(ख) क्रिया विशेषण

(ग) समुच्चय बोधक

(घ) विस्मयसूचक शब्द

(6) प्रश्नात्मक शब्द

अन्त में -

हर्ष भरे हुग नीर बारंबार बिलोकि क्रम ।[1]

बहुर कही रघुनाथ ।[2]

प्रबल कीत देखो प्रभु ।[3]

कियेउ क्रोध पवन कुमार ।[4]

भाये भाग क्रम नारि नर ।[5]

। 2 । कर्म -

कर्म का क्रम परिवर्तनशील है । आदि, मध्य, तथा अन्त तीनों ही स्थितियों में मिलता है, यथा -

आदि में -

रामगिरा सुनि के मुनिधीर बुलाय लिये द्रुव पाय प्रनाती ।[6]

समाचार सुन विप्र रिझि को चरन चित लाय ।[7]

रस भोगहिं पाय नेहल सुनहु मद पान औबि लित तो हि भयेउ ।[8]

नर नारि सबै लखि मोहिं हँसै ।[9]

द्रुव नायक हार रहेउ मन मे तोड़ राम बिलो लहोक हिये ।[10]

गुरु बचन सुन रघुबीर तत्काल भरथ पास बुलाइया ।[11]

मध्य में -

रघुबीर सियागति देखि हिये ।[12]

---

1. रा0वि0बा0का037/2. रा0वि0अ0का01147/3. रा0वि0कि0का01319
4. रा0वि0सु0का01554/5. रा0वि0उ0का03487/6. रा0वि0बा0का0126
7. रा0वि0अयो0का0645/8. रा0वि0कि0का01300/9. रा0वि0सु0का01398
10. रा0वि0लं0का01934/11. रा0वि0उ0का03464/12. रा0वि0बा0का0189

तुम आपु तुम्हें तुम राज दियेउ ।[1]
तुम मोहिं तथा बनवास दयेउ ।[2]
कपिराय बिलोक दशानन को हँसि हेर बिलोचन बात कही ।[3]

अन्त में -

लिये धारि गोद पिता निज रामहिं ।[4]
नाय पुत्र निज आतमा, पुनि छँडेउ रघुबीर ।[5]
बिहँसि गहेउ कोदंड, बाम लखि सिय जानुकी ।[6]
देउँ अकंटित राज, समर जीत बल बालि रिपु ।[7]
करो न निज कुल नास, देय सुरतहि जानुकी ।[8]
व्याकुल भयेउ नरेस पुनि, कालनेम के धाम ।[9]
दीन्ही रघुपति भाखित तब, पान्हे हिदि मोहा ।[10]

। 3 । क्रिया -

सामान्य रूप से क्रिया वाक्य के अन्त में प्रयुक्त होती है । आदि, मध्य तथा अन्त में, किसी भी स्थान पर, काव्य में तुकान्त तथा लय की दृष्टि से क्रिया का प्रयोग किया जा सकता है । आलोच्य ग्रन्थ की भाषा में भी क्रिया का स्थान निश्चित नहीं है । कभी आदि तथा मध्य में तो कभी अन्त में प्रयोग प्राप्त होता है ;

---

1. रा० वि०अयो०छं०459/2. रा० वि० कि०छं०1272/3. रा० वि०लं०छं०1966
4. रा० वि०बा०छं०085/5. रा० वि०अयो०छं०0508/6. रा० वि०अर०छं०0883
7. रा० वि० कि०छं०1223/8. रा० वि०सु०छं०1726/9. रा० वि०लं०छं०2113
10. रा० वि०उ०छं०2811

गहे विमल दोउ हाथ, राम चरन बारिज विमल।[1]
करी जाय ग्रह राम तुवा, मैंनी सहित समाज ।[2]
कहेउ बैन रख नाथ सों, रन बैं कुछ विचार ।[3]
गये कहाँ अब पवन सुत, अंगद नील निदान ।[4]
पठयेउ मैंनी पास तब, रामचंद्र सुजा बान ।[5]

। 4 । असमापिका क्रिया -

आलोच्य महाकाव्य की भाषा में असमापिका क्रियाओं का भी स्थान निश्चित नहीं है । इस प्रकार के रूप आदि, मध्य तथा अन्त तीनों स्थलों में प्रयुक्त हुए हैं; जैसे -

आदि में -

लखा सो लाल राय प्रसन्न भाये ।[6]
दे असीस अवनीस कहँ, बहुर कहेउ सुख पाय ।[7]
कै प्रनाम रघुबीर, बात भाषेउ सुर धाम सों ।[8]
ले कै सतकार कीन ।[9]
आय समीप सो बोल उठी ।[10]
बोरन अपने कै सिन्धु, रचे सुत पदन्यान ।[11]
सब नीत अनीत कही कात है ।[12]

---

1. रा० वि०अ०का०946/2. रा० वि० कि०का०1273/3. रा० वि०सु०का०1550
4. रा० वि०लं०का०2028/5. रा० वि०उ०का०3123/6. रा० वि०बा० का०123
7. रा० वि०अयो०का०535/8. रा० वि०अर०का०894/9. रा० वि० कि०का०1369
10. रा० वि०सु०का०1407/11. रा० वि०लं०का०1923/12. रा० वि०उ०का०3135

१५। <u>अव्यय</u> -

<u>क. कालात्मक निपात</u> -

इस प्रकार के अव्यय का प्रायः पदों के ठीक पश्चात् में उपलब्ध होते हैं; जैसे -

अबहुँ मिल राम प्रिया लंका ते सुधा पाय रही दुख त्याग धारी।[1]
अबहुँ मिल बैन कृपानिधि को भाखु राम हि दे गति पुन्न बनी।[2]
अबहुँ मोहिं सुजान जानत रघुवर दास निज ।[3]
अबहुँ अब लंका शरीर तजे ।[4]
बनी इन्द्रपुरी तिहुँलोकहु के फल फूल लता तरु आय तये।[5]
पहुँच भयी समुदाय, अबहुँ तजो विषाद उर ।[6]
इनको रवि दीन अतीन क्षमा, पर मैं अबहुँ नाहिं काम सरे।[7]
अबहुँ उर पेल पिया करिये हरिये हठ भाव उपाय धारी ।[8]

<u>ख. क्रिया विशेषण</u> -

क्रिया-विशेषणों का स्थान भी वाक्य में निश्चित नहीं मिलता है; यथा -

<u>आदि में</u> - अब है कहना सुन धाम चलो ।[9]
सदा प्रात के जाग रघुनायक जागे ।[10]
तहाँ राम सुधा धाम प्रभु कीन्हीं आय प्रनाम ।[11]

---

1. रा० वि० सु० का० 1686/2. रा० वि० लं० का० 1904/3. रा० वि० सु० का० 1463
4. रा० वि० अ० का० 3140/5. रा० वि० बा० का० 152/6. रा० वि० सु० का० 1745
7. रा० वि० सु० का० 1750/8. रा० वि० लं० का० 1974/9. रा० वि० बा० का० 138
10. रा० वि० अर० का० 709/11. रा० वि० उ० का० 906

पुनि बिहँसि बोलेउ बैन ।[1]

बहुरि समाधि प्रबोध, करी सभा विश्राम तुम ।[2]

जथा लता नका तिन्ह कहँ मानै दारुन गात ।[3]

सो अवधपुर लोग सब, करैं बिलाप बिवेक ।[4]

<u>मध्य में</u> -

तुम के हित आय असीस कही ।[5]

दस चार सौ करीं निवास तहाँ बनवास जहाँ रति साथ गनी ।[6]

तो तेहि करी सनाथ, जाउ प्रेम रघ पात तेहि ।[7]

ये बोल सुरेस महेस तहाँ रघुनायक दान अखंड दिये ।[8]

रघ धारिता पुनि अंग ।[9]

रघ बोल तहाँ सुभ भाव करैं ।[10]

अराधित जहाँ सुलोचना, सुनं हुन लोचन जासु ।[11]

<u>अन्त में</u> -

येहि कारन आप को दाप बड़ी अनुसार हिये मति बुद्धि बना ।[12]

तो पढ़ेउ अन्त पुरन मंत्र जी ।[13]

ब्याघ्री असुर प्रचंड, देखेउ रघुनायक तहाँ ।[14]

सिर धर डारि पवनसुत, जाय बैन तिन पात ।[15]

बोली जनक सुता तबै ।[16]

---

1. रा० वि० कि० का० 1188/2. रा० वि० सु० का० 1392/3. रा० वि० लं० का० 1897

4. रा० वि० उ० का० 3005/5. रा० वि० बा० का० 0247/6. रा० वि० अयो० का० 0522

7. रा० वि० अर० का० 0990/8. रा० वि० कि० का० 1226/9. रा० वि० सु० का० 1453

10. रा० वि० उ० का० 3027/11. रा० वि० लं० का० 2364/12. रा० वि० बा० का० 0145

13. रा० वि० अयो० का० 0497/14. रा० वि० अर० का० 0883/15. रा० वि० कि० का० 1162

16. रा० वि० लं० का० 02637

बरने पद नीति पुरान जथा ।[1]
प्रभु तेज कही पन्नात जहाँ ।[2]

ग - समुच्चय बोधक शब्द -

इस ग्रंथ में अरु, अउ, अव, औ, और, अउर, अवर, की, किधौं, पै एवं ता हित आदि प्राप्त हैं; यथा -

(1) संयोजक -

संयोजक शब्द वाक्य के मध्य में ही प्रयुक्त हुए हैं -

रतन किरीट अरु हम रथी कन मुक्त मुक्ता निधि तीरथ पानी।[3]
हे रघुनायक नाथ, नल अरु नील सुजान कपि ।[4]
गहे चाप अरु बान ।[5]
रत भोग अउ जोग अरोग सबै ।[6]
काम अउ क्रोध तौ रहे न्यारो ।[7]
त्याग अनुराग बैराग की रीत और प्रीत रच नीत तो बुध ठानी।[8]
द्रव्य अनेक अव रतन जाने बरतेउ रघुनायक पाय पनाती।[9]
गुनवंत गंधर्व अवर किन्नर बिबिध बैन बजावई ।[10]
देत असीस चले संग है रघुनन्दन अउर असीस कही ।[11]

---

1. रा० वि० उ० का० 3139/ 2. रा० वि० उ० का० 2990/ 3. रा० वि० अयो० का० 447
4. रा० वि० सु० का० 1757/ 5. रा० वि० लं० का० 2006/ 6. रा० वि० अयो० का० 510
7. रा० वि० कि० का० 1177/ 8. रा० वि० अयो० का० 666/ 9. रा० वि० बा० का० 263
10. रा० वि० सु० का० 1439/ 11. रा० वि० बा० का० 112

न मिले जग में नर नारि कहीं ।[1]

न लखी बनिता रघुनायक की कर सोच सौ लोचन नीर दिये।[2]

नाहिं परै तौ गुन बीन ।[3]

मन तैं कुभाव प्रभाव करौ ।[4]

मध्य में -

अपनी कृत बान निदान लखौ, हमरे अपराध न नेक निहारौ।[5]

करौ नहीं पितु भंग, जब लग सिद्ध न होय बर ।[6]

तासौं रघु उर दीन्हा, तुम कीजै नाहिं रार ।[7]

उर सोक विनास न नेक धरै ।[8]

तोहि हेत हिंदे धनि तैं धारौ ।[9]

रन टरै नाहिं कमीर ।[10]

सम काम पूरन रमा उपमा भलक तुम न बिसारहीं ।[11]

अन्त में -

विपत प्रीत त्यागै नहीं ।[12]

तुम तन सदा असोक, काल कबौं आते नहीं ।[13]

गिरै पुनि धरै तौ मरै नाहीं ।[14]

सत्त पहु गिरा बहु झूठ नाही ।[15]

---

1. रा०चि०कि०का०1330/2. रा०चि०सु०का०1450/3. रा०चि०उ०का०2921
4. रा०चि०लं०का०2423/5. रा०चि०बा०का०05/6. रा०चि०अयो०का०496
7. रा०चि०अर०का०1042/8. रा०चि०कि०का०1205/9. रा०चि०सु०का०1582
10. रा०चि०लं०का०2557/11. रा०चि०उ०का०2933/12. रा०चि०कि०का०1295
13. रा०चि०सु०का०1526/14. रा०चि०लं०का०2553/15. रा०चि०उ०का०3273

संयुक्त क्रिया अथवा संयुक्त काल में निषेधात्मक अव्यय शब्द मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रिया के मध्य में भी प्रयुक्त मिलते हैं; जैसे -

मेक टरेउ न टारेउ कर तो ।[1]
सोभा ताके सदन की, बरन न सके पुरान ।[2]
अब छोर हनी न गनी मन मे ।[3]

। 8 । प्रश्नवाचक शब्द -

गद्य के समान काव्य में भी प्रश्नवाचक शब्दों की स्थिति अनिवार्य है । आलोच्य ग्रन्थ की भाषा में ये शब्द आदि, मध्य तथा अन्त में प्रयुक्त हुए हैं । यथा -

आदि में -

केहि कारन आजु अनंद करी ।[4]
कवन हे रघुबीर, धीर सरीर, जोगी जोग मे ।[5]
को कौसल भेद प्रकार।[6]
केहि हित किमिउ सुख तुम, कारन बरनी धीर।[7]
का कहत तासों जाय ।[8]
कवन दोस पाईउ प्रभु, लीन्हो काक सरीर ।[9]

मध्य में -

मै नर किमि बरनो सुजस, तुम का उदधि अपार ।[10]

---

1. रा0वि0बा0का0173/2. रा0वि0सु0का01445/3. रा0वि0लं0का02511
4. रा0वि0अयो0का0480/5. रा0वि0सु0का01584/6. रा0वि0लं0का02152
7. रा0वि0उ0का01024/8. रा0वि0लं0का02151/9. रा0वि0उ0का03163
10. रा0वि0बा0का0423

तुम धीर बिना अब कवन हरे ।[1]
अति विषम दारुन काय रघुवर तथा तो कैसे तरे ।[2]
दारुन वारिधि नीर बह को तरि सकै अगाधा ।[3]
कहौ कौन शोभा श्यामधाम छबि की ।[4]
बाँधौ कवन बिधि धाम सिन्धु ।[5]

<u>अन्त में</u> -

पंकज पवन समान तुरंग सो अंगन अंग विराजत कैसे ।[6]
मैं सेवक रघुवीर मोहिं राज सौ कहा ।[7]
वेदि जोग अजोग मैं भोग कहा।[8]

8.3 <u>पदान्वय</u> -

पदों का एक वर्ग दूसरे वर्ग से प्रत्ययों के विचार से, पद संरचना में सहायतार्थ एक सापेक्ष सम्बन्ध स्थापित करता है । "पदान्वय" के नाम से, इसी व्याकरणिक संकेत को अभिहित किया गया है । आलोच्य ग्रन्थ की भाषा में प्रयुक्त अन्वय-संकेतों को स्पष्ट करने के लिए निम्नांकित वर्ग बनाए जा सकते हैं -

8.3.1 <u>लिंग-वचन (कर्ता एवं क्रिया)</u> -

1- भूत निष्पत्ति का द्योतन करने वाले क्रिया-पद कर्ता के लिंग-वचन से प्रभावित मिलते हैं,

---

1. रा0वि0अयो0का0804/2. रा0वि0कि0का01376/3. रा0वि0सु0का01638
4. रा0वि0लं0का01982/5. रा0वि0उ0का03423/6. रा0वि0बा0का095
7. रा0वि0अयो0का0745/8. रा0वि0अ0का0989

(2) पुरुष- वचन (कर्ता एवं क्रिया) -

1- वर्तमानकालिक तिङन्त रूप -

उत्तम पुरुष :

एक वचन -

तै प्रगट बोलउँ मैन ।[1] (कर्ता का लोप)

तेहि कारन आम न बात करौं ।[2] (कर्ता का लोप)

मैं सरीर रघु दुआरे को भोजन करौं तोइ पाप ।[3]

प्रकट दुःखा रेखा तो विपरीत देखौ ।[4] (कर्ता का लोप)

मध्यम पुरुष :

एक वचन -

कहाँ जाति दसकंठ सठ लिये जिया रघुवीर ।[5]

अन्य पुरुष :

एक वचन -

सुत करत श्रृंगार सहित सुन्दर देखि प्रतिमा कछु जानी ।[6]

उपमा कहि कोउ न पार नहि ।[7]

विधि की पुरन रेखा तो नाहिं मिटय मिटाय रघु ।[8]

जगन्नाद दारुन बोलई ।[9]

---

1. रा०वि०सु०का०1490/2. रा०वि०कि०का०1272/3. रा०वि०उ०का०2996

4. रा०वि०अयो०का०801/5. रा०वि०अर०का०1096/6. रा०वि०बा०का०59

7. रा०वि०अयो०का०458/8. रा०वि०अयो०का०564/9. रा०वि०अर०का०1013

9. उपसंहार

9.1 आलोच्य भाषा निष्कर्षों के आधार पर स्थानीय तथा क्षेत्र की अवधी

"रामविनोद" महाकाव्य का विस्तृत भाषा वैज्ञानिक विवेचन पिछले दो से आठ अध्यायों में किया जा चुका है। अस्तु यहाँ पर स्थानीय (वर्तमान) अवधी के स्वरूप से आलोच्य भाषा के स्वरूप में कितना साम्य एवं वैषम्य है, इस पर अभिचर्चा करना अभीष्ट है। स्थानीय अवधी के प्रमुखतः तीन वर्ग-

1- पश्चिमी

2- केन्द्रीय और

3- पूर्वी रूप माने गये हैं।[1]

अवधी का पश्चिमी स्वरूप -

खीरी, सीतापुर, लखनऊ, उन्नाव और फतेहपुर में बोला जाता है।

केन्द्रीय रूप -

बहराइच, बाराबंकी तथा रायबरेली जिलों में बोला जाता है।

---

1. डॉ० बाबूराम सक्सेना - इवोल्यूशन आफ अवधी, पृ० ।

<u>पूर्वी रूप</u> -

गोंडा, फैजाबाद, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, इलाहाबाद, जौनपुर और मिर्जापुर जिलों में बोला जाता है ।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी भाषाविद् महाकवि चन्द अपने मूल स्थान को त्यागकर हस्वा । फतेहपुर । को निवास के लिए चुना । इस चयन का उद्देश्य तात्कालिक राजनीतिक परिस्थितियाँ थीं । अस्तु फतेहपुर जनपद के निवासी[1] के फलस्वरूप उनकी भाषा में अवधी की छाप पड़ना स्वाभाविक था । साथ ही "रामविनोद" महाकाव्य रामकथा से संबंधित होने के कारण तुलसी के "रामचरित मानस" की भाषा से भी प्रभावित है । यहाँ पर सामान्य रूप पर प्रकाश डाला जा रहा है ; यथा -

9.1.1 <u>ध्वनि विचार</u> -

अवधी का क्षेत्र व्यापक होने के कारण क्षेत्रीय मान्यताओं का प्रभाव चंद की अवधी में मिलता है । इसीलिए शब्दों में उच्चारण वैभिन्न्य एवं व्याकरण स्तर पर भेद प्राप्त होता है । ध्वनियों के उच्चारण के सम्बन्ध में मात्रा पूर्ति के आधार पर स्थानीय आधुनिक अवधी के समीप पहुँचा जा सकता है ।

---

1. डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित "ललित" - रामविनोद पृ० 5

"आधुनिक अवधी की पश्चिमी बोलियों में फुसफुसाहट वाले स्वर अधिक स्पष्ट हैं जब कि पूर्वी बोलियों में दुर्लभ हैं"।[1]

फतेहपुर जनपद में अवधी का पश्चिमी स्वरूप होना चाहिये किन्तु फुसफुसाहट वाले स्वरों (इ, उ, ए आदि) का अभाव है, जैसे - मिलति तथा पठवति आदि रूप चंद की अवधी में नहीं पाये जाते हैं। मूल स्वर आधुनिक अवधी के समान हैं किन्तु संयुक्त स्वर "ऐ" तथा "औ" अन्तर रखते हैं। इनका उच्चारण चंद की अवधी में क्रमशः "अइ" तथा "अउ" के रूप में भी मिलता है। (विषय क्रमः 2.2.) । व्यंजनों की प्रकृति, स्वरूप और वितरण की दृष्टि से कोई उल्लेखनीय अन्तर नहीं मिल पा रहा है। लिखित भाषा में होने के कारण "ण", "श" और "ष" का प्रयोग मिल जाता है।

9.1.2. चंद की अवधी की भाँति स्थानीय आधुनिक अवधी में भी संज्ञा-रूप-रचना प्रातिपदिकों में लिंग- वचन-कारक सम्बन्ध दर्शी विभक्ति प्रत्ययों के योग से हुई है। लिंग-विधान चंद की अवधी तथा स्थानीय अवधी में समान है। आधुनिक तथा चंद की अवधी में लिंग- निर्धारण के निश्चित नियम नहीं हैं लिंग-निर्धारण की तीन विधाएँ हैं -

1- क्रिया रूपों द्वारा।

2- पुरुष वाचक सर्वनामों के सम्बन्ध कारकीय रूपों द्वारा और

3- विशेषण रूपों द्वारा।

---

1. डॉ० जनार्दन सिंह - तुलसी की भाषा पृष्ठ 244

आलोच्य ग्रन्थ की भाषा की भाँति स्थानीय आधुनिक अवधी में ई, इन, नी, इनी प्रत्ययों का योग पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाते समय मिलता है। बहू [बहू], मिया [औरत] आदि शब्दों को पुल्लिंग शब्दों से स्त्रीलिंग निर्मित करते समय आधुनिक अवधी में पंद की अवधी के समान प्रयुक्त किया जाता है। पंद की अवधी की भाँति आधुनिक में भी एकत्व एवं अनेकत्व को प्रदर्शित करने के लिये एक वचन तथा बहुवचन प्राप्त हैं। वचन बोधक संश्लिष्ट एवं विश्लिष्ट दोनों किस्में हैं, यथा- घिउन, दुलन, नैनन एवं सिहगन, पुरलोग, कालुन्द आदि। इसके अतिरिक्त पुनरुक्ति द्वारा, विशेषण रूपों द्वारा तथा क्रिया-रूपों द्वारा भी बहुवचन का बोध कराया जाता है। आधुनिक अवधी में पंद की अवधी की भाँति दो कारक मूल तथा तिर्यक् मिलते हैं। लिंग वचन के अनुसार रूप-रचना भिन्न-भिन्न है। तिर्यक् रूप परसर्ग रहित तथा परसर्ग सहित प्राप्त हुए हैं। सम्बन्ध कारक के अन्तर्गत "क" का प्रयोग पंद की अवधी में स्वल्प एवं स्थानीय अवधी में नहीं है। पंद की अवधी के समान स्थानीय अवधी में भी संज्ञा के मूल रूपों के पूर्व रे, री, हाय आदि संबोधक शब्दों का प्रयोग होता है अन्यथा केवल के स्थान यहाँ मात्र संबोधन रूपों का योग होता है।

9.1.3 सर्वनाम मूल रूप तथा तिर्यक् रूप पंद की अवधी और स्थानीय अवधी में समान रूप से हैं। मूल रूप [कर्ता रूप] ही प्रातिपदिक हैं। कर्ता के अतिरिक्त अन्य कारक सम्बन्धों का स्पष्टीकरण तिर्यक् रूपों में विभक्तियों या परसर्गों अथवा

दोनों के योग से मिलता है । चंद ने ब्रजभाषा के प्रभाव से उत्तम पुरुष एक वचन कर्ता कारक "हौं" का प्रयोग किया है । सम्बन्धवाचक एवं सह-सम्बन्धवाचक सर्वनाम के अन्तर्गत स्थानीय आधुनिक अवधी में "जौन" तथा "तौन" रूपों का प्रयोग होता है । चंद की भाषा में "जौन" का रूप "जवन" मिलता है किन्तु "तौन" का सर्वथा अभाव है । स्थानीय अवधी में संकेत वाचक दूरवर्ती नाम रूप "उई" प्राप्त है जब कि चंद की अवधी में सर्वथा अभाव है । क्षेत्रीय बोली वैभिन्न्य के कारण सर्वनामों में कुछ उच्चारण विभिन्नता के चिन्ह मिलते हैं ।

9.1.4 आलोच्य ग्रन्थ की भाषा और आधुनिक स्थानीय अवधी के विशेषण रूपों में कोई उल्लेखनीय अन्तर नहीं दर्शित होता । दोनों में अकारान्त । आकारान्त विशेषण शब्दों में लिंग-वचन- कारक के अनुसार विभक्ति-प्रत्ययों के योग से रूप-रचना सम्पन्न होती है । स्थानीय अवधी अवधी में विशेषण के विकृत रूप बड़कवा, छोटकवा, तथा गोरवा आदि रूप प्रयुक्त होते हैं जब कि चंद की अवधी में इनका पूर्णतः अभाव है ।

9.1.5. आलोच्य कवि की भाषा में और स्थानीय अवधी में अव्यय-रूप और गठन की दृष्टि से समान हैं ।

9.1.6. चंद की अवधी के समान स्थानीय अवधी में प्रयुक्त क्रिया-रूप भी काल-वाच्य, लिंग-वचन, पुरुष, अर्थ आदि की द्योतक रचनात्मक प्रवृत्तियों में से कुछ से प्रभावित हैं । रचना की दृष्टि से प्राप्त धातुएँ सामान्य, स्वीकृत, प्रेरणार्थक, नाम : समान हैं । स्थानीय अवधी में भी

प्रदेश या राष्ट्र परस्पर सम्पर्क में आते हैं तो पारस्परिक आदान-प्रदान की शब्दावली से प्रभावित होते हैं । महाकवि चंद देश के विभिन्न अंचलों में विभिन्न रूपों में रहकर वहाँ की शब्दावली को आत्मसात करके साहित्य में स्थान दिया है। भ्रमण की व्यापकता, गंभीर अध्ययन-मनन-चिन्तन, विभिन्न प्रान्तों के क्षेत्रीय भाषा- भाषियों से सम्पर्क, धार्मिक-सहिष्णुता होने के कारण अन्य धर्मावलम्बियों से सद्भाव पूर्वक विचार विनिमय के फलस्वरूप इनकी भाषा में व्यापक मौलिक परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं । चंद की शब्दावली इसी के फलस्वरूप संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, बंगला, गुजराती, राजस्थानी, मराठी, पंजाबी, ब्रज तथा भोजपुरी आदि के शब्दों (रूपों) का न्यूनाधिक मात्रा में प्रयोग दिखाई पड़ता है ।

आलोच्य ग्रन्थ की भाषा के निष्कर्षों के आधार पर महाकवि चंद द्वारा प्रयुक्त शब्दावली निम्नलिखित वर्गों में विभाजित कर उनके सही स्वरूप एवं उस पर पड़े अन्य भाषाओं एवं बोलियों के प्रभाव को स्पष्ट किया जा सकता है -

1- संस्कृत के शब्द
2- प्राकृत- अपभ्रंश के शब्द
3- विदेशी भाषाओं (अरबी,फारसी तथा तुर्की) के शब्द
4- अन्य क्षेत्रीय भाषाओं- ब्रज, भोजपुरी, छत्तीस गढ़ी-
   बुन्देलखंडी, राजस्थानी तथा पंजाबी आदि ।

प्रणाम[1], चरन[2], अंकुर[3], भूषन[4], शरनागत[5], महातम[6], मनि[7], ग्रान[8], केतु[9], भगत[10], अस्तुति[11]

2- प्राकृत - अपभ्रंश के शब्द । या का ।-

निम्नवत हैं -

भुम्म[12], गढ़[13], लोग[14], तत्त[15], धम्म[16], सत्त[17], सात्तिक[18], पुन्न[19], दुक्ख[20], बिनास[21], सांई[22], मित्त[23], बिज्ज[24], अप्पु[25], सायर[26], भूलौ[27], कौडी[28]

3- विदेशी भाषाओं के शब्द । या का । -

विदेशी शब्दावली के अन्तर्गत आलोच्य महाकाव्य की भाषा में अरबी, फारसी एवं तुर्की आदि भाषाओं के शब्द आते हैं । कवि ने उन्हीं विदेशी शब्दों का प्रयोग किया है जो कि सामान्य जनता के व्यावहारिक जीवन में

---

1. रा० वि० कि०का० 1337/2. रा० वि० सु०का० 1565/3. रा० वि० लं०का० 2430
4. रा० वि० उ०का० 2948/5. रा० वि० उ०का० 3084/6. रा० वि० लं०का० 2631
7. रा० वि० सु०का० 1610/8. रा० वि० कि०का० 1328/9. रा० वि० अर०का० 1121
10. रा० वि० अयो०का० 551/11. रा० वि० बा०का० 219/12. रा० वि० बा०का० 81
13. रा० वि० अयो०का० 448/14. रा० वि० अर०का० 941/15. रा० वि० कि०का० 1218
16. रा० वि० सु०का० 1403/17. रा० वि० लं०का० 1851/18. रा० वि० उ०का० 2893
19. रा० वि० बा०का० 90/20. रा० वि० अयो०का० 630/21. रा० वि० अर०का० 937
22. रा० वि० कि०का० 1310/23. रा० वि० सु०का० 1457/24. रा० वि० लं०का० 2074
25. रा० वि० उ०का० 3053/26. रा० वि० लं०का० 2028/27. रा० वि० सु०का० 1488
28. रा० वि० उ०का० 3237

ताँधो - अनुराग बन जैन मैन ताँधी लपेट।[1]। = ताँध।

बड़ो - जन चंद तो भाग बड़ो तिनको।[2]। = बड़ा।

ख - भोजपुरी -

"अल" किरावित - प्रत्यययुक्त -

घायल - चहुँओर दानौ परे घायल हाय माह पुकारहीं।[3]

ग - छत्तीसगढ़ी - बुन्देलखंडी -

ओर - अवटा की ओर बहुँपेहि ओर।[5] । = गली।

बुक्का - पद रतन धराय चढ़े बुक्का।[6] ।=कड़ा, पद का- आभूषण।

परसाद - के परसाद हरे अपराधा।[7] । =प्रसाद।

घ - राजस्थानी -

तरे - मनि तो उपमा छवि काप तरे।[8]। = पूर्ण।

ङ - पंजाबी -

भीठानक - पुनि फेर घटा मिन मीर मैं आनक हूँ
दिसैं पहुँ दिस जावे।[9]

---

1. रा0वि0कि0का012?/2. रा0वि0 बा0का087/3. रा0वि0अ0का01015
4. रा0वि0 /5. रा0वि0बा0का096/6. रा0वि0बा0का0251
7. रा0वि0बा0का092/8. रा0वि0अयो0का0434/9. रा0वि0बा0का0370

5- खड़ी बोली -

आलोच्य महाकाव्य की भाषा में प्रयुक्त अनेक शब्द रूप-रचना की दृष्टि से आधुनिक हिन्दी (खड़ी बोली) से साम्य रखते हैं, जिनका आजकल व्यावहारिक जीवन में प्रचलन है। खड़ी बोली के रूप इस प्रकार हैं, यथा -

1- **संज्ञा के तिर्यक् रूप -**

को[1], द्वारे[2], भांवरें[3], सपने[4]

2- **सर्वनाम रूप -**

हमारी, हमारे, तुम, तुम्हारी, तुम्हारे आदि -

कोउ भूप सो तात विनती हमारी।[5]
धन धान्य औ इत योग हमारे।[6]
तुम पावन पतितन, आरत भंजन आदि गुरु।[7]
जग कीरत दाकत है जो तुम्हारी।[8]
गुरुदेव अनुग्रह पुन्य तुम्हारे।[9]
तुम के हित आतुर आप गयेउ।[10]
उपचार किरातन सबै अपने।[11]
अवर कथा अपनी सुनि सो।[12]

---

1. रा० वि० बा० का० 109/2. रा० वि० बा० का० 157/3. रा० वि० बा० का० 330
4. रा० वि० लं० का० 1853/5. रा० वि० अयो० का० 615/6. रा० वि० बा० का० 45
7. रा० वि० उ० का० 2723/8. रा० वि० बा० का० 133/9. रा० वि० बा० का० 423
10. रा० वि० बा० का० 240/11. रा० वि० अयो० का० 562/12. रा० वि० अर० का० 922

सहायक ग्रन्थानुक्रमणिका

क्र०	ग्रन्थ	लेखक	वर्ष
1-	अपभ्रंश साहित्य	डॉ० हरिवंश कोछड़	सं० 2013 वि०
2-	कबीर की भाषा	डॉ० माताबदल जायसवाल	सन् 1965 ई०
3-	कामायनी की भाषा	श्री रमेशचन्द्र गुप्त	सन् 1964 ई०
4-	छत्तीसगढ़ी बोली व्याकरण और कोश	डॉ० कान्ति कुमार	सन् 1969 ई०
5-	जायसी की भाषा	डॉ० प्रभाकर शुक्ल	सं०2022 वि०
6-	तुलसी की भाषा	डॉ० देवकी नन्दन श्रीवास्तव	सं०2014 वि०
7-	तुलसी की भाषा	डॉ० जनार्दन सिंह	सन् 1976 ई०
8-	तुलसी दास	पं० रामचन्द्र शुक्ल	सं० 1996 वि०
9-	तुलसीदास और उनका युग	डॉ० राजपति दीक्षित	सन् 1950 ई०
10-	तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	श्री जगगोपाल बोस	सन् 1953 ई०
11-	तुलसी सन्दर्भ	सं० डॉ०रामभवन आर्य डॉ० गिरिराज किशोर	सन् 1974 ई०
12-	तुलनात्मक भाषा विज्ञान	अनु०डॉ०भोलानाथ तिवारी	-
13-	पद्माकर की काव्य भाषा	डॉ० मनु शर्मा	सन् 1977 ई०
14-	पृथ्वीराज रासो की भाषा	डॉ० नामवर सिंह	सन् 1956 ई०
15-	पृथ्वीराज रासो:संक्षिप्त	डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी डॉ० नामवर सिंह	सन् 1978 ई०

16- प्राकृत-विमर्श	डॉ० सरयू प्रसाद अग्रवाल	सं० 2009 वि०
17- ब्रजभाषा	डॉ० धीरेन्द्र वर्मा	सन् 1954 ई०
18- ब्रजभाषा व्याकरण	पं० किशोरी दास वाजपेई	सन् 1943 ई०
19- ब्रजभाषा व्याकरण की सारेखा	डॉ० प्रेमनारायण टंडन	सन् 1962 ई०
20- बुन्देली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन	डॉ० रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल	सन् 1963 ई०
21- भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी	डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या	सन् 1954 ई०
22- भारतीय भाषाओं का भाषाशास्त्रीय अध्ययन	प्रो०डॉ०प्रेमपरवर्मा	सन् 1965 ई०
23- भोजपुरी भाषा और साहित्य	डॉ० उदय नारायण तिवारी	सन् 1954 ई०
24- भाषा विज्ञान	डॉ० भोलानाथ तिवारी	सन् 1961 ई०
25- भाषा विज्ञान	डॉ० श्याम सुन्दर दास	सं० 2014 वि०
26- भाषा विज्ञान और हिन्दी	डॉ० सरयू प्रसाद अग्रवाल	-
27- मानस दर्पण	पं०चन्द्रमौलि शुक्ल	सन् 1952 ई०
28- मानस व्याकरण	श्री विद्यानन्द त्रिपाठी	सं० 2020 वि०
29- रचना तथा व्याकरण	पं० चन्द्रमौलि शुक्ल	सं०2010 वि०
30- वाङ्मयविमर्श	आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	
31- शेखावटी बोली का वर्णनात्मक अध्ययन	डॉ० कैलाश चन्द्र अग्रवाल	सन् 1980 ई०
32- सामान्य भाषाविज्ञान	डॉ० बाबूराम सक्सेना	सं०2010 वि०
33- सूर की भाषा	डॉ० प्रेमनारायण टंडन	सन् 1957 ई०

34- सूर सन्दर्भ	सं०डॉ०रामस्वरूप आर्य डॉ० गिरिराज किशोर	सन् 1976 ई०
35- हिन्दी व्याकरण	पं० कामता प्रसाद गुरु	सं० 2035 वि०
36- हिन्दी शब्दानुशासन	पं०किशोरीदास वाजपेई	सं०2033 वि०
37- हिन्दी भाषा का इतिहास	डॉ० धीरेन्द्र वर्मा	सन् 1958 ई०
38- हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग	डॉ० नामवर सिंह	सन् 1954 ई०
39- हिन्दी में प्रत्यय विचार	डॉ०मुरारी लाल उप्रैति	सन्0 1964 ई०
40- हिन्दी में समास रचना का अध्ययन	डॉ०रमेश चन्द्र जैन	सन् 1964 ई०
41- हिन्दी कारकों का विकास	श्री शिवनाथ	सं० 2005 वि०
42- हिन्दी व्याकरण तथा रचना	डॉ० कैलाश चन्द्र अग्रवाल	सन् 1980 ई०
43- हिन्दी भाषा का विकास	आचार्य देवेन्द्रदत्त शर्मा डॉ० रामदेव त्रिपाठी	सन् 1971 ई०
44- हिन्दी भाषा और साहित्य	डॉ० श्यामसुन्दर दास	सं० 1980 वि०
45- हिन्दी और उसकी उप-भाषाओं का स्वरूप	डॉ० अम्बा प्रसाद सुमन	सन्0 1966 ई०
46- हिन्दी साहित्य का इतिहास	पं० रामचन्द्र शुक्ल	सं० 2005 इ
47- हिन्दी भाषा	डॉ०भोलानाथ तिवारी	सन् 1966 ई०
48- हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास	डॉ०उदय नारायण तिवारी	सं० 2018 वि०

49- हिन्दी भाषा का इतिहास	डॉ० धीरेन्द्र वर्मा	सन् 1962 ई०
50- हिन्दी साहित्य का अतीत	आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	सं० 2015 वि०
51- हिन्दी साहित्य की भूमिका	डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी	सन् 1952 ई०
52- हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा	डॉ०भ०ना० दीक्षित	सन् 1966 ई०

शब्द कोश

1- अवधी कोश	सं०पं०रामाज्ञा द्विवेदी समीर	सं० 1955 वि०
2- कुमनी शब्द सागर	सं०डॉ०भोलानाथ तिवारी	सन् 1954 ई०
3- ब्रजभाषा सूरकोश	डॉ०प्रेमनारायण टंडन	सन् 1954 ई०
4- संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर	सं० रामचन्द्र वर्मा	सं०2014वि०
5- हिन्दी शब्द सागर	सं०पं०रामचन्द्र शुक्ल	सन् 1914 ई०

पत्र - पत्रिकाएँ

1- नागरी प्रचारिणी पत्रिका	काशी नागरी प्रचारिणी सभा काशी भाग 12	सं० 1988 वि०
2- नागरी प्रचारिणी पत्रिका	भाग 13	सं० 1988 वि०
3- " " "	वर्ष 58 अंक 3	सं० 2010 वि०
4- " " "	वर्ष 64 अंक 2	सं० 2016 वि०
5- " " "	वर्ष 81 अंक 1 से 4 तक	सं० 2033 वि०
6- [illegible]	[illegible]	

6- परिषद पत्रिका	बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना वर्ष 20 अंक 3	सं02037 वि0
7- भारतीय साहित्य	क0मु0हिन्दी विद्यापीठ आगरा	सन् 1956-57ई0
8- सम्मेलन पत्रिका	हिन्दी साहित्यसम्मेलन, प्रयाग पौष-फाल्गुन	शक सं01885
9- " "	भाग 64 अंक 1 - 4 मार्ग शीर्ष-फाल्गुन	शक सं01900

हस्तलिखित प्रतियाँ

1- रामविनोद	महाकवि पदमाकर	सं01804
2- रामविनोद	बेनी कवि द्वारा प्रतिलिपित	

नोट - पैदवार साहित्य शोध-संस्थान, भागवत सिविल लाइन, बांदा, निदेशक डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित "ललित" के संग्रहालय में उपलब्ध ।

1. A Basic Grammar of Modern Hindi Dr.Aryandra Sharma 1958
2. Course in Modern Linguistics C.F. Hockett 1957
3. Evolution of Awadhi Dr. Babu Ram Saksena 1937
4. Elements of Science of Language I.J.S.Taraporewala 1951
5. Grammar of the Hindi Language Dr.S.H.Kellog 1951
   R.M.S.Haffner 1952
6. General Phonetics
7. Historical Liquistics Dr.A.M. Ghatage 1962
8. Language J.Vendreys 1952
9. Morphology E.A. Nida 1957
10. Outline of Linguistic Analysis Bernard Block and Trager 1943
11. Readings in Linguistics Martin Joos (Ed) 1958